नई दिल्ली, उत्तर प्रदेश, हरियाणा, पंजाब, राजस्थान, महाराष्ट्र, मध्य प्रदेश, झारखंड, उड़ीसा, बिहार से प्रसारित

सोशल मीडिया से जुड़ें
Parivehan_Vishesh

RNI No :- DELHIN/2023/86499
DCP Licensing Number : F.2 (P-2) Press/2023

www.newsparivahan.com

परिवहन विशेष

वर्ष 03, अंक 349, नई दिल्ली, मंगलवार 17 फरवरी 2026, मूल्य ₹ 5, पेज 8

देश का पहला ट्रांसपोर्ट दैनिक समाचार पत्र

आज का सुविचार

जिस इंसान के पास आशा होती है, वह कभी पराजित नहीं होता है!

03 क्या रामायण और महाभारत काल में मंदिर होते थे?
06 मनुष्य दो तीखी चोटियों पर तेजी से बूढ़ा हो जाता है
08 मुख्यमंत्री हेमंत पहुंचे पैतृक गांव नेमरा,बनाये गये मांझी बाबा

समय सीमा पूरे कर चुके वाहनों के प्रति दिल्ली सरकार का दोहरा मापदंड: सवाल उठाती एक कहानी

लेखकः- संजय कुमार बाठला
परिवहन नीति और सार्वजनिक हित मामलों पर विशेषज्ञ पत्रकार। पिछले एक दशक से सड़क सुरक्षा, स्वच्छ परिवहन और तकनीकी नवाचार से जुड़ी नीतियों पर गहन विश्लेषण और रिपोर्टिंग करते हैं।

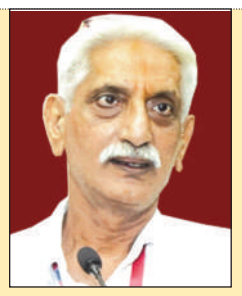

दिल्ली सरकार ने प्रदूषण नियंत्रण के नाम पर 10 साल पुराने डीजल और 15 साल पुराने पेट्रोल वाहनों पर सख्ती बढ़ा दी है, लेकिन विभागीय पिटों में वर्षों से खड़ी सरकारी गाड़ियां नजरअंदाज, आखिर क्यों ?

दिल्ली सरकार की यह दोहरी नीति जनता के विश्वास को कमजोर कर रही है।

अभियान की शुरुआतः फिर से जनता से ही क्यों? दिल्ली परिवहन विभाग, एमसीडी और ट्रैफिक पुलिस ने आरडब्ल्यूए के सहयोग से पुराने वाहनों की सूचना देने का अभियान चलाया है, जहां सड़कों पर चेकिंग के दौरान जब्ती हो रही है।

मोटर व्हीकल एक्ट 1988 की धारा 115 के तहत प्रवर्तन एजेंसियां समय सीमा पूरे कर चुके (ईओएल) वाहनों को जब्त कर सकती हैं, लेकिन पहली बार जुर्माना भरकर शपथ पत्र पर रिहा करने का प्रावधान भी है।

सवाल फिर से, कि विभागीय पिटों से क्यों नहीं शुरू हुई मुहिम?

पिटों में खड़ी गाड़ियां: लापरवाही का प्रतीक परिवहन विभाग, दिल्ली नगर निगम, दिल्ली यातायात पुलिस और दिल्ली पुलिस की पिटों (इम्पाउंडमेंट साइट्स) में सैकड़ों पुरानी गाड़ियां वर्षों से धूल खा रही हैं, जो जगह घेर रही हैं और प्रदूषण फैला रही हैं।

एसओपी के अनुसार, जब्त समय सीमा पूरे कर चुके (ईओएल) वाहन 3 सप्ताह में दावा न होने पर स्क्रैप हो जाते हैं, और आरवीएसएफ को स्क्रैप मूल्य वाहन मालिकों को या विभाग को जमा करना होता है।

एनजीटी और सुप्रीम कोर्ट के आदेशों (जैसे एमसी मेहता विस यूओआई मामले में) के बावजूद इनकी कानूनी प्रक्रिया पूरी नहीं हो रही।

मुख्य बिंदुः

1. पिट वाहनों पर धारा 115 एमवी एक्ट के तहत तत्काल स्क्रैपिंग होनी चाहिए, लेकिन देरी से दोहरी नीति उजागर।

2. पिछले अभियानों में 15,000 वाहन स्क्रैप हुए, लेकिन स्क्रैप मूल्य समय पर / अभी तक जमा नहीं।

आरवीएसएफ नियम 2021 के नियम 8(x) के तहत सभी समय सीमा पूरे कर चुके (ईओएल) वाहनों का निस्तारण अनिवार्य।

स्क्रैप डीलर्स को फायदाः पारदर्शिता की कमी जब्त वाहनों को 13 अधिकृत आरवीएसएफ को भेजा जाता है, जहां 15-21 दिनों में प्रक्रिया पूरी कर मालिक को या विभाग को मूल्य ट्रांसफर होता है, लेकिन पुराने अभियानों में मालिकों या विभाग को भुगतान नहीं मिला, जो सुप्रीम कोर्ट के दिशा-निर्देशों का उल्लंघन है।

जनहित में पहले पुराने बकाया साफ कर नए वाहन सिर्फ उन वाहन स्क्रैप डीलरो को डीलर्स को दें जिन्होंने समय से स्क्रैप वाहनों का मूल्य अदा/ जमा किया था।

इतिहास दोहराताः पिछले अभियानों की विफलता

* एनजीटी के 2016 के आदेश से 10 साल पुराने डीजल वाहन प्रतिबंधित हुए, लेकिन पिट स्क्रैपिंग में लापरवाही बनी रही।

* 2024-25 में कोर्ट ने पोर्टल और एसओपी लागू किए, फिर भी अनक्लेम्ड वाहनों का मूल्य जमा नहीं।

* सुप्रीम कोर्ट ने दिल्ली नीति को बरकरार रखा, लेकिन समान लागू करने पर जोर दिया।

तथ्य और कानूनी प्रावधान

1. एमवी एक्ट धारा 115:- जब्ती और रिहाई

2. ईओएल नीतिः- 10 साल डीजल, 15 साल पेट्रोल

3. एसओपी समय सीमाः- 3 सप्ताह दावा, फिर स्क्रैप

4. एनजीटी/ सुप्रीम कोर्ट आदेशः- प्रदूषण नियंत्रण

निष्कर्षः

1. समान कानून लागू हो पुराने वाहनों का अभियान सराहनीय है, लेकिन जनता से पहले पिटों से शुरू हो, तो विश्वसनीय।

2. जनहित में मांग सरकार एमवी एक्ट और आरवीएसएफ नियमों के तहत पारदर्शी निस्तारण सुनिश्चित कर जनता का विश्वास जीते, वरना यह दिखावा मात्र।

दिल्ली सरकार परिवहन विभाग द्वारा 15 अधिकारियों को समूह बी जिला परिवहन अधिकारी (डीटीओ) के पद पर किया पदोन्नत

संजय कुमार बाठला

दिल्ली राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र की सरकार परिवहन विभाग विभागीय पदोन्नति समिति की अनुशंसा पर, मुख्य सचिव, जीएनसीटीडी द्वारा डायरी संख्या 19/पी1225/7033, दिनांकः 16/02/26 को निम्नलिखित 15 एमवी आई/एचक्यूआई को 7वें सीप्रीसी के वेतन मैट्रिक्स स्तर-7 (44900 -142400 रुपये) में समूह बी के जिला परिवहन अधिकारी (डीटीओ) के पद पर तत्काल प्रभाव से पदोन्नत करने के आदेश जारी किए।

1. राकेश कुमार, एमवी आई/एमएलओं (एडहॉक)
2. मुकेश बुद्धिराजा, एचक्यू/एमएलओं (एडहॉक)
3. केसी सेठ, एचक्यू,
4. बिप्लव सिंह, एम.वी.आई.
5. जितेन्द्र कुमार, एमवीआई
6. दीपक कुमार पल, एमवीआई
7. सुरेंद्र कुमार, एमवीआई
8. विकास चौधरी, एमवीआई
9. विक्रम सिंह, एमवीआई
10. राहुल, एमवीआई
11. सुल्तान अली, एमवीआई
12. मनमोहन सिंह रावत, एमवीआई
13. राजेश कुमार वर्मा, एमवीआई
14. राहुल शर्मा, एमवीआई
15. सुमीत कुमार, एमवीआई

उपर्युक्त अधिकारी इस आदेश के जारी होने के एक महीने के भीतर एफआर-22 के अनुसार वेतन निर्धारण के संबंध में, यदि कोई हो, ती अपना विकल्प चुन सकते हैं। इस उदोक्षति के लाभ जिला परिवहन अधिकारी (डीटीओ), परिवहन के पद पर वास्तविक रूप से कार्यभार ग्रहण करने की तिथि से प्रभावी होंगे।

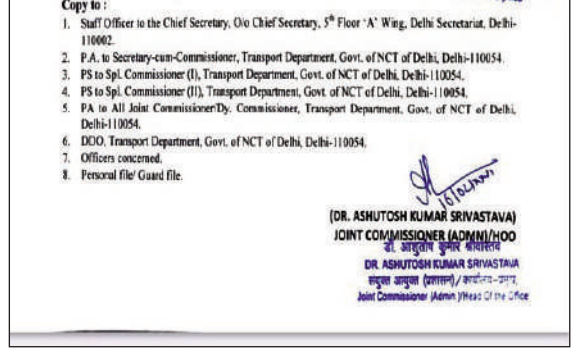

GOVERNMENT OF NATIONAL CAPITAL TERRITORY OF DELHI
TRANSPORT DEPARTMENT: ADMINISTRATION BRANCH
5/9, UNDER HILL ROAD, DELHI-110054.

F.4/99/Admn/TPT/2025/7033 Dated: 16/02/26

ORDER

On the recommendation of Departmental Promotion Committee, the Chief Secretary, GNCTD is pleased to promote the following MVIs/HQIs to the post of District Transport Officer (DTO) on regular basis in Group 'B' in the Pay Matrix Level-7 (Rs. 44900-142400) of 7th CPC, with immediate effect:-

S. No.	Name of the Official	Date of Birth	Earmarked Category	Filled by Category
1.	Rakesh Kumar, MVI/MLO (Adhoc)	10.06.1966	SC	UR
2.	Mukesh Budhiraja, HQI/MLO (Adhoc)	01.06.1968	UR	UR
3.	K.C. Seth, HQI	04.01.1969	SC	UR
4.	Viplove Singh, MVI	24.06.1983	UR	UR
5.	Jitendra Kumar, MVI	31.10.1984	UR	UR
6.	Deepak Kumar Pal, MVI	02.08.1983	UR	UR
7.	Surender Kumar, MVI	22.04.1973	SC	UR
8.	Vikas Chaudhary, MVI	28.03.1979	OBC	UR
9.	Vikram Singh, MVI	16.02.1983	OBC	UR
10.	Rahul, MVI	17.08.1986	UR	UR
11.	Sultan Ali, MVI	07.04.1980	OBC	UR
12.	Manmohan Singh Rawat, MVI	07.05.1975	UR	UR
13.	Rajesh Kumar Verma, MVI	15.01.1975	OBC	UR
14.	Rahul Sharma, MVI	17.08.1985	OBC	UR
15.	Sumeet Kumar, MVI	19.07.1982	SC	SC

The above officials may exercise their option with regard to fixation of pay, if any, as per FR-22 within one month of issue of this order.

The benefits of the promotion will be given w.e.f. the actual date of joining to the post of District Transport Officer (DTO), Transport.

(DR. ASHUTOSH KUMAR SRIVASTAVA)
JOINT COMMISSIONER (ADMN)/HOO

F.4/99/Admn/TPT/2025/7033 Dated: 16/02/26

Copy to :
1. Staff Officer to the Chief Secretary, O/o Chief Secretary, 5th Floor 'A' Wing, Delhi Secretariat, Delhi-110002.
2. P.A. to Secretary-cum-Commissioner, Transport Department, Govt. of NCT of Delhi, Delhi-110054.
3. PS to Spl. Commissioner (I), Transport Department, Govt. of NCT of Delhi, Delhi-110054.
4. PS to Spl. Commissioner (II), Transport Department, Govt. of NCT of Delhi, Delhi-110054.
5. PA to All Joint Commissioner/Dy. Commissioner, Transport Department, Govt. of NCT of Delhi, Delhi-110054.
6. DDO, Transport Department, Govt. of NCT of Delhi, Delhi-110054.
7. Officers concerned.
8. Personal file/ Guard file.

(DR. ASHUTOSH KUMAR SRIVASTAVA)
JOINT COMMISSIONER (ADMN)/HOO
डॉ. आशुतोष कुमार श्रीवास्तव
DR. ASHUTOSH KUMAR SRIVASTAVA
संयुक्त आयुक्त (प्रशासन)/कार्यालय-प्रमुख
Joint Commissioner (Admn.)/Head Of the Office

टेंपल आफ लिबरलाइजेशन एंड वेलफेयर अलाइड ट्रस्ट पंजीकृत
https://tolwa.com/about.html | tolwaindia@gmail.com, tolwadelhi@gmail.com

आज का साइबर सुरक्षा विचार

पिंकी कुंडू

एआई समिट 2026 – भारत ने बदला एआई के प्रति विश्व का दृष्टिकोण

भारत में आयोजित India AI Impact Summit 2026 ने वैश्विक एआई विमर्श को एक नया आयाम दिया है। जहाँ पश्चिमी देशों के हालिया सम्मेलनों (जैसे Bletchley Park, Seoul, Paris) का केंद्रबिंदु मुख्यतः "existential risks" और एल्गोरिदमिक खतरे रहे, वहीं भारत का दृष्टिकोण कहीं अधिक व्यावहारिक, समावेशी और विकासोन्मुखी है।

दृष्टिकोण का तुलनात्मक विश्लेषणः

1. Sovereign AI और AI for All – एआई को लोकतांत्रिक और सर्वसुलभ बनाना

2. AI Safety – एल्गोरिदमिक जोखिम, नियंत्रण और अस्तित्वगत खतरे

लक्ष्यः मानव विकास, पर्यावरणीय स्थिरता, वैश्विक एआई विभाजन को पाटना, तकनीकी नियंत्रण, नियामक ढाँचे और जोखिम-निवारण।

संदेशः

- "Action से Impact" – एआई को ठोस सामाजिक-आर्थिक परिणामों से जोड़ना

- "Risk से Regulation" – एआई को सीमित और सुरक्षित रखने पर जोर

साइबर सुरक्षा दृष्टिः नागरिकों और संस्थानों को सशक्त करना, बहुभाषी जागरूकता और डिजिटल समावेशन। उच्च-स्तरीय तकनीकी मानक, लेकिन नागरिक-स्तर पर अपेक्षाकृत कम फोकस।

वैश्विक भूमिकाः Bretton Woods moment for silicon age – भारत को एआई शासन का नया केंद्र बनाना, पारंपरिक तकनीकी महाशक्तियों का नेतृत्व बनाए रखना।

भारत का साइबर सुरक्षा दृष्टिकोण

- समावेशी सुरक्षाः भारत एआई को केवल तकनीकी विशेषज्ञों तक सीमित नहीं रखता, बल्कि नागरिकों और छोटे संगठनों तक पहुँचाने पर जोर देता है।

- बाइलिंगुअल आउटरीचः हिंदी और अन्य भाषाओं में साइबर सुरक्षा जागरूकता सामग्री तैयार कर, डिजिटल सुरक्षा को जनसामान्य तक पहुँचाना।

- प्रायोगिक मार्गदर्शनः SOPs, पोर्टल्स (NCRP vs. CFCFRMS) और फंड रिकवरी जैसे व्यावहारिक पहलुओं को स्पष्ट करना।

- आशा-आधारित संदेशः RBI के मुआवज़ा पहल और TRAI के एआई-स्पैम ब्लॉकिंग जैसे कदमों को नागरिकों के लिए आशा-प्रेरित मार्गदर्शन के रूप में प्रस्तुत करना।

पश्चिमी देशों से भिन्नता

भारत का दृष्टिकोण "भय से अधिक भरोसा" पर आधारित है। जहाँ पश्चिमी विमर्श एआई को संभावित खतरे के रूप में देखता है, भारत उसे सामाजिक-आर्थिक अवसर और साइबर सुरक्षा सशक्तिकरण का साधन मानता है।

इस परिप्रेक्ष्य में, भारत का एआई दृष्टिकोण साइबर सुरक्षा संस्कृति को नागरिक-केंद्रित, बहुभाषी और आशा-प्रेरित बनाता है, जबकि पश्चिमी देशों का दृष्टिकोण अधिकतर नियामक और जोखिम-निवारक है।

सुप्रीम कोर्ट की 9 जजों की बेंच करेगी 17 मार्च को 'इंडस्ट्री' की परिभाषा पर रेफरेंस पर सुनवाई

संजय कुमार बाठला

सुप्रीम कोर्ट 17 मार्च को इंडसट्रियल डिस्प्यूट्स एक्ट, 1947 की धारा 2(j) के तहत 'इंडस्ट्री' की परिभाषा पर 9 जजों की बेंच के रेफरेंस पर सुनवाई करेगा।

यह रेफरेंस 1978 में बैंगलोर वाटर सप्लाई बनाम ए राजप्पा केस में दिए गए 7 जजों की बेंच के फैसले के खिलाफ है, जिसमें 'इंडस्ट्री' की एक बड़ी परिभाषा तय की गई, जिसमें सरकारी काम, पब्लिक यूटिलिटी, हॉस्पिटल, एजुकेशनल और रिसर्च इंस्टीट्यूशन, प्रोफेशन और क्लब शामिल थे।

चीफ जस्टिस ऑफ इंडिया (CJI) सूर्यकांत, जस्टिस जॉयमाल्या बागची और जस्टिस विपुल पंचोली की बेंच ने देखा कि ये बड़े मुद्दे सामने आए-

(i) क्या बैंगलोर वाटर सप्लाई केस में जस्टिस कृष्णा अय्यर के तय किए गए टेस्ट यह तय करेंगे कि कोई काम या एंटरप्राइज 'इंडस्ट्री' की परिभाषा में आता है या नहीं, सही कानून बताते हैं और क्या ID (अमेंडमेंट) Act 1982, जो लगता है लागू नहीं हुआ और इंडसट्रियल रिलेशन्स कोड 2020 का दिए गए मतलब पर कोई कानूनी असर पड़ता है।

(ii) क्या सरकारी डिपार्टमेंट या उनके इंस्ट्रुमेंट द्वारा की जाने वाली सोशल वेलफेयर एक्टिविटी और स्कीम या दूसरे एंटरप्राइज को ID Act की धारा 2(j) के मकसद से इंडसट्रियल एक्टिविटी माना जा सकता है।

(iii) राज्य की कौन-सी एक्टिविटी कवर होंगी और क्या ऐसी एक्टिविटी ID Act की धारा 2(j) के दायरे से बाहर होंगी।

(iii) कोई और सवाल जो सुनवाई के दौरान उठ सकता है।

बेंच ने कहा कि प्री-केस मैनेजमेंट का काफी हिस्सा पूरा हो चुका है और मामला फाइनल सुनवाई के लिए तैयार है।

सीजेआई सूर्यकांत ने कहा कि 9 जजों की कम्पोजीशन एडमिनिस्ट्रेटिव ऑर्डर के ज़रिए नोटिफ़ाई की जाएगी।

2005 में जस्टिस एन. संतोष हेगड़े के नेतृत्व वाली पांच जजों की बेंच ने बैंगलोर वॉटर सप्लाई केस को स्टेट ऑफ़ उत्तर प्रदेश बनाम जय बीर सिंह में बड़ी बेंच को रेफ़र कर दिया। 2017 में 7 जजों की बेंच ने इस मामले को 9 जजों की बेंच को रेफ़र किया, क्योंकि बैंगलोर वॉटर सप्लाई केस 7 जजों की बेंच ने सुना था।

Case : STATE OF U.P. Vs JAI BIR SINGH | C.A. No. 897/2002

बहुमंज़िला कार पार्किंग निजी हाथों में, स्मार्ट सिटी परियोजना पर उठे सवाल

बिरसा मुंडा एथलेटिक स्टेडियम में व्यावसायिक उपयोग की निष्पक्ष जाँच हो – डॉ यादव

राउरकेला - राउरकेला स्मार्ट सिटी लिमिटेड फंड से निर्मित बिरसा मुंडा एथलेटिक स्टेडियम परिसर की बहुमंज़िला कार पार्किंग को निजी संस्था को सौंपे जाने के निर्णय पर राजनीतिक और सामाजिक हलकों में तीखी प्रतिक्रिया सामने आ रही है। लगभग 157.21 करोड़ रुपये की लागत से निर्मित इस खेल परिसर में 9,000 दर्शक क्षमता वाला फुटबॉल स्टेडियम, 181 कारों की पार्किंग सुविधा और स्विमिंग पूल का निर्माण किया गया था। मार्च 2023 में इसका उद्घाटन तत्कालीन मुख्यमंत्री नवीन पटनायक ने किया था।

डेढ़ वर्ष तक खाली, फिर निजी संस्था को हस्तांतरण

जानकारी के अनुसार, बहुमंज़िला पार्किंग का निर्माण तो पूरा हो गया, लेकिन इसे लंबे समय तक न तो शहरवासियों और न ही खेल प्रेमियों के उपयोग में लाया गया। करीब डेढ़ वर्ष तक निष्क्रिय रहने के बाद जिला प्रशासन ने कथित रूप से व्यावसायिक उद्देश्य से इसे एक निजी संस्था को सौंप दिया। बताया जा रहा है कि लगभग 3 करोड़ 80 लाख रुपये सुरक्षा राशि जमा के रूप में जमा कर एक बीजद नेता ने इसका संचालन अपने नियंत्रण में लिया। विरोध बढ़ने पर दो बीजद नेताओं को भी इस व्यवसाय से जोड़े जाने की चर्चा है। हालांकि, इस संबंध में आधिकारिक स्तर पर विस्तृत जानकारी सार्वजनिक नहीं की गई है।

पार्किंग से होटल और विवाह मंडप तक सौंदर्यीकरण के लिए लगाए गए कांचों को हटाकर संरचना में बदलाव किए जाने की बात सामने आई है। वर्तमान में केवल बेसमेंट में पार्किंग व्यवस्था रखी गई है, जबकि ग्राउंड और प्रथम तल पर तोड़फोड़ कर होटल एवं विवाह मंडप बनाए जाने की तैयारी चल रही है।

सूत्रों के अनुसार, दूसरे तल पर 72 कमरों का स्टार होटल और तीसरे तल पर लगभग दो हजार लोगों की क्षमता वाला आधुनिक विवाह मंडप प्रस्तावित है। उल्लेखनीय है कि स्मार्ट सिटी बोर्ड के पूर्व निर्णय के अनुसार केवल दूसरे और तीसरे तल को सीमित व्यावसायिक उपयोग में लाने की अनुमति दी गई थी।

राजनीतिक प्रतिक्रियाएं तेज

इस मुद्दे पर विभिन्न दलों के नेताओं ने आपत्ति दर्ज कराई है। सामाजिक कार्यकर्ता डॉ राजकुमार यादव ने कहा कि "यह सुविधा शहरवासियों और खेल प्रेमियों के हित में उपयोग होनी चाहिए, न कि व्यावसायिक लाभ के लिए। उन्होंने चेतावनी दी कि आवश्यकता पड़ने पर सरकारी जाँच एजेंसियों द्वारा निष्पक्ष जाँच के मार्ग प्रशस्त किये जाएं"

जानकारों के अनुसार - सरकार चाहती तो इसका उपयोग छात्रावास या अन्य सार्वजनिक कार्यों के लिए कर सकती थी। वहीं अन्य जानकार के अनुसार - सरकार कोई व्यावसायिक संस्था नहीं है और राजस्व के नाम पर ऐसा निर्णय उचित नहीं माना जा सकता।

जनहित याचिका की चेतावनी

शहर की कुछ सामाजिक संस्थाओं ने इस मामले को लेकर हाईकोर्ट में जनहित याचिका दायर करने की चेतावनी दी है। उनका आरोप है कि सार्वजनिक धन से निर्मित संरचना को राजनीतिक प्रभाव में निजी हाथों में सौंपना किसी भी सरकार के पारदर्शिता पर प्रश्नचिह्न लगाता है।

प्रशासन का पक्ष

स्मार्ट सिटी के सीईओ एवं राउरकेला नगर निगम कमिश्नर दीना दस्तगीर ने स्पष्ट किया कि "स्मार्ट सिटी परियोजना पूर्ण हो चुकी है और रखरखाव के लिए राजस्व आवश्यक है। बोर्ड की अनुमति के अनुसार टेंडर प्रक्रिया के माध्यम से निजी संस्था को जिम्मेदारी दी गई है। अनुबंध में यह शर्त भी शामिल है कि मैच के दिनों में बेसमेंट पार्किंग उपलब्ध कराई जाएगी।" फिलहाल, यह मामला शहर में चर्चा और विवाद का विषय बना हुआ है। सार्वजनिक हित बनाम व्यावसायिक उपयोग की बहस के बीच अब प्रशासनिक निर्णयों की पारदर्शिता और जवाबदेही पर सवाल उठ रहे हैं आनेवाले दिनों में निष्पक्षतापूर्ण जाँच व कड़ी कार्रवाई की अपेक्षा में।

स्वास्थ्य विशेष

स्वास्थ्य आपका कोशिश हमारी

'स्क्रीन देख-देखकर आंखें जल रही हैं? 'गुलकंद' आंखों को एसी जैसी ठंडक देगा!

पिंकी कुंडू

वैज्ञानिक कारण:

1. गुलकंद :- गुलाब की पंखुड़ी का जैम शरीर की बड़ी हुई गर्मी को सोखता है

2. जब शरीर की गर्मी बढ़ती है, तो उसका असर आंखों (जलन/लाल होना) पर दिखता है

3. गुलकंद एक नेचुरल कूलेंट है जो आंखों की नसों को रिलैक्स करता है और तनाव कम करता है

आयुर्वेदिक कारण:

1. गुलाब 'पित्त - शामक' और 'चक्षुष्य' (आंखों के लिए अच्छा) है

2. यह 'साधक पित्त' (जो भावनाओं और दिमाग को कंट्रोल करता है) को शांत करता है

3. गुस्से और तनाव को कम करने के लिए यह बेस्ट है

फायदे:

1. आंखों में ठंडकः जलन और भारीपन खत्म

2. कब्ज में राहतः यह पेट भी साफ रखता है

3. मूडः खुशबू और स्वाद से मन खुश रहता है

फॉलो करने की विधि:

1. 1 चम्मच देसी गुलकंद (जिसमें गुलाब ज्यादा, चीनी कम हो) लें

2. इसे ऐसे ही खाएं या दूध में मिलाकर पिएं

3. दिन में किसी भी समय ले सकते हैं (दोपहर में बेस्ट)

नुकसान:

1. शुगर वाले लोग शुगर - फ्री गुलकंद लें या न लें

2. कफ/सर्दी में ज्यादा न खाएं।

"बवासीर की जलन से रोना आता है? 'एलोवेरा' अंदर से ठंडक देगा!

पिंकी कुंडू

वैज्ञानिक कारण:

1. एलोवेरा में 99% पानी और एंटी - इंफ्लेमेटरी एंजाइम्स होते हैं

2. यह आंतों को जबरदस्त हाइड्रेशन देता है, जिससे मल नरम होता है और आसानी से पास हो जाता है

3. यह गुदा मार्ग की सूजन और जलन को शांत करता है

आयुर्वेदिक कारण:

* एलोवेरा को 'कुमारी' कहते हैं, जो 'भेदन' (पाचन के बाद मल तोड़ने वाला) है

* यह पित्त की अधिकता को खत्म करता है जो बवासीर और जलन का मुख्य कारण है

* यह नेचुरल लुब्रिकेंट है

फायदे,:

दर्द रहित सुबहः टॉयलेट में जोर नहीं लगाना पड़ेगा

जलन खत्मः आग जैसी जलन शांत होगी

मस्से सुखेंगेः धीरे-धीरे सूजन कम होगी

फॉलो करने की विधि:

1. ताजे एलोवेरा के पत्ते से 2 चम्मच गूदा निकालें

2. इसे धो लें (पीला पदार्थ निकाल दें)

3. सुबह खाली पेट खाएं

नुकसान:

प्रेगनेंसीः गर्भवती महिलाएं एलोवेरा खाने से बचें, अगर दस्त लगे हैं, तो न खाएं

सिर्फ गूदा खाएं, हरा छिलका नहीं (वो पेट खराब करता है)

उल्टी जैसा मन (Nausea) हो रहा है? 'सोंठ' का पाउडर जीभ पर रखते ही आराम!

पिंकी कुंडू

वैज्ञानिक कारण:

1. सोंठ में जिंजरल्स और शोगोल्स होते हैं जो ताजे अदरक से ज्यादा प्रभावशाली होते हैं

2. यह पेट की नसों को शांत करते हैं और गैसट्रिक खालीपन को तेज करते हैं, जिससे उल्टी का सिग्नल दिमाग तक जाना बंद हो जाता है

आयुर्वेदिक कारण:

1. सोंठ 'आम-पाचक' है

2. यह 'कफ' को काटती है जो मितली का मुख्य कारण है

3. बिना शहद के सीधे जीभ पर रखने से यह लार ग्रंथियों को उत्तेजित करती है और तुरंत असर दिखाती है

फायदे:

1. मतली शांतः सफर में या प्रेगनेंसी (डॉक्टर की सलाह पर) में बेस्ट

2. भूखः मुंह का स्वाद ठीक हो जाएगा

3. गैसः पेट का भारीपन हटेगा

फॉलो करने की विधि:

1. 1 चुटकी सोंठ पाउडर लें

2. इसे जीभ के बीच में रखें

3. धीरे-धीरे लार के साथ अंदर जाने दें

नुकसान:

1. बहुत तीखा होता है, बच्चे शायद न सह पाएं (उन्हें शहद के साथ दें)

2. गले में जलन हो सकती है, बाद में पानी पी लें

3. अल्सर वाले लोग अवॉयड करें

अल्ट्रा - प्रोसेस्ड खाद्य पदार्थ किडनीक्रॉनिक किडनी डिज़ीज़ का कारक

पिंकी कुंडू

उभरते हुए वैज्ञानिक प्रमाण इस बात का स्पष्ट समर्थन करते हैं कि अल्ट्रा - प्रोसेस्ड स्नैक्स और सामान्य रूप से अल्ट्रा - प्रोसेस्ड खाद्य पदार्थ किडनी को नुकसान पहुँचा सकते हैं, विशेष रूप से क्रॉनिक किडनी डिज़ीज़ (किडनीक्रॉनिक किडनी डिज़ीज़) के जोखिम को बढ़ाकर।

अल्ट्रा - प्रोसेस्ड फूड्स में वह सभी आम खाद्य पदार्थ शामिल हैं जिन्हें हम रोज़मर्रा में खाते हैं — जैसे पैकेट वाले चिप्स, बिस्कुट, मीठे शीतल पेय, इंस्टेंट नूडल्स, प्रोसेस्ड मांस, टॉफ़ियाँ, कैंडीज़, और तैयार - खाने वाले नमकीन या तले हुए आइटम।

यह खाद्य पदार्थ औद्योगिक रूप से बनाए जाते हैं, जिनमें अत्यधिक नमक, चीनी, अस्वस्थ वसा, फॉस्फेट, कृत्रिम रंग - सुगंध और अन्य रासायनिक संपादन होते हैं, जबकि इनका पोषण मूल्य बहुत कम होता है।

कई बड़े वैज्ञानिक अध्ययनों और कई अध्ययनों का संयुक्त विश्लेषण (मेटा - एनालिसिस) से यह संबंध स्पष्ट हुआ है कि अधिक अल्ट्रा - प्रोसेस्ड फूड्स सेवन किडनी को गंभीर हानि से जोड़ता है।

एक प्रमुख दीर्घकालिक अध्ययन, जिसमें 14,000 से अधिक वयस्कों को लगभग 24 वर्षों तक फॉलो किया गया, यह दर्शाता है किः जिन लोगों ने सबसे अधिक अल्ट्रा - प्रोसेस्ड फूड खाए, उनमें किडनीक्रॉनिक किडनी डिज़ीज़ होने का जोखिम 40% अधिक था।

प्रतिदिन अल्ट्रा - प्रोसेस्ड फूड्स की हर अतिरिक्त सर्विंग के साथ किडनीक्रॉनिक किडनी डिज़ीज़ का जोखिम लगभग 10% बढ़ जाता है।

कई अध्ययनों का संयुक्त विश्लेषण (मेटा-एनालिसिस) बताते हैं किः अधिक अल्ट्रा - प्रोसेस्ड फूड्स सेवन से लगभग 30% तक किडनीक्रॉनिक किडनी डिज़ीज़ का जोखिम बढ़ता है और यह प्रभाव डोज़ - रिस्पॉन्स जैसा है — यानी जितना अधिक सेवन, उतना अधिक खतरा (उदाहरणः अल्ट्रा - प्रोसेस्ड फूड्स सेवन में 10% वृद्धि ⟶ किडनीक्रॉनिक किडनी डिज़ीज़ जोखिम में ₹7% वृद्धि)।

जिन लोगों को पहले से किडनीक्रॉनिक किडनी डिज़ीज़ है, उनमें अधिक अल्ट्रा - प्रोसेस्ड फूड्स खाने सेः

1. किडनी की कार्यक्षमता तेज़ी से गिरती है,

2. मृत्यु का खतरा बढ़ता है, और

3. जटिलताएँ बढ़ती हैं — जैसे इंसुलिन रेज़िस्टेंस, उच्च रक्तचाप, रक्त में फॉस्फेट का बढ़ना (हाइपरफॉस्फेटेमिया) आदि।

इन नुकसानों के पीछे कई जैविक कारण हैं:

1. अधिक सोडियम ⟶ रक्तचाप बढ़ाता है (किडनीक्रॉनिक किडनी डिज़ीज़ का बड़ा कारण),

2. फॉस्फेट एडिटिव्स ⟶ रक्त वाहिकाओं और किडनी को नुकसान,

3. रासायनिक एडिटिव्स ⟶ सूजन और ऑक्सीडेटिव स्ट्रेस,

4. कम फाइबर ⟶ आंतों के माइक्रोबायोम को बिगाड़ता है, और

5. कुल मिलाकर खराब आहार ⟶ मोटापा, मधुमेह और मेटाबॉलिक सिंड्रोम, जो किडनीक्रॉनिक किडनी डिज़ीज़ के मुख्य जोखिम कारक हैं।

जो लोग "मानवता से प्रेम करने वाले" हैं—अर्थात जो मानव स्वास्थ्य और समाज की भलाई की चिंता करते हैं — उनके लिए यह एक गंभीर जन - स्वास्थ्य संकट है, क्योंकि कई देशों में आज कुल कैलोरी का लगभग 60% हिस्सा अल्ट्रा - प्रोसेस्ड खाद्य पदार्थों से आ रहा है, जिससे किडनीक्रॉनिक किडनी डिज़ीज़ जैसी रोकथाम योग्य बीमारियाँ तेज़ी से फैल रही हैं।

अच्छी खबर यह है कि यदि प्रतिदिन सिर्फ़ एक सर्विंग अल्ट्रा - प्रोसेस्ड फूड्स को हटाकर उसकी जगह कम - प्रोसेस्ड या प्राकृतिक खाद्य पदार्थ फल, सब्ज़ियाँ, मेवे, घर का बना भोजन लिया जाए, तो किडनी रोग का जोखिम कम किया जा सकता है।

विस्तृत व्याख्या, सरल शब्दों में: अल्ट्रा-प्रोसेस्ड खाना शरीर को "धीरे - धीरे ज़हर" देने जैसा है, और किडनी इस ज़हर को छानते - छानते थक जाती है।

किडनी का काम है:

1. रक्त को साफ़ करना

2. नमक, फॉस्फेट और विषैले तत्व बाहर निकालना

लेकिन अल्ट्रा - प्रोसेस्ड फूड्स में:

नमक और फॉस्फेट इतना ज़्यादा होता है कि किडनी पर लगातार अतिरिक्त दबाव पड़ता है समय के साथ यह दबाव स्थायी क्षति (किडनीक्रॉनिक किडनी डिज़ीज़) में बदल सकता है। इसलिए किडनीक्रॉनिक किडनी डिज़ीज़ को अक्सर "साइलेंट किलर" कहा जाता है — यह धीरे-धीरे बढ़ता है और जब लक्षण दिखते हैं, तब तक किडनी काफ़ी हद तक खराब हो चुकी होती है।

नवीनतम विकास और ट्रेंड्स (नवीनतम घटनाक्रम – 2024–2025 तक) डब्लूएचओ और अंतरराष्ट्रीय नेफ्रोलॉजी संगठनों ने अब स्पष्ट रूप से सलाह दी है किः अल्ट्रा - प्रोसेस्ड फूड का सेवन सीमित करना किडनी, हृदय और मेटाबॉलिक बीमारियों की रोकथाम के लिए आवश्यक है।

नए न्यूट्रिशन गाइडलाइन्स में: "फूड प्रोसेसिंग लेवल" को भी उतना ही महत्वपूर्ण माना जा रहा है जितना कैलोरी या फैट को

कई देशों में: फ्रंट - ऑफ - पैक चेतावनी लेबल (ज़्यादा नमक / ज़्यादा चीनी) लागू या प्रस्तावित हैं ताकि लोग अल्ट्रा - प्रोसेस्ड फूड्स के खतरे समझ सकें

निष्कर्ष

1. जो खाना जितना ज़्यादा प्राकृतिक, उतना ज़्यादा सुरक्षित।

2. जो खाना जितना ज़्यादा पैकेट - फैक्ट्री वाला, उतना ज़्यादा ख़तरनाक।

शरीर में यह 10 संकेत मौजूद हैं, तो समझिए आपकी सेहत अंदर से मज़बूत है - बिना किसी दवा के

पिंकी कुंडू

शरीर जब सही संतुलन में होता है, तो वह खुद छोटे - छोटे संकेत देता है।

इन संकेतों से जान सकते हैं कि पाचन, इम्यून सिस्टम, हार्मोन और ऊर्जा स्तर ठीक है या नहीं।

1. बाल और नाखून जल्दी बढ़ते हैं यह दर्शाता है कि शरीर को पर्याप्त प्रोटीन, मिनरल्स और पोषण मिल रहा है और ब्लड सर्कुलेशन अच्छा है।

2. सुबह आसानी से नींद खुल जाती है इसका मतलब है कि आपकी बॉडी क्लॉक सही चल रही है और हार्मोन संतुलन में हैं।

3. बार-बार सर्दी, खांसी या फ्लू नहीं होता यह मजबूत इम्यून सिस्टम का संकेत है, जो संक्रमण से लड़ने में सक्षम है।

4. रोज़ाना बिना दर्द के पेट साफ़ होता है यह बताता है कि आपका पाचन तंत्र और आंतें स्वस्थ हैं।

5. चलने या सीढ़ियाँ चढ़ने पर सांस नहीं फूलती यह दिल और फेफड़ों की अच्छी क्षमता और सहनशक्ति को दिखाता है।

6. स्किन साफ़, स्मूद और नेचुरल चमक वाली रहती है इसका मतलब है कि शरीर डिटॉक्स ठीक से कर रहा है और पानी की कमी नहीं है।

7. खाने के बाद गैस, जलन या भारीपन नहीं होता यह अच्छे मेटाबॉलिज्म और संतुलित ब्लड शुगर का संकेत है।

8. जोड़ों या पीठ में बेवजह दर्द नहीं रहता यह दर्शाता है कि शरीर में सूजन कम है और मांसपेशियाँ लचीली हैं।

9. तनाव में भी खुद को कंट्रोल कर पाते हैं यह मजबूत नर्वस सिस्टम और मानसिक संतुलन को दर्शाता है।

10. नींद गहरी आती है और सुबह तरोताज़ा महसूस होता है इसका मतलब है कि शरीर की रिकवरी और हार्मोन रिपेयर सही हो रही है।

अगर इनमें से ज़्यादातर संकेत आपमें हैं, तो आपकी सेहत सही दिशा में है। सेहत को बनाए रखना ही असली इलाज है।

इंसान का मनोवैज्ञानिक जीवविज्ञान (नेचुरल बायोलॉजी) आखिर क्या खाने के लिए बना है

पिंकी कुंडू

इंसान का मनोवैज्ञानिक जीवविज्ञान (नेचुरल बायोलॉजी) आखिर क्या खाने के लिए बना है यह सवाल बहुत पुराना है, जैसेः-

1. गाय घास खाती है,

2. शेर मांस खाता है,

3. वैसे ही इंसान क्या खाने के लिए बना है ? फल, सब्ज़ियाँ या जानवरों का मांस?

4. इसका जवाब धर्म में नहीं, बल्कि क्रमागत उन्नति में छिपा है।

आज से लगभग 66 मिलियन साल पहले, जब डायनासोर खत्म हो चुके थे और पृथ्वी धीरे - धीरे वापिस पनप रही थी, तब धरती पर घने जंगल फैले हुए थे। इन जंगलों में हर तरफ फल ही फल थे।

उसी समय में एक नया जीव विकसित हुआ,

* आकार में छोटा

* दिखने में चूहे और गिलहरी का मिश्रण और

* पंजे काफ़ी हद तक आज के इंसान जैसे।

इस जीव का नाम था पुर्गेटोरियस। यही दुनिया का पहला मनुष्य - सदृश जानवर माना जाता है, यानी आज के सारे बंदर, सारे वानर और इंसान, हम सबका पहला सामान्य पूर्वज।

पुर्गेटोरियस कोई शिकारी नहीं था, उसके पास नुकीले दाँत नहीं थे, ना ही तेज़ नाखून, और ना ही शिकार करने की कोई प्रणाली। वह पेड़ों पर रहता था और ज़्यादातर फल खाता था।

यहीं से एक अहम बात समझ आती है कि हमें फल मीठे क्यों लगते हैं ? वजह यह है कि फल हमारा सबसे पुराना खाना है। हमारा दिमाग और शरीर लाखों सालों से फल को ऊर्जा के स्रोत के रूप में पहचानता आया है।

अब हम इंसानी शरीर की बनावट को देखते हैं।

1. हमारे दाँत गाय जैसे पूरी तरह समतल भी नहीं हैं और

2. शेर जैसे बेहद नुकीले भी नहीं।

3. हमारी आंतें मांसाहारी से लंबी हैं लेकिन शाकाहारी जितनी लंबी नहीं।

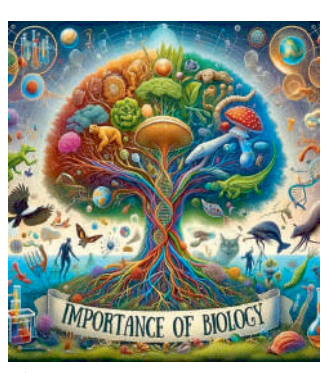

इसका अर्थ है कि इंसान ना तो पूरी तरह मांसाहारी है और ना ही पूरी तरह शाकाहारी। इंसान सर्वाहारी है, यानी जिसमें सब कुछ खाने की क्षमता है।

हमको यहाँ एक ज़रूरी फर्क समझना चाहिए। "सब कुछ खाने की क्षमता" और "सब कुछ खाने के लिए बना होना" एक जैसी बातें नहीं हैं।

इंसान की आधार प्रणाली फल, जड़ें, बीज और पौधों के लिए बना था। मांस बाद में आया, जब जंगल कम हुए, खाना अपर्याप्त हुआ और उत्तरजीविता के लिए नए रास्ते अपनाने पड़े। यानी मांस हमारी शुरुआत नहीं था, बल्कि मजबूरी बना।

यही कारण है कि फल हमें तुरंत ऊर्जा देते हैं, आसानी से डाइजेस्ट हो जाते हैं और शरीर उन्हें बिना संघर्ष के स्वीकार कर लेता है। शरीर उन्हें पहचानता है, क्योंकि वह उन्हें लाखों सालों से जानता है।

निष्कर्ष इंसान का मनोवैज्ञानिक जीवविज्ञान (नेचुरल बायोलॉजी) फल और पौधों को आधार बनाकर विकसित हुआ है और ज़रूरत पड़ने पर बाकी चीज़ें खाने की क्षमता उसमें जुड़ी।

इंसान का शरीर संतुलन के लिए बना है किसी एक चरम के लिए नहीं। शायद इसी वजह से जब इंसान अपने पुराने, प्राकृतिक खाने से बहुत दूर चला जाता है, तो शरीर पहले चेतावनी देता है और फिर बीमारी,

"क्योंकि जीवविज्ञान कभी झूठ नहीं बोलता"

सौजन्यः- अवधेश प्रताप सिंह कानपुर

क्या रामायण और महाभारत काल में मंदिर होते थे?

पिंकी कुंडू

अक्सर लोग पूछते हैं कि क्या रामायण और महाभारत काल में भी मंदिर होते थे या कि वैदिक ऋषि अपने आश्रम में ध्यान करते थे और आम लोग घर में ही पूजा अर्चना करते थे? क्या ब्रह्मनिष्ठ लोग भी पूजा अर्चना करते थे?

रामायण काल में मंदिर होते थे, इसके प्रमाण हैं। राम का काल आज से न्यूनतम ८,७०,००० वर्ष (वर्तमान कलियुग के ५,118 वर्ष + बीते द्वापर युग के ८,६४,००० वर्ष) था। राम ने रामेश्वरम में शिवलिंग की स्थापना की थी। इसका मतलब यह कि उनके काल से ही शिवलिंग की पूजा की परंपरा रही है। राम के काल में सीता द्वारा गौरी पूजा करना इस बात का सबूत है कि उस काल में देवी-देवताओं की पूजा का महत्व था और उनके घर से अलग पूजास्थल होते थे।

महाभारत में दो घटनाओं में कृष्ण के साथ रुक्मणि और अर्जुन के साथ सुभद्रा के भागने के समय दोनों ही नायिकाओं द्वारा देवी पूजा के लिए वन में स्थित गौरी माता (माता पार्वती) के मंदिर की चर्चा है। इसके अलावा युद्ध की शुरुआत के पूर्व भी कृष्ण पांडवों के साथ गौरी माता के स्थल पर जाकर उनसे विजयी होने की प्रार्थना करते हैं।

देश में सबसे प्राचीन शक्तिपीठों और ज्योतिर्लिंगों को माना जाता है। इन सभी का समय-समय पर जीर्णोद्धार किया गया। प्राचीनकाल में यक्ष, नाग, शिव, दुर्गा, भैरव, इंद्र और विष्णु की पूजा और प्रार्थना का प्रचलन था। बौद्ध और जैन काल के उत्थान के दौर में मंदिरों के निर्माण पर विशेष ध्यान दिया जाने लगा और इस काल में राम एवं कृष्ण के मंदिर भी बनाए जाने लगे।

देखना सिर्फ आँखों का काम नहीं, बल्कि चेतना की एक अवस्था भी हो सकती है?

पिंकी कुंडू

हिमाचल की शांत शिवालिक पहाड़ियों में, गोबिंद सागर झील के पास बसा नैना देवी शक्तिपीठ कुछ ऐसा ही अनुभव कराता है। यह स्थान केवल एक मंदिर नहीं, बल्कि भीतर की दृष्टि को जगाने वाला एक मौन आमंत्रण है। जैसे ही पहाड़ों के बीच यह स्थल सामने आता है, मन अपने आप धीमा हो जाता है और भीतर कुछ देखने की जिज्ञासा जन्म लेती है।

शास्त्रीय मान्यता के अनुसार, सती के देहत्याग के बाद जब शिव का तांडव सृष्टि को असंतुलित करने लगा, तब विष्णु ने सती के शरीर का विभाजन किया। कहा जाता है कि नैना देवी के इस पावन स्थान पर माता के नेत्र गिरे थे। नेत्र यानी केवल देखने का साधन नहीं, बल्कि ज्ञान, विवेक और सत्य को पहचानने की क्षमता। शायद इसी कारण यहाँ आकर केवल दर्शन नहीं होते, भीतर कुछ खुलता भी है।

देवी यहाँ नैना देवी के रूप में पूजित हैं, वह शक्ति जो देखने का नया अर्थ सिखाती है। मंदिर में प्रतिष्ठित दो नेत्र प्रतिमाएँ जैसे यह संकेत देती हैं कि जीवन को केवल बाहरी आँखों से नहीं, भीतर की समझ से देखना जरूरी है। इस शक्तिपीठ के भैरव कपाली भैरव माने जाते हैं, जो संरक्षण और वैराग्य का संतुलन दिखाते हैं। शक्ति और संयम का अद्भुत मेल यहाँ हर कदम पर महसूस होता है।

आध्यात्मिक दृष्टि से यह स्थल आज्ञा चक्र से जुड़ा माना जाता है। वही केंद्र जहाँ अंतर्ज्ञान जन्म लेता है और निर्णयों को स्पष्टता मिलती है। यहाँ की साधना किसी दिखावे की नहीं, बल्कि चुपचाप भीतर उतरने की प्रक्रिया है। शायद इसलिए ध्यान करने वाले और शाक्त उपासक इस स्थान को विशेष मानते हैं।

लोक मान्यताओं में भी नैना देवी की महिमा जीवित है। कहा जाता है कि सच्चे मन से यहाँ आने वाला व्यक्ति अपने जीवन की उलझनों को नए दृष्टिकोण से देखने लगता है। पहाड़ी रास्तों की कठिन चढ़ाई जैसे धैर्य की परीक्षा लेती है, और ऊपर पहुँचकर मिलने वाली शांति भीतर के संघर्षों का उत्तर बन जाती है।

नैना देवी शक्तिपीठ हमें एक गहरा संकेत देती है। सत्य वही नहीं जो दिखाई दे, बल्कि वह भी है जिसे समझा जाए। जब दृष्टि विवेक से जुड़ती है, तभी जीवन का वास्तविक रूप सामने आता है।

शायद इसी लिए यह पीठ हमें सिखाती है कि आँखें खुली हों तो संसार दिखता है, लेकिन चेतना जागे तो सत्य।

राकिनी, उनकी साधना, शक्तियों, और मत-मतांतरों का विस्तृत और शोधपूर्ण विवरण

पिंकी कुंडू

राकिनी (Rakini) तंत्र साधना और कुंडलिनी योग में एक अत्यंत महत्वपूर्ण और शक्तिशाली शक्ति हैं। सामान्यतः लोग यक्षिणी या योगिनी साधनाओं की बात करते हैं, लेकिन राकिनी का स्थान मुख्य रूप से षटचक्रों (Six Chakras) के अंतर्गत आता है। यहाँ राकिनी, उनकी साधना, शक्तियों, और मत-मतांतरों का विस्तृत और शोधपूर्ण विवरण दिया गया है।

1. राकिनी कौन हैं? (परिचय और स्वरूप) तंत्र शास्त्रों और कुंडलिनी योग के अनुसार, हमारे शरीर में स्थित स्वाधिष्ठान चक्र (Swadhisthana Chakra) की अधिष्ठात्री देवी 'राकिनी' हैं।

* स्थानः जननांग (Genitals) के ठीक ऊपर, स्वाधिष्ठान चक्र (Sacral Chakra)।

* तत्वः जल तत्व (Water Element)।

* स्वरूपः ध्यान मंत्रों के अनुसार, देवी राकिनी का रंग गहरा नीला (श्याम वर्ण) या कभी-कभी रक्त वर्ण बताया गया है। वे द्वि-मुखी (दो सिर वाली) हैं। उनके चार हाथ हैं जिनमें वे त्रिशूल, कमल, डमरू और एक तीक्ष्ण अस्त्र (जैसे टंक या पाश) धारण करती हैं।

* प्रकृतिः वे रक्त धातु की स्वामिनी हैं और भावनाओं (Emotions) व काम (Desire) को नियंत्रित करती हैं।

2. राकिनी के साथ कौन चलता है? (सहयोगी शक्तियाँ और परिवार) तंत्र में कोई भी शक्ति अकेली नहीं चलती, उनके साथ उनका एक पूरा 'परिकर' (Entourage/Family) होता है। राकिनी के संदर्भ में उनके साथ चलने वाली शक्तियाँ निम्नलिखित हैं:

* प्रधान देवता (Consort/Male Aspect): चूंकि वे स्वाधिष्ठान चक्र की शक्ति हैं, इस चक्र के मुख्य देवता भगवान विष्णु हैं। साधना काल में राकिनी शक्ति प्रदान करती हैं, और विष्णु पालन/संरक्षण करते हैं।

* रुद्र/भैरवः वाम मार्ग में, हर चक्र का एक भैरव होता है। स्वाधिष्ठान के संदर्भ में राकिनी के साथ 'संहार भैरव' या कहीं-कहीं 'चंड' का उल्लेख मिलता है जो इनकी सुरक्षा पंक्ति में रहते हैं।

* 6 मुख्य वृत्तियाँ (Attendant Tendencies): स्वाधिष्ठान चक्र 6 पंखुड़ियों वाला कमल है। राकिनी इन 6 वृत्तियों (शक्तियों) की स्वामिनी हैं जो उनके साथ चलती हैं:

*** प्रश्रयः (Affection/Indulgence)**

* क्रूरताः (Cruelty/Ruthlessness)

* सर्वनाशः (Feeling of destruction)

* मूर्छाः (Stupor/Delusion)

* अवज्ञाः (Disdain)

* अविश्वासः (Distrust)

* साधना का उद्देश्य इन्हीं 6 नकारात्मक शक्तियों (वृत्तियों) को राकिनी की कृपा से नियंत्रित करना होता है।

* वाहनः इनका और इनके देवता का वाहन मकर (Magar/Crocodile) है, जो जल के भीतर की छिपी हुई खतरनाक वृत्तियों का प्रतीक है।

3. साधना विधि और प्रक्रिया (संक्षिप्त अवलोकन)

* चेतावनीः तंत्र साधना गुरु के सानिध्य में ही करनी चाहिए। यह जानकारी केवल ज्ञानवर्धन हेतु है।

* राकिनी की साधना मुख्य रूप से कुंडलिनी जागरण का हिस्सा है, लेकिन कुछ अघोर पंथों में इसे

* स्वतंत्र देवी के रूप में भी सिद्ध किया जाता है।

* मंत्रः इनका बीज मंत्र मुख्य रूप से ॠवंॠ (Vam/Vang) है।

* विशिष्ट मंत्रः या गुरु प्रदत्त विशिष्ट शाबर/तांत्रिक मंत्र।

* ध्यानः साधक को अपनी रीढ़ की हड्डी के निचले हिस्से (स्वाधिष्ठान) पर ध्यान केंद्रित करना होता है। वहां अर्द्ध-चंद्राकार (Crescent Moon) आकृति और जल तत्व का अनुभव करते हुए देवी राकिनी का नीले वर्ण में ध्यान किया जाता है।

* समयः मध्यरात्रि (निशीथ काल) या ब्रह्म मुहूर्त।

4. सिद्धि के फायदे और नुकसान राकिनी सिद्धि का अर्थ है—अपने अवचेतन मन और जल तत्व पर विजय प्राप्त करना।

* फायदे (Benefits):

* कामेच्छा पर नियंत्रणः साधक काम वासना (Lust) और भोग-विलास की इच्छाओं को पूरी तरह नियंत्रित कर लेता है। वह चाहे तो भोगी बने, चाहे तो योगी।

* रचनात्मकता (Creativity): चूंकि यह सृजन का केंद्र है, साधक में अद्भुत काव्य शक्ति, लेखन क्षमता और कलात्मकता जागृत होती है।

* जल तत्व सिद्धिः साधक को जल से भय नहीं लगता और शरीर के तरलीय रोगों (Fluid related diseases) का नाश होता है।

* शास्त्र ज्ञानः प्राचीन ग्रंथों का ज्ञान स्वतः ही स्फुरित होने लगता है।

* आकर्षणः साधक के व्यक्तित्व में एक तीव्र सम्मोहन और आकर्षण शक्ति आ जाती है।

नुकसान (Risks - यदि साधना गलत हो):

* मानसिक असंतुलनः यदि ऊर्जा अनियंत्रित हो जाए, तो साधक पागलपन का शिकार हो सकता है।

* अत्यधिक कामुकताः साधना भ्रष्ट होने पर साधक वासना का गुलाम बन सकता है, जिससे उसका पतन निश्चित है।

* भावनात्मक अस्थिरताः साधक डिप्रेशन, अत्यधिक क्रोध या भय (Phobia) का शिकार हो सकता है।

* शारीरिक रोगः किडनी, मूत्राशय या रक्त से संबंधित गंभीर रोग हो सकते हैं।

5. अलग-अलग तंत्र मार्गों के मत राकिनी को लेकर विभिन्न संप्रदायों के अलग-अलग दृष्टिकोण हैं:

* समय मत (दक्षिणाचार/वैदिक तंत्र): यहाँ राकिनी को 'शुभदा' माना जाता है। साधक इन्हें माँ के रूप में पूजता है। यहाँ उद्देश्य केवल आंतरिक शुद्धि और मोक्ष है। यहाँ मांस-मदिरा का प्रयोग वर्जित है और साधना मानसिक (मानसिक जप) होती है।

* कौल मार्ग (वामाचार/कौल तंत्र): कौल साधक राकिनी को भैरवी रूप में देखते हैं। यहाँ साधना में पंचमकार (मद्य, मांस, मीन, मुद्रा, मैथुन) का प्रतीकात्मक या वास्तविक प्रयोग गुरु निर्देशानुसार हो सकता है। इनका मानना है कि राकिनी 'रक्त' (Blood) की प्यासी नहीं, बल्कि रक्त में स्थित ऊर्जा (प्राण शक्ति) की संचालिका हैं। वे इनका आह्वान विशिष्ट तिथियों पर शमशान या एकांत में करते हैं।

* हठ योगः हठ योगियों के लिए राकिनी कोई बाहरी देवी नहीं, बल्कि शरीर के भीतर की एक ऊर्जा ग्रंथि है। वे प्राणायाम, बंध (जैसे मूलबंध और उड्डियान बंध) और आसनों के माध्यम से इस शक्ति को जागृत कर ऊपर (मणिपुर चक्र की ओर) भेजते हैं।

6. यह साधना किसे करनी चाहिए? यह साधना सामान्य गृहस्थ के लिए नहीं है जो केवल धन या चमत्कार चाहता है। यह उनके लिए है:

* जो कुंडलिनी योग में आगे बढ़ रहे हैं।

* जिन्हें अपनी कामेच्छाओं और भावनाओं (Anger, Lust, Jealousy) पर नियंत्रण पाने में कठिनाई हो रही है।

* कलाकार, कवि या लेखक जो अपनी रचनात्मक शक्ति (Creative Potential) को चरम पर ले जाना चाहते हैं।

राकिनी जल और भावनाओं की देवी हैं। वे चंचल मन को स्थिर करती हैं। यदि आप इनकी साधना करना चाहते हैं, तो शुरुआत स्वाधिष्ठान चक्र के ध्यान और ॠवंॠ बीज मंत्र के मानसिक जप से करनी चाहिए।

स्वाधिष्ठान चक्र (जिसकी अधिष्ठात्री देवी राकिनी हैं) को संतुलित करने की यह एक सुरक्षित और प्रारंभिक ध्यान विधि है। यह साधना आपके भावनात्मक संतुलन, रचनात्मकता और मानसिक शांति के लिए अत्यंत लाभकारी है।

स्वाधिष्ठान चक्र ध्यान विधि (Swadhisthana Chakra Meditation)

तैयारी (Preparation):

* स्थानः एक शांत स्थान चुनें जहाँ आपको कोई परेशान न करे।

* आसनः सुखासन (पालथी मारकर), सिद्धासन, या कुर्सी पर रीढ़ की हड्डी सीधी रखकर बैठें।

* मुद्राः अपने हाथों को गोद में रखें, बायां हाथ नीचे और दायां हाथ ऊपर (भैरव मुद्रा), या दोनों हाथों को घुटनों पर ज्ञान मुद्रा में रखें।

ध्यान की प्रक्रिया (Step-by-Step Process):

* शारीरिक शिथिलताः अपनी आँखें बंद करें और शरीर को बिल्कुल ढीला छोड़ दें। 3-4 गहरी साँसें लें और बाहर छोड़ें।

* स्थान का चयनः अपना ध्यान नाभि से लगभग 2 इंच नीचे (जननांगों और नाभि के बीच) ले जाएं। यह स्वाधिष्ठान चक्र का स्थान है।

रंग और तत्व की कल्पना (Visualization): कल्पना करें कि उस स्थान पर एक नारंगी रंग (Orange Color) का 6 पंखुड़ियों वाला कमल खिल रहा है। यह सिंदूरी नारंगी रंग जैसा चमकीला है।

* चूंकि इसका तत्व जल है, कल्पना करें कि वहाँ शांत जल या अर्द्ध-चंद्राकार (Crescent Moon) आकृति है जो शीतलता प्रदान कर रही है।

- बीज मंत्र का जापः

- गहरी साँस लें।

- साँस छोड़ते समय मन ही मन या धीमी आवाज में इस चक्र के बीज मंत्र ॠवंॠ (Vam) का उच्चारण करें। (उच्चारणः वन्ग... जिसमें 'ग' की ध्वनि नाक से गूंजनी चाहिए)।

- महसूस करें कि ॠवंॠ की ध्वनि उस नारंगी कमल में कंपन (Vibration) पैदा कर रही है और उसे शुद्ध कर रही है।

समय सीमाः शुरुआत में इसे 5 से 10 मिनट तक करें। इसे सुबह सूर्योदय से पहले या रात को सोने से पहले करना सबसे अच्छा होता है।

सावधानियां और सुझावः

-जबरदस्ती न करेंः अगर ध्यान के दौरान कोई दबी हुई भावना (जैसे रोना, गुस्सा या पुराना दुख) बाहर आए, तो उसे रोकें नहीं, उसे बह जाने दें। यह शुद्धि की प्रक्रिया है।

-निरंतरताः अच्छे परिणामों के लिए इसे कम से कम 21 या 41 दिनों तक लगातार करें।

-आहारः इस साधना के दौरान बहुत अधिक तीखा या गर्म भोजन (High spice/heat) कम करें और पानी अधिक पिएं।

स्वाधिष्ठान चक्र और देवी राकिनी को प्रसन्न करने के लिए बीज मंत्र ॠवंॠ (Vam) का सही उच्चारण और इसकी विशेष तकनीक यहाँ दी गई है। चूंकि आप साधना के मार्ग में रुचि रखते हैं, इसलिए आपको इसके सूक्ष्म (Subtle) पहलुओं को समझना आवश्यक है।

1. 'वं' (Vam) का सही तांत्रिक उच्चारण

आम बोलचाल में लोग इसे ॠवमॠ पढ़ देते हैं, लेकिन तंत्र में 'अनुस्वार' (बिंदी) का उच्चारण बहुत महत्वपूर्ण होता है।

ठ्ठ ध्वनिः इसका उच्चारण ॠवम्ॠ और वङ् (Vang) के बीच का होता है।

कैसे बोलें:

- पहले ॠवॠ (Va) बोलें।

- फिर होंठों को पूरी तरह बंद किए बिना, जीभ को तालू (Palate) से स्पर्श कराए बिना, नाक से ॠंॠ (mmm/ng) की गुंजन (Humming) निकालें।

- यह ध्वनि मधुमक्खी की भिनभिनाहट जैसी ॠवन्न्न्ङ्.....ॠ होनी चाहिए।

ठ्ठ कम्पन का स्थानः इस उच्चारण को करते समय आपको अपना पूरा ध्यान नाभि से नीचे (स्वाधिष्ठान चक्र पर) रखना है। आपको महसूस होना चाहिए कि वह ध्वनि उस अंग में कंपन (Vibration) पैदा कर रही है। यदि कंपन गले या सिर में हो रहा है, तो उच्चारण सही नहीं है; उसे नीचे उतारें।

2. जाप की विशेष तकनीक (अजपा-जप विधि) राकिनी शक्ति को जागृत करने के लिए केवल मुंह से बोलना काफी नहीं है, इसे प्राणों के साथ जोड़ना पड़ता है:

- श्वास लेते समय (Inhale): जब आप सांस अंदर लें, तो मन में ॠसोॠ (So) की ध्वनि सुनें और कल्पना करें कि ऊर्जा मूलाधार से उठकर स्वाधिष्ठान तक आ रही है।

- श्वास रोकें (Hold - कुम्भक): 1-2 सेकंड रुकें और ध्यान स्वाधिष्ठान पर टिकाएं।

- श्वास छोड़ते समय (Exhale): सांस छोड़ते हुए 'वं' (Vam) का लंबा उच्चारण करें। कल्पना करें कि श्वास के साथ यह बीज मंत्र उस नारंगी कमल को खिला रहा है।

3. स्वाधिष्ठान हस्त मुद्रा (Hand Mudra) मंत्र जाप के समय इस विशेष मुद्रा को लगाने से ऊर्जा का प्रवाह सीधा स्वाधिष्ठान चक्र की ओर मुड़ जाता है:

ठ्ठ विधिः अपनी गोद में दोनों हथेलियों को एक-दूसरे के ऊपर रखें (बायां हाथ नीचे, दायां ऊपर)। दोनों हाथों के अंगूठों के पोरों (Tips) को आपस में स्पर्श कराएं।

- यह मुद्रा जल तत्व को संतुलित करती है।

4. राकिनी देवी का विशेष भोग (सात्विक) साधना काल में यदि आप देवी को भोग अर्पित करना चाहें तो स्वाधिष्ठान चक्र ॠस्वादॠ (Taste) से जुड़ा है।

- प्रिय वस्तुः दूध से बनी चीजें (विशेषकर खीर) या शहद (Honey)।

- भावः मिठास और शीतलता।

स्वाधिष्ठान चक्र (राकिनी शक्ति) के यंत्र निर्माण और उस पर त्राटक की गुप्त विधि यहाँ दी गई है। तंत्र में यंत्र को 'देवता का शरीर' माना जाता है, इसलिए इसका निर्माण अत्यंत पवित्रता से होना चाहिए।

1. स्वाधिष्ठान (राकिनी) यंत्र का स्वरूप इस यंत्र की ज्यामितीय संरचना (Geometry) जल तत्व का प्रतिनिधित्व करती है।

* मुख्य आकृतिः एक लेटा हुआ अर्द्ध-चंद्रमा (Crescent Moon)। यह खड़े चाँद जैसा नहीं, बल्कि एक 'नाव' (Boat) या कटोरे जैसा होता है, जिसका खुला भाग ऊपर की ओर हो।

ठ्ठ कमलः इसके चारों ओर 6 पंखुड़ियों वाला कमल (Six-petaled Lotus) होता है।

-रंगः

- पंखुड़ियों का रंगः सिंदूरी या नारंगी (Vermilion/Orange)।

- चंद्रमा का रंगः सफेद या चाँदी (Silver/White) जैसा चमकता हुआ।

- बीज मंत्रः चंद्रमा के ठीक बीच में ॠवंॠ लिखा जाता है।

2. यंत्र निर्माण विधि (प्रयोग हेतु) यदि आप साधना के लिए इसे स्वयं बनाना चाहते हैं, तो यह विधि सर्वश्रेष्ठ है:

ठ्ठ सामग्रीः भोजपत्र (सर्वोत्तम) या एक साफ सफेद कागज।

स्याहीः

सात्विक साधना के लिएः सफेद चंदन या केसर का घोल।

तीव्र साधना के लिएः अष्टगंध या रक्त चंदन।

कलमः चमेली या अनार की लकड़ी की कलम।

समयः सोमवार की रात या पूर्णिमा की रात्रि।

विधिः पूर्व दिशा की ओर मुख करके बैठें। भोजपत्र पर पहले 6 पंखुड़ियों वाला कमल बनाएं, फिर उसके बीच में अर्द्ध-चंद्रमा और अंत में ॠवंॠ लिखें। इसे बनाते समय लगातार ॠवंॠ मंत्र का मानसिक जाप करते रहें।

3. यंत्र त्राटक विधि (Gazing Technique) यंत्र को सिद्ध करने और राकिनी की कृपा प्राप्त करने के लिए त्राटक बहुत शक्तिशाली है। यह मन की चंचलता (Fluctuation of mind) को तुरंत रोक देता है।

तैयारीः यंत्र को अपनी आंखों के ठीक सामने (Eye Level) लगभग 2-3 फीट की दूरी पर स्थापित करें। रोशनी इतनी हो कि यंत्र साफ दिखे, लेकिन आंखों पर जोर न पड़े (दीपक की रोशनी सबसे अच्छी है)।

चरण (Steps):

- स्थिर दृष्टिः अपनी पीठ सीधी रखें और यंत्र के केंद्र में लिखे 'वं' अक्षर या अर्द्ध-चंद्रमा पर अपनी नज़र टिकाएं।

- पलक न झपकाएंः जितनी देर संभव हो (बिना कष्ट के), पलक झपकाए बिना उसे देखते रहें। शुरू में 1-2 मिनट काफी हैं।

- भावः यह महसूस करें कि यंत्र से सफेद रंग की ठंडी ऊर्जा निकलकर आपकी आंखों के रास्ते आपके स्वाधिष्ठान चक्र (पेडू/नाभि के नीचे) में भर रही है।

- आंतरिक त्राटकः जब आंखें थक जाएं या पानी आने लगे, तो आंखें बंद कर लें। अब उसी यंत्र की छवि को अपनी दोनों भौहों के बीच (आज्ञा चक्र) या स्वाधिष्ठान चक्र पर मानसिक रूप से देखने का प्रयास करें।

लाभः

ठ्ठ यह त्राटक कामुकता (Lust) को ओजस (Ojas/Spiritual Energy) में बदल देता है।

– साधक की वाणी में सम्मोहन आता है।

- स्वप्न दोष या जल जनित रोगों में लाभ मिलता है।

सावधानीः यदि त्राटक करते समय सिर में भारीपन लगे, तो अभ्यास रोक दें और ठंडे पानी से आंखें धो लें।

चेतावनीः

1. तंत्र साधना गुरु के सानिध्य में ही करनी चाहिए। यह जानकारी केवल ज्ञानवर्धन हेतु है।

2. राकिनी की साधना मुख्य रूप से कुंडलिनी जागरण का हिस्सा है, लेकिन कुछ अघोर पंथों में इसे स्वतंत्र देवी के रूप में भी सिद्ध किया जाता है।

प्रशासन के बीच संवाद का सशक्त माध्यम है समाधान शिविर : एडीसी

जिला स्तरीय समाधान शिविर में एडीसी जगनिवास ने सुनी जनता की समस्याएं, संबंधित विभागों को दिए निर्देश

परिवहन विशेष न्यूज

झज्जर, 16 फरवरी। जिला प्रशासन द्वारा नागरिकों की समस्याओं का त्वरित समाधान सुनिश्चित करने के उद्देश्य से डीसी स्वप्निल रविन्द्र पाटिल के मार्गदर्शन में समाधान शिविरों का आयोजन जारी है। इसी कड़ी में सोमवार को लघु सचिवालय में समाधान शिविर का आयोजन किया गया। अतिरिक्त उपायुक्त जगनिवास ने शिविर में नागरिकों की शिकायतें सुनीं और संबंधित अधिकारियों को आवश्यक दिशा-निर्देश दिए। जिला स्तरीय समाधान शिविर में लगभग आधा दर्जन से ज्यादा शिकायतें दर्ज की गई, जिनमें भूमि संबंधी विवाद, पेंशन, पारिवारिक पहचान पत्र आईडी, अतिक्रमण, पानी व बिजली से जुड़ी समस्याएं प्रमुख रहीं। एडीसी ने संबंधित विभागों के अधिकारियों को निर्देश दिए कि शिकायतों का समाधान प्राथमिकता के आधार पर किया जाए और हर स्तर पर पारदर्शिता व संवेदनशीलता बरती जाए। उन्होंने कहा कि समाधान शिविर आमजन और प्रशासन के बीच संवाद का एक सशक्त माध्यम है। ऐसे शिविरों से न केवल लोगों को एक स्थान पर प्रशासनिक सेवा मिलती है, बल्कि शिकायतों का समाधान भी तत्परता से हो पाता है। इससे जनता का प्रशासन पर विश्वास बढ़ता है और सुशासन को मजबूती मिलती है। इस अवसर पर एसडीएम अंकित कुमार चौकसे आईएएस, डीडीपीओ निशा तंवर, एसीपी अखिल कुमार, जिला कष्ट निवारण समिति के सदस्य गौरव सैनी सहित सम्बंधित विभागों के अधिकारी उपस्थित रहे।

उपमंडल स्तर पर बहादुरगढ़ में एसडीएम अभिनव सिवाच आईएएस, बेरी में एसडीएम रेणुका नांदल तथा बादली में एसडीएम डॉ रमन गुप्ता की अध्यक्षता में उपमंडल स्तरीय समाधान शिविर का आयोजन किया गया, जिनमें लोगों की समस्याएं सुनते हुए राहत पहुंचाई गई।

प्रतिभा मंथन से निखर रही छात्रों की प्रतिभा, शिक्षा स्तर सुधार पर एडीसी ने दिए निर्देश

परिवहन विशेष न्यूज

झज्जर, 16 फरवरी। लघु सचिवालय के सभागार में सोमवार को शिक्षा विभाग हरियाणा की समीक्षा बैठक अतिरिक्त उपायुक्त जगनिवास की अध्यक्षता में आयोजित की गई। बैठक का मुख्य फोकस प्रतिभा मंथन कार्यक्रम और जिले के शैक्षणिक स्तर को और बेहतर बनाने के उपायों पर रहा।

जिला शिक्षा अधिकारी रतिंदर सिंह ने एडीसी का स्वागत करते हुए विभाग द्वारा संचालित योजनाओं और कार्यक्रमों की विस्तृत जानकारी दी।

बैठक के दौरान एडीसी जगनिवास ने कहा कि प्रतिभा मंथन कार्यक्रम छात्रों की अंतर्निहित प्रतिभाओं को पहचानने और निखारने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। इस कार्यक्रम के सकारात्मक परिणाम सामने आए हैं, जिससे छात्रों में आत्मविश्वास और प्रतिस्पर्धात्मक क्षमता बढ़ी है।

एडीसी ने अधिकारियों को निर्देश दिए कि शिक्षा की गुणवत्ता में निरंतर सुधार के लिए शीघ्र सुधारात्मक कदम उठाए जाएं, ताकि जिले का शैक्षणिक स्तर और ऊंचा किया जा सके। उन्होंने कहा कि प्रतिभा मंथन जैसे कार्यक्रमों के प्रभावी क्रियान्वयन से जिले के विद्यार्थियों को नई दिशा मिलेगी और शिक्षा के क्षेत्र में उल्लेखनीय सुधार होगा।

बैठक में जिला निपुण समन्वयक डॉ. सुदर्शन पुनिया ने स्कूलों में शैक्षणिक गतिविधियों, शिक्षण संसाधनों के उपयोग और मॉनिटरिंग से प्राप्त निष्कर्षों की विस्तृत प्रस्तुति दी। उन्होंने बताया कि इस मूल्यांकन के आधार पर स्कूलों को उनके समग्र प्रदर्शन के अनुसार ए, बी और सी श्रेणियों में वर्गीकृत किया गया है, जिससे सुधार की दिशा स्पष्ट होती है।

इस अवसर पर सुरभि एवं श्वेता ने प्रतिभा मंथन कार्यक्रम की अब तक की प्रगति, उपलब्धियों और भविष्य की कार्ययोजना पर प्रकाश डाला।

बैठक में जिला परियोजना समन्वयक अनिल शर्मा, खंड शिक्षा अधिकारी शेर सिंह, रोहताश दहिया, सुनीता मल्हान, सुरेश पाल सुहाग तथा जयपाल दहिया सहित अन्य अधिकारी उपस्थित रहे।

कृषि विशेषज्ञों के बताए अनुसार खेती करें किसान पोषक अनाज से पोषण सुरक्षा की ओर कदम

परिवहन विशेष न्यूज

कोयलपुर में जिला स्तरीय कृषि मेला एवं किसान सम्मेलन आयोजित

झज्जर, 16 फरवरी। खंड मातनहेल के गांव कोयलपुर स्थित बाबा शादी राम मंदिर में सोमवार को जिला कृषि एवं किसान कल्याण विभाग द्वारा खाद्य एवं पोषण सुरक्षा, पोषक अनाज विषय पर जिला स्तरीय कृषि मेला एवं किसान सम्मेलन का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का उद्देश्य किसानों को पोषक अनाज (मिलेट्स) की खेती, पोषण लाभ और सरकारी योजनाओं से जोड़ना रहा।

मुख्यमंत्री सुशासन सहयोगी ने किया मेले का शुभारंभ

मेले का शुभारंभ मुख्यमंत्री सुशासन सहयोगी (सीएमजीजीए) खुशी कौशल ने किया। इस अवसर पर उन्होंने विभिन्न विभागों द्वारा लगाए गए स्टॉलों का अवलोकन किया और किसानों से सीधा संवाद कर उनकी समस्याएं सुनीं।

विभागीय योजनाओं की जानकारी साझा

डीडीए डॉ. जितेंद्र अहलावत ने सीएमजीजीए खुशी कौशल का स्वागत करते हुए कृषि एवं संबद्ध विभागों की योजनाओं की विस्तार से जानकारी दी।

पोषक अनाज स्वास्थ्य और आय दोनों का आधार

सीएमजीजीए खुशी कौशल ने अपने संबोधन में कहा कि पोषक अनाज न केवल स्वास्थ्य के लिए लाभकारी हैं, बल्कि कम पानी में बेहतर उत्पादन देने के कारण किसानों के लिए आर्थिक रूप से भी फायदेमंद हैं। सरकार का लक्ष्य पोषण सुरक्षा को मजबूत करने के साथ-साथ किसानों की आय में वृद्धि करना है। उन्होंने किसानों से बाजरा, ज्वार, रागी जैसे पोषक अनाजों को अपनाने और मूल्य संवर्धन पर ध्यान देने का आह्वान किया।

उन्होंने कहा कि उन्नत बीज, मृदा स्वास्थ्य कार्ड, फसल बीमा, ड्रिप-स्प्रिंकलर जैसी सिंचाई तकनीकें और प्राकृतिक खेती को अपनाकर किसान अपनी आय बढ़ा सकते हैं।

किसान मेले में एग्री स्टैक विषय पर डा सुमित यादव, मृदा स्वास्थ्य कार्ड पर डा यगदीप यादव, प्राकृतिक खेती विषय पर बीएओ डॉ अशोक रोहिल्ला, सांख्यिकी सहायक सतीश कुमार ने प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना बारे विस्तृत से जानकारी दी। तकनीकी सहायक डॉ रोहित वत्स ने कृषि विभाग की स्कीमों पर प्रकाश डाला और किसान हित सर्वोपरि पर विशेष ध्यान दिया। कृषि विशेषज्ञों और अधिकारियों ने फसल विविधीकरण, उन्नत कृषि यंत्रों, कीट-रोग प्रबंधन और बाजार से जुड़ाव पर तकनीकी सत्रों के माध्यम से मार्गदर्शन दिया। मेले में बड़ी संख्या में किसानों ने भाग लिया और योजनाओं का लाभ उठाने की जानकारी प्राप्त की।

कार्यक्रम में अधिकारियों ने किसानों की समस्या सुनते हुए का समाधान किया और पोषक अनाज को बढ़ावा देने के लिए निरंतर प्रशिक्षण के लिए जागरूक किया। इस अवसर पर कृषि एवं किसान कल्याण विभाग के अधिकारी उपस्थित थे।

जिला कारागार में बंदियों के लिए स्वास्थ्य जांच शिविर 18 फरवरी को

परिवहन विशेष न्यूज

झज्जर, 16 फरवरी। जिला विधिक सेवाएं प्राधिकरण के सचिव एवं मुख्य न्यायिक दंडाधिकारी विशाल ने बताया कि जिला विधिक सेवा प्राधिकरण, झज्जर द्वारा जिला कारागार परिसर में बंदियों के स्वास्थ्य संरक्षण एवं बेहतर चिकित्सा सुविधाएं सुनिश्चित करने के उद्देश्य से 18 फरवरी 2026 को स्वास्थ्य जांच शिविर का आयोजन किया जाएगा।

यह शिविर जिला विधिक सेवा प्राधिकरण के तत्वावधान में आयोजित होगा, जिसमें जेल में बंदियों का स्वास्थ्य परीक्षण किया जाएगा। शिविर के दौरान चिकित्सकों की टीम द्वारा सामान्य स्वास्थ्य जांच के साथ आवश्यक परामर्श एवं उपचार संबंधी मार्गदर्शन भी प्रदान किया जाएगा, ताकि बंदियों के स्वास्थ्य की नियमित निगरानी सुनिश्चित हो सके।

खेल नर्सरी आवंटन के लिए आवेदन की अंतिम तिथि 22 फरवरी तक बढ़ी

झज्जर, 16 फरवरी। जिला खेल अधिकारी झज्जर सत्येन्द्र कुमार ने बताया कि खेल विभाग, हरियाणा द्वारा सत्र 2026-27 में खेल नर्सरी आवंटन के लिए सरकारी स्कूलों, ग्राम पंचायतों एवं निजी शिक्षण संस्थानों से ऑनलाइन आवेदन आमंत्रित किए गए हैं। उन्होंने जानकारी देते हुए बताया कि आवेदन करने की अंतिम तिथि 15 फरवरी से बढ़ाकर अब 22 फरवरी कर दी गई है। इच्छुक संस्थान विभाग की वेबसाइट http://www.haryanasports.gov.in पर निर्धारित प्रक्रिया के अनुसार ऑनलाइन आवेदन कर सकते हैं। जिला खेल अधिकारी ने बताया कि खेल नर्सरियां केवल ओलंपिक, एशियन तथा कॉमनवेल्थ खेलों में शामिल खेल विधाओं के लिए ही खोली जाएंगी। उन्होंने संबंधित संस्थानों से अपील की कि वे निर्धारित समय में आवेदन प्रक्रिया पूर्ण करना सुनिश्चित करें, ताकि अधिक से अधिक प्रतिभाओं को खेल के क्षेत्र में आगे बढने का अवसर मिल सके।

मां सीता रसोई के पदाधिकारियों ने की बागेश्वर धाम में आयोजित निःशुल्क सामूहिक 300 कन्या विवाह महोत्सव में सहभागिता

(डॉ. गोपाल चतुर्वेदी)

वृन्दावन। मां सीता रसोई एवं संकट मोचन सेना (महिला प्रकोष्ठ) पंजाब प्रांत के पदाधिकारियों ने बागेश्वर धाम में आयोजित निःशुल्क सामूहिक 300 कन्या विवाह महोत्सव में सहभागिता की ।साथ ही बागेश्वर धाम पीठाधीश्वर पण्डित धीरेन्द्र कृष्ण शास्त्री को इस वृहद आयोजन के लिए बधाई दीं ।ज्ञात हो कि बागेश्वर धाम सरकार के नेतृत्व में समय-समय पर निर्धन-निराश्रित व असहाय कन्याओं के विवाह का कार्यक्रम बड़े ही हर्षोल्लास एवं धूमधाम से किया जाता है ।जिसके चलते 7वीं बार यह आयोजन सम्पन्न हुआ ।जिसमें 300 कन्याओं का विवाह संस्कार वैदिक मंत्रोच्चार के मध्य सम्पन्न हुआ ।जिसमें पण्डित धीरेन्द्र कृष्ण शास्त्री के द्वारा सभी कन्याओं को दैनिक उपयोग का सामान भी निःशुल्क प्रदान किया गया।

इस अवसर पर बागेश्वर धाम पीठाधीश्वर पण्डित धीरेन्द्र कृष्ण शास्त्री ने मां सीता रसोई की संस्थापक, संकट मोचन सेना (महिला प्रकोष्ठ) पंजाब प्रांत की अध्यक्ष ₹पंजाब रत्न₹ श्रीमती मनप्रीत कौर, मां सीता रसोई के प्रबन्धक आचार्य अशुंल शर्मा, मथुरा-वृन्दावन नगर निगम के पार्षद सुमित गौतम एवं श्रीमती भारती शर्मा आदि को प्रशस्ति पत्र, स्मृति चिन्ह, अंगवस्त्र एवं पटुका, प्रसादी माला आदि भेंट करके सम्मानित किया।

कार्यक्रम में मुख्य रूप से तुलसी पीठाधीश्वर जगद्गुरु स्वामी रामभद्राचार्य महाराज, अयोध्या स्थित हनुमान गढ़ी के महंत राजू दास महाराज, पद्मविभूषण ₹दीदी मां₹ साध्वी ऋंभरा, ऋषिकेश स्थित परमार्थ निकेतन के अध्यक्ष स्वामी चिदानंद सरस्वती महाराज (स्वामी मुनि जी), चित्रकूट स्थित तुलसी पीठ के उत्तराधिकारी आचार्य रामचंद्र दास महाराज (जय भैया), प्रख्यात भागवताचार्य सुमंत कृष्ण शास्त्री, बागेश्वर धाम सरकार के परम्लाडले आचार्य रोहित रिछारिया आदि की उपस्थिति विशेष रही।

डॉ. श्रॉफ आई केयर इंस्टीट्यूट में उमंग केयर फाउंडेशन के द्वारा द्विदिवसीय निःशुल्क नेत्र चिकित्सा शिविर प्रारंभ

(डॉ. गोपाल चतुर्वेदी)

वृन्दावन। मथुरा रोड़ स्थित बी.एच.आर.सी. डॉ. श्रॉफ आई केयर इंस्टीट्यूट में उमंग केयर फाउंडेशन के द्वारा द्विदिवसीय निःशुल्क नेत्र चिकित्सा शिविर बड़े ही हर्षोल्लास के साथ प्रारम्भ हो गया है ।शिविर के प्रथम दिन वरिष्ठ नेत्र सर्जन डॉ. करन प्रीत, डॉ. अनीजा, डॉ. निधि राघव एवं डॉ. हर्षित अग्रवाल आदि की टीम ने नेत्र रोगियों का कुशलता पूर्वक परीक्षण करके मोतियाबिंद की सफल सर्जरी की ।साथ ही उन्हें निःशुल्क आई ड्रॉप व चश्मे आदि वितरित किए।

उमंग केयर फाउंडेशन के संस्थापक व प्रमुख समाजसेवी अनिल चतुर्वेदी एवं श्रीमती किरण चतुर्वेदी ने कहा कि आंखों के बिना संसार की परिकल्पना नहीं की जा सकती है। जीव के पास हाथ-पैर, कान-नाक और मुंह सब है, फिर भी बिना आंखों के वह अपना भरण-पोषण करने में असमर्थ रहता है। नेत्र ज्योति ईश्वर का दिया वरदान है ।इसका महत्व वही जानते हैं, जिनके पास यह नहीं होती या असावधानी के कारण इसे खो देते हैं ।इसीलिए हमारी संस्था पिछले तीन वर्षों से निःशुल्क नेत्र चिकित्सा शिविर आयोजित करती है ।जिससे जरूरतमंदों को नेत्र ज्योति प्रदान की जा सके।

उमंग केयर फाउंडेशन के महासचिव आयुष चतुर्वेदी एवं श्रीमती अदिति चतुर्वेदी ने कार्यक्रम को सफल बनाने हेतु हॉस्पिटल के समस्त डॉक्टर्स एवं स्टाफ की प्रशंसा की ।साथ ही भविष्य में भी इस प्रकार के आयोजन कराने का आश्वासन दिया।

प्रख्यात साहित्यकार यूपी रत्न₹ डॉ. गोपाल चतुर्वेदी ने कहा कि डॉ. श्रॉफ आईं केयर इंस्टीट्यूट नेत्र चिकित्सा के क्षेत्र में अत्यंत प्रतिष्ठित व जाना माना नाम है। इसके द्वारा समूचे देश के कई नगरों में जो निस्वार्थ सेवा कार्य किए जा रहे हैं, वे अति प्रशंसनीय हैं ।इस चिकित्सालय ने वृन्दावन में साधु-संतों, निर्धनों व निराश्रितों आदि की जो सेवा की जा रही है, उसकी जितनी भी प्रशंसा की जाए कम है। इस अवसर पर डॉ. श्रॉफ आई केयर इंस्टीट्यूट के वरिष्ठ प्रशासक सी.पी. मैसी, डॉ. आर.के. चतुर्वेदी, मुकेश कुमार (एच.आर. डिपार्टमेंट), डॉ. राधाकांत शर्मा, सौरभ शर्मा, मनोज चौधरी, मदन शर्मा आदि की उपस्थिति विशेष रही।

पांच पदों के प्रत्याशियों ने चुनाव अधिकारी को दाखिल किए नामांकन पत्र

17 फरवरी को सांय 4 बजे जारी होगी प्रत्याशियों की फाइनल लिस्ट

हरियाणा/हिसार (नरेश गुणपाल) बरवाला बार एसोसिएशन के चुनाव हेतु सभी पांच पदों के नामांकन पत्र लिए गए है। बरवाला बार एसोसिएशन के 25 फरवरी को चुनाव होने निश्चित हुए हैं। इसी प्रक्रिया में आज चुनाव अधिकारी अधिवक्ता विपिन कथूरिया व सहचुनाव अधिकारी कुलबीर बूरा द्वारा सभी पांच पदों के लिए नामांकन पत्र मांगे गए।

प्रधान पद के लिए अधिवक्ता राजेश श्योकंद व अधिवक्ता संदीप कुमार राड ने नामांकन दाखिल किया। उपप्रधान पद के लिए अधिवक्ता पूजा ढाका व अधिवक्ता बिनु रानी जांगड़ा ने नामांकन दाखिल किया। सचिव पद के लिए अधिवक्ता कुलदीप सिंह पंवार व अधिवक्ता कर्मबीर कुण्डू ने नामांकन दाखिल किया। सहसचिव पद के लिए अधिवक्ता रमन वर्मा व अधिवक्ता दिनेश कुमार पूनिया ने नामांकन दाखिल किया। कोषाध्यक्ष पद के लिए अधिवक्ता लव शर्मा व अधिवक्ता दीपक मशीह ने नामांकन दाखिल किया।

चुनाव की नामांकन प्रक्रिया बहुत ही शांतिपूर्ण व सौहार्दपूर्ण रही। सभी प्रत्याशियों ने बड़े सरल स्वभाव से और खुशी-खुशी अपना नामांकन दाखिल किया व सभी ने आपस में सभी का मुंह मीठा करवाया। सभी प्रत्याशियों ने चुनाव अधिकारी को यह आश्वासन दिया कि चुनाव बिल्कुल शांतिपूर्ण होगा व भाईचारे की एक मिसाल होगा। 17 फरवरी को नामांकनों की छंटनी होगी। उसके बाद जिस भी प्रत्याशी ने अपना नाम वापस लेना है तो वह अपना नाम वापस ले सकता है। 17 फरवरी को सांय 4 बजे प्रत्याशियों की फाइनल लिस्ट घोषित की जाएगी जो कि आने वाली 25 फरवरी 2026 को चुनाव लड़ने का पात्र होगा।

बेटे और पत्नी को गोली से उढ़ा रिटायर्ड फौजी ने की आत्महत्या : जांच में जुटी पुलिस

परिवहन विशेष न्यूज, कानपुर। सोमवार को सेन पश्चिम पारा में बेटे और पत्नी की गोली मारकर हत्या करने के बाद रिटायर्ड फौजी ने रेलवे ट्रैक पर जाकर आत्महत्या कर ली। जहां घटना से इलाके में सनसनी है। वहीं पुलिस हत्या के कारणों का पता लगा रही है। सेन पश्चिमपारा थाना क्षेत्र में हुई इस घटना के बारे में पुलिस को जानकारी तब मिली जब आज सोमवार की सुबह 7:30 बजे ग्राम कठोगर इमलीपुर रेलवे अंडर पास के करीब डीएफसीसी रेलवे ट्रैक पर अज्ञात व्यक्ति द्वारा मालगाड़ी के सामने आकर आत्महत्या करने की सूचना मिली। पुलिस को मृतक के पास मिले आधार कार्ड और मोटर साइकिल नंबर के आधार पर चेत राम पुत्र अयोध्या प्रसाद निवासी आराजी 331 तुलसीयापुर उम्र करीब 51 वर्ष के रूप में पहचान की। पुलिस के अनुसार इसके बाद जब वह मृतक के घर सूचना देने पहुंची तब घर पर एक महिला उम्र करीब 40 वर्ष और एक किशोर का शव उम्र करीब 16 वर्ष पड़ा मिला। इस दौरान जब पुलिस ने आसपास जानकारी करने पर महिला का नाम सुनीता वर्मा एवं बालक का नाम दीप की जानकारी हुई। पुलिस के मुताबिक मृतक मूल रूप से ग्राम बरखेरिया घाटमपुर का रहने वाला बताया गया। पास में दो नाली बन्दूक पड़ी मिली। पुलिस के मुताबिक प्रथम दृष्टया पति चेतराम के द्वारा पत्नी व बच्चे की हत्या कर स्वयं रेलवे ट्रैक पर जाकर आत्महत्या करना पाया गया है ,जिसकी संभावित वजह अवैध संबंध और आर्थिक तंगी से संबंधित पारिवारिक कलह भी हो सकती है। फिलहाल घटना की सही वजह जानने के लिए जांच में लगातार जारी है।

INFORMATION / सूचना

I, Priyanka D/O.. Mrinal Kanti kundu R/O..B-2/22, sewak park Uttam Nagar New Delhi 110059 have changed my name to Priyanka kundu for all future purposes, Priyanka and Priyanka Kundu are the same person and all legal documents like Aadhar card, Election Card, School Certificate, PAN Card and Bank Account are relate as same.

भारत में एआई का वैश्विक महाकुंभ- इंडिया एआई इम्पैक्ट समिट 16-20 फरवरी 2026- एक नए तकनीकी युग की दिशा

इंडिया एआई इम्पैक्ट समिट 2026 में भारत क़ा न केवल तकनीकी क्षमता का प्रदर्शन होगा, बल्कि वैश्विक एआई विमर्श को नई दिशा देने का साहस भी दिखेगा -**एडवोकेट किशन सनमुखदास भावनानीं गंदिया महाराष्ट्र**

गोंदिया - वैश्विक स्तरपर 16 से 20 फरवरी 2026 तक आयोजित इंडिया एआई इम्पैक्ट समिट 2026 ने भारत को वैश्विक आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस परिदृश्य के केंद्र में स्थापित कर दिया है। नई दिल्ली में आयोजित यह पाँच दिवसीय महाकुंभ केवल एक तकनीकी सम्मेलन नहीं, बल्कि भविष्य की विश्व व्यवस्था को आकार देने वाला मंच बनकर उभरा है। इस समिट के साथ आयोजित एआई एक्सपो में लगभग 65 देशों की भागीदारी, 600 से अधिक स्टार्टअप्स की उपस्थिति 13 देशों केपवेलियन 2.5 लाख से अधिक संभावित आगंतुक, 500 से अधिक सत्र और 3250 से अधिक वक्ता एवं पैनल सदस्य शामिल हो रहे हैं, जो वैश्विक स्तरपर रेखांकित करने वाली बात है। मैं एडवोकेट किशन सनमुखदास भावनानीं गोंदिया महाराष्ट्र यह मानता हूं क़ियह आयोजन भारत के तकनीकी आत्मविश्वास, कूटनीतिक परिपक्वता और नवाचार-नेतृत्व की स्पष्ट अभिव्यक्ति है ।पिछले कुछ वर्षों में वैश्विक स्तरपर एआई को लेकर दो प्रमुख विमर्श सामने आ सकते हैं,एक ओर विनाशकारी जोखिम, नियामक ढांचा और नैतिकता; तो दूसरी ओर नवाचार, समावेशन और विकास। भारत इस समिट के माध्यम से इन दोनों ध्रुवों के बीच संतुलन स्थापित करने की कोशिश कर रहा है ।जहाँ पूर्ववर्ती वैश्विक चर्चाएँअधिकतर जोखिमों और नियंत्रण पर केंद्रित थीं, वहीं नई दिल्ली इस बहस को जिम्मेदार,समावेशी और विकासोन्मुख एआई की दिशा में मोड़ने का प्रयास कर रही है। यह बदलाव केवल शब्दों का नहीं, बल्कि दृष्टिकोण का है एआई को भय का नहीं, बल्कि अवसर का माध्यम मानने का दृष्टिकोण।

साथियों बात कर हम इस महत्वपूर्ण समिट को समझने की करें तो समिट का उद्घाटन 16 फरवरी को भारत के प्रधानमंत्री द्वारा शाम 5 बजे एआई एक्सपो के उद्घाटन के साथ हुआ। उद्घाटन समारोह में उन्होंने एआई को मानवता के लिए परिवर्तनकारी शक्ति बताते हुए कहा कि भारत का लक्ष्य केवल तकनीकी उपभोक्ता बनना नहीं, बल्कि वैश्विक एआई आर्किटेक्चर के निर्माण में सक्रिय भागीदार बनना है। उनके संबोधन में यह स्पष्ट संदेश था कि भारत एआई को लोकतांत्रिक मूल्यों, सामाजिक न्याय और सतत विकास के साथ जोड़कर आगे बढ़ाना चाहता है ।एआई एक्सपो इस समिट का जीवंत और व्यावहारिक आयाम है। यहाँ विश्व की प्रमुख प्रौद्योगिकी कंपनियाँ,उभरते स्टार्टअप्स, विश्वविद्यालय,अनुसंधान संस्थान, केंद्रीय मंत्रालय, राज्य सरकारें और अंतरराष्ट्रीय साझेदार एक ही मंच पर उपस्थित हैं ।13 देशों के पवेलियन ऑस्ट्रेलिया, जापान, रूस, यूनाइटेड किंगडम, फ्रांस, जर्मनी, इटली, नीदरलैंड्स, स्विट्ज़रलैंड, सर्बिया, एस्टोनिया ताजिकिस्तान और अफ्रीका क्षेत्र का प्रतिनिधित्व एआई इकोसिस्टम में वैश्विक सहयोग की भावना को दर्शाते हैं। ये पवेलियन केवल प्रदर्शनी स्थल नहीं, बल्कि तकनीकी साझेदारी,निवेश अवसर और नीति संवाद केएक प्रमुख केंद्र बन गए हैं।

साथियों बात अगर हम इस सबमिट की रूपरेखा को समझने की करें तो, 17 फरवरी को समिट का दूसरा दिन एप्लाइड एआई पर केंद्रित होगा ।स्वास्थ्य, ऊर्जा, शिक्षा, कृषि,महिला सशक्तिकरण और दिव्यांगजन सशक्तिकरण जैसे क्षेत्रों में एआई के उपयोग पर विस्तृत चर्चाएँ होंगी ।स्वास्थ्य क्षेत्र में एआई आधारित डायग्नोस्टिक्स, टेलीमेडिसिन और प्रेडिक्टिव एनालिटिक्स की संभावनाओं पर विचार किया जायेगा ।ऊर्जा क्षेत्र में स्मार्ट ग्रिड और कार्बन उत्सर्जन मॉनिटरिंग पर एआई के उपयोग को रेखांकित किया गया ।शिक्षा में व्यक्तिगत सीखने (पर्सनलाइज्ड लर्निंग) और एआई ट्यूटरिंग सिस्टम्स की संभावनाएँ सामने होंगी । कृषि में प्रिसीजन फार्मिंग, मौसम पूर्वानुमान और सप्लाई चेन ऑप्टिमाइजेशन जैसे उदाहरण प्रस्तुत हो सकते हैं। इस दिन प्रमुख नॉलेज कम्पेंडियम्स और केसबुक्स भी जारी होंगें , जो नीति निर्माताओं और उद्योग जगत के लिए संदर्भ सामग्री के रूप में उपयोगी होंगे ।18 फरवरी को आयोजित रिसर्च सिम्पोज़ियम और इंडस्ट्री सेशन ने अनुसंधान और व्यावहारिक अनुप्रयोग के बीच पुल का कार्य होगा ।शिक्षाविदों, शोधकर्ताओं और थिंक टैंकों ने अत्याधुनिक एआई अनुसंधान, उभरती पद्धतियों और साक्ष्य- आधारित नीति अंतर्दृष्टि प्रस्तुत होंगी ।इस मंच पर एआई मॉडल की पारदर्शिता,एल्गोरिदमिक बायस, डेटा गोपनीयता और साइबर सुरक्षा जैसे मुद्दों पर गहन विमर्श होगा ।यह स्पष्ट होगा कि एआई का भविष्य केवल तकनीकी दक्षता पर निर्भर नहीं, बल्कि नैतिकता और जवाबदेही पर भी आधारित होगा ।19 फरवरी को 20 से अधिक देशों के नेताओं की उपस्थिति ने इस समिट को वैश्विक राजनीतिक महत्व प्रदान किया जायेगा । इस दिन एआई पर सामूहिक प्रतिबद्धताओं, वैश्विक साझेदारी को सुदृढ़ करने और आने वाले एआई दशक में भारत की भूमिका को परिभाषित करने पर चर्चा होंगी । उच्च- स्तरीय सीईओ राउंडटेबल में वैश्विक उद्योग नेताओं, निवेशकों और नीति निर्माताओं ने जिम्मेदार एआई के भविष्य पर विचार-विमर्श जायेगा ।यहाँ यह स्वीकार किया गया कि एआई से रोजगार के स्वरूप में बदलाव आएगा, परंतु साथ ही नई नौकरियों और कौशलों की मांग भी उत्पन्न होगी।

साथियों बात अगर हम रोजगार का प्रश्न इस समिट के माध्यम से समझने की करें तो यह केंद्रीय चिंता होंगी.कई वैश्विक सीईओ और एआई शोधकर्ताओं ने पहले ही चेतावनी दी है कि ऑटोमेशन और जनरेटिव एआई के कारण पारंपरिक नौकरियों पर खतरा मंडरा सकता है। परंतु समिट में यह भी रेखांकित किया जा सकता है कि एआई डेटा साइंस,मशीन लर्निंग इंजीनियरिंग साइबर सुरक्षा, एआई एथिक्स और मानव- एआई सहयोग जैसे क्षेत्रों में नई नौकरियाँ सृजित करेगा। भारत जैसे युवा देश के लिए यह अवसर है कि वह कौशल विकास और शिक्षा प्रणाली में सुधार कर इस परिवर्तन को सकारात्मक दिशा दे।

साथियों बात अगर हम एआई और सुरक्षा का मुद्दा इसको समझने की करें तो यह मुद्दा भी प्रमुखता से उठा सकता है, साइबर हमले,डीपफेक, डेटा दुरुपयोग और राष्ट्रीय सुरक्षा से जुड़े जोखिमों पर विशेषज्ञों ने चिंता व्यक्त की। इस संदर्भ में बहुपक्षीय सहयोग की आवश्यकता पर बल दिया जायेगा ।एआई के सैन्य उपयोग और स्वायत्त हथियार प्रणालियों पर भी विचार होगा,जिसमें जिम्मेदार उपयोग और अंतरराष्ट्रीय मानकों की आवश्यकता को रेखांकित किया जायेगा डेटा सेंटर और पर्यावरणीय प्रभाव का प्रश्न भी चर्चा का महत्वपूर्ण विषय होगा। बड़े-बड़े डेटा सेंटर ऊर्जा की भारी खपत करते हैं और कार्बन उत्सर्जन बढ़ा सकते हैं। समिट में ग्रीन एआई, ऊर्जा-कुशल चिप्स और नवीकरणीय ऊर्जा आधारित डेटा सेंटर की अवधारणा पर विचार किया जा सकता है ।यह स्पष्ट होगा कि तकनीकी प्रगति को पर्यावरणीय स्थिरता के साथ संतुलित करना अनिवार्य है। 20 फरवरी को ग्लोबल पार्टनरशिप ऑन आर्टिफिशल इंटेलीजेंस (जीपीएआई) परिषद की उच्च-स्तरीय बैठक आयोजित होंगी ।सदस्य देशों केप्रतिनिधियों ने एआई पर सहयोग बढ़ाने की प्रगति की समीक्षा की और जिम्मेदार एवं समावेशी एआई के लिए नए बहुपक्षीय विकल्पों पर विचार होगा ।बैठक के अंत में लीडर्स डिक्लेरेशन को अपनाया गया,जिसमें सामूहिक प्रतिबद्धताओं को दोहराते हुए वैश्विक एआई शासन और सहयोग के लिए साझा रोडमैप की रूपरेखा प्रस्तुत की जाएगी ।यह समिट भारत की डिजिटल कूटनीति का भी उदाहरण है। भारत ने स्वयं को केवल तकनीकी बाजार के रूप में नहीं, बल्कि नीति निर्माता और वैश्विक संवादकर्ता के रूप में प्रस्तुत किए जाने की संभावना है।

'संतोष : परमं धनम्' -संतोष ही सबसे बड़ा धन है।

संस्कृत साहित्य में यह बात कही गई है कि- 'संतोषः परमं धनम्', अर्थात संतोष मनुष्य का सबसे मूल्यवान धन है। इससे बड़ा धन दुनिया में कोई और नहीं है ।इसका सीधा सा मतलब यह है कि जो हमारे पास है, उसमें प्रसन्न रहना ही सच्ची समृद्धि है। आज की तेज़ भागदौड़, तनाव और अवसाद भरी दुनिया में लोग अधिक से अधिक धन, सुख-सुविधाएँ और प्रतिष्ठा पाने के पीछे दौड़ रहे हैं, लेकिन सच्चाई यह है कि बाहरी संपत्ति हमें केवल थोड़े समय का सुख(क्षणिक सुख) दे सकती है, स्थायी मानसिक शांति नहीं ।पाठक जानते हैं कि मनुष्य की इच्छाएँ कभी समाप्त नहीं होतीं। एक इच्छा पूरी होती है तो दूसरी पैदा हो जाती है। यदि व्यक्ति केवल इच्छाओं के पीछे ही भागता रहे, तो वह कभी संतुष्ट नहीं हो सकता। इसलिए कहा गया है कि जिसके पास बहुत धन है लेकिन संतोष नहीं, वह भी मन से गरीब ही रहता है। इसके विपरीत, जो व्यक्ति संतोषी है, वह सीमित साधनों में भी सुखी और शांत जीवन जी सकता है। संस्कृत में कहा गया है कि - 'यदृच्छालाभसन्तुष्टो द्वन्द्वातीतो विमत्सरः ।समः सिद्धावसिद्धौ च कृत्वापि न निबध्यते ॥' इसका तात्पर्य यह है कि जो व्यक्ति सहज प्राप्त वस्तु में संतुष्ट रहता है, ईर्ष्या से मुक्त होता है और सफलता-असफलता में समान रहता है, वह कर्म करते हुए भी बंधन में नहीं पड़ता। वास्तव में, संतोष का अर्थ यह नहीं है कि मनुष्य महत्वाकांक्षा छोड़ दे या प्रगति करना बंद कर दे। इसका सही अर्थ है- प्रयास करते हुए भी मन में लोभ, ईर्ष्या और असंतोष को स्थान न देना। संतोषी व्यक्ति दूसरों की सफलता देखकर जलता नहीं, बल्कि उनसे वह प्रेरणा लेता है। उसका जीवन सरल, संतुलित और तनावमुक्त होता है। यही कारण है कि संतोष मानसिक स्वास्थ्य को भी बेहतर बनाता है और मनुष्य मन को शांति भी देता है ।वास्तव में संतोष का भाव व्यवहार से जुड़ा है- संतोषी व्यक्ति सबका प्रिय बनता है। इसीलिए संस्कृत में कहा गया -₹न कश्चित् कस्यचिद् मित्रं न कश्चित् कस्यचिद् रिपुः ।व्यवहारेण जायन्ते मित्राणि रिपवस्तथा ॥' संतोष मनुष्य को नैतिक और ईमानदार भी बनाता है। असंतोष ही वह कारण है, जिसके कारण व्यक्ति लालच में पड़कर गलत रास्ता अपनाता है। यदि व्यक्ति संतोषी हो, तो वह अनुचित तरीकों से धन कमाने की कोशिश नहीं करेगा। इस प्रकार संतोष समाज में नैतिकता और सदाचार को भी बढ़ावा देता है ।संतोष का संबंध केवल धन या वस्तुओं से नहीं, बल्कि जीवन की परिस्थितियों से भी है। जीवन में कठिनाइयाँ और असफलताएँ आती हैं, लेकिन यदि व्यक्ति धैर्य और संतोष बनाए रखे, तो वह उन्हें आसानी से पार कर सकता है। संतोष मानसिक शक्ति देता है और निराशा से बचाता है। संतोषी व्यक्ति वर्तमान में जीना जानता है — वह न अतीत के पछतावे में उलझता है और न भविष्य की चिंता में, बल्कि वर्तमान क्षण का आनंद लेता है ।इसके अलावा, संतोष का संबंध कृतज्ञता से भी है। जो व्यक्ति अपने जीवन की छोटी-छोटी खुशियों के लिए आभारी रहता है, वही सच्चा संतोष अनुभव करता है। उसका सुख बाहरी परिस्थितियों पर निर्भर नहीं करता, बल्कि उसके भीतर से उत्पन्न होता है ।अंततः, यह बात कही जा सकती है कि धन-दौलत जीवन को सुविधाजनक बना सकते हैं, पर सच्चा सुख केवल संतोष से मिलता है। जिस व्यक्ति के पास संतोष का खजाना है, वह हर परिस्थिति में आनंद और शांति महसूस करता है। इसलिए हमें अपने जीवन में संतोष और कृतज्ञता को विकसित करना चाहिए ।वास्तव में, संतोष सुखी जीवन का मूल मंत्र है ।वास्तविक समृद्धि बैंक खाते में नहीं, बल्कि मन की तृप्ति और शांति में होती है। जो व्यक्ति संतोष सीख लेता है, वही सच में सबसे धनी और सुखी होता है।

सुनील कुमार महला, फ्रीलांस राइटर, कॉलमिस्ट व युवा साहित्यकार,

एससी/एसटी महिलाओं, छात्रों, मजदूरों, पत्रकारों व सामाजिक कार्यकर्ताओं पर सरकारी उत्पीड़न के खिलाफ एक दिवसीय परिचर्चा आयोजित

परिवहन विशेष न्यूज

दय चे ने बताया कि 14 जुलाई 2025 को उन्होंने रजत कल्सन द्वारा किए गए प्रदर्शन की कवरेज की थी जिनके कारण पुलिस द्वारा उन्हें टारगेट किया गया, उन्हें नोटिस भेजा गया तथा एफआईआर दर्ज कर जेल भेजने की धमकियां दी गई।

उदय चे ने बताया कि वे जब तक किसान आंदोलन की सकारात्मक रिपोर्टिंग करते रहे तब तक वो किसान, जमीदारों तथा चौधरियों की आंखों के तारे थे, लेकिन जैसे ही उन्होंने दलित समाज के दर्द को अपने कैमरे के माध्यम से बयां करना शुरू किया तो वे सामंतवादी विचारधारा के लोगों की आंखों में खटकने लगे तथा उन्हें सरकार द्वारा ही नहीं एक विशेष जमात द्वारा भी गालियां व धमकियां दी जाने लगी, इसी कड़ी में हिसार के दबंग पत्रकार संजय चौहान ने बताया कि वह पुलिस की गैरकानूनी कार्रवाईयों को कैमरे के माध्यम से जनता को दिखाने का काम कर रहे थे, 30 जुलाई 2025 को पुलिस द्वारा उन्हें गिरफ्तार किया गया तथा जाति विशेष के पुलिस अधिकारियों द्वारा उन्हें थर्ड डिग्री टॉर्चर दिया गया तथा जाति के आधार पर थानों में उनका अपमान किया गया तथा उन पर आधा दर्जन से अधिक केस दर्ज कर जेल भेज दिया गया जहां उन्हें एक महीने जेल की सलाखों के पीछे बिताना पड़ा लेकिन वह समाज तथा पत्रकारिता के धर्म के प्रति प्रतिबद्ध हैं तथा अपना काम बिना डर के करते रहेंगे। इसी तरह नरवाना से आए हुए पत्रकार अंकुर ग्रोवर ने बताया कि जब उन्होंने अपने यूट्यूब चैनल पर नरवाना में सरकार द्वारा विकास कार्यों के दावों की पोल खोलनी शुरू की स्थानीय मंत्री नेताओं द्वारा अपने जान से मारने की धमकी दी जाने लगी तथा उनके विरुद्ध एफआईआर तक दर्ज कर दी गई तथा उन्हें जेल भेजने तक की साजिश रची गई इसी तरह के पत्रकार संजय बौद्ध ने कहा कि जब से उन्होंने दलित समाज तथा इंटरव्यू करने शुरू किए हैं उन्हें विदेशियों से धमकी आने शुरू हो गई है तथा पुलिस इस बात पर कोई भी गौर नहीं कर रही है।

उससे अगले सत्र में महिला विरुद्ध अपराध पर बात की गई जिसमें लोहारू से आए हुए एक पीड़ित पिता ने बताया कि गरीबी की वजह से वह अपनी बच्ची की स्कूल की फीस नहीं भर पाए थे जिसके चलते उनकी बेटी को प्रताड़ित किया गया तथा कॉलेज के मालिक जो एक मौजूदा विधायक है उनके भतीजे द्वारा उनकी पुत्री का यौन शोषण किया गया तथा इसी प्रताड़ना से तंग आकर उनकी बेटी ने आत्महत्या कर ली तथा पुलिस अब भी आरोपियों को बचाने का प्रयास कर रही है।

छात्रों के अधिकारों के बारे में छात्र नेता डॉक्टर अमरजीत गुरतरो व संजू बाबा ने भी अपनी बातें रखी तथा यूजीसी के बिल पर खुलकर बात की।

इस कार्यक्रम के मुख्य अतिथि वरिष्ठ अधिवक्ता रिखीराम रहे तथा इस कार्यक्रम को दलित विचारक जगबीर कटारिया, करनैल सिंह ओढां, राष्ट्रीय मिशनरी गायक मंजीत मेहरा, जरमिला देवी , प्रदीप भानखुड ने भी संबोधित किया।

इस मौके पर वरिष्ठ अधिवक्ता रिखीराम द्वारा सामाजिक कार्यों के लिए डॉक्टर पूजा अल्हान, अधिवक्ता राजेंद्र पाटील, जगबीर कटारिया, प्रदीप भानखुड, सिंगर मंजीत मेहरा, विक्रम नरड़, डॉ विक्रम बिबियान, संजू बाबा, प्रताप खोबडा, भूषण कुमार नूनिया, एडवोकेट राकेश भुक्कल, कुलविंदर बोस्ती, पत्रकार संजय बौद्ध, अधिवक्ता दीपक सैनी, नरेश दुलट, सामाजिक कार्यकर्ता अमित मुवाल, जगदीश फरटिया, आसीन उझाना, शकुंतला बौद्ध, सुशील महिपाल, संजय ढुल, बजरंग खिच्चड, रमन भुना, अधिवक्ता जिले सिंह वर्मा, सोहनलाल खेदड़, एडवोकेट नरेश गुणपाल, धर्मेंद्र रंगा, पत्रकार उदय चे, शकुंतला बौद्ध, सुरेंद्र पवार, मनीष नानकवाल को सर्टिफिकेट का

शिवालयों में गूंजे जयकारे

चिड़ावा 16 फरवरी। महाशिवरात्रि के पावन पर्व पर शिवालयों में अल सुबह से ही श्रद्धालुओं का ताता लगने लगा ।मंदिरो में हर हर महादेव, ॐ नमः शिवाय के जयकारों लग रहे थे। शिवालयों में सुबह से देर रात्रि तक श्रद्धा का सैलाब उमड़ रहा था। कस्बे के पंडित गणेश नारायण मंदिर, भूतनाथ मंदिर ,गौशाला रोड स्थित प्राचीन शिवालय, महाकालेश्वर शिवालय, पंचायत समिति परिसर स्थित मंदिर सहित शहर के मंदिर, शिवालयों में श्रद्धालुओं ने भोलेनाथ का जलाभिषेक कर पूजा अर्चना की ।शिव भक्तों ने मंदिरों में तो कई श्रद्धालुओं ने अपने निवास स्थान पर भगवान शिव का रुद्राभिषेक किया ।ऐसा मानना है कि महाशिवरात्रि के दिन भगवान शिव का अभिषेक करने से साधक को अभीष्ठ फल की प्राप्ति होती है ।इस पावन अवसर पर सुगन कुटीर में शिव के अनन्य भक्त वर्ल्ड रिकॉर्ड होल्डर, अंतरराष्ट्रीय लेखक,पत्रकार - विचारक डॉ. शंभू पवार ने सपत्नीक श्रीमती कमलेश पंवार एवं विजय पंवार, सुभाष बबीता, अभिषेक - ज्योति, अंकित-प्रिया, नन्ही यशस्वी,यशु ,कान्हा ने भोले नाथ को विल्व पत्र, आक, धतूरा ,गाजर , बैर, अर्पित किए। पंडित कैलाश भारद्वाज के आचार्यत्व में भगवान शिव का दूध, जल, गन्ने का रस,फलों के रस, शहद,व पंचामृत से रुद्राभिषेक किया ।डॉ. शम्भू पंवार ने भगवान शिव से देश में अमन चैन व खुशहाली की कामना की।

एपस्टीन फाइल्स : फिर सामने आया भोगवाद का शैतानी चेहरा, आ अब लौट चलें

ज्ञान चंद पाटनी

एपस्टीन फाइल्स ने पूरी दुनिया को झकझोर दिया है। इससे जुड़ी जो सामग्री सामने आ रही है, वह शैतानी कृत्यों को भी मात दे रही है। इससे स्पष्ट है कि अत्यधिक भोगवादी जीवनशैली इंसान को शैतान में बदल सकती है। इसका अंधानुकरण करने वालों को अब संभल जाना चाहिए और भारतीय जीवनशैली के मूल्यों का सम्मान करते हुए उनकी ओर लौटना चाहिए। अमेरिकी न्याय विभाग की ओर से जारी दस्तावेज, भयावह तस्वीरें और वीडियो न केवल उच्चपदस्थ नेताओं, अरबपतियों और राजघरानों के काले कारनामों को उजागर करते हैं बल्कि उस भोगवादी मानसिकता को बेनकाब करते हैं जो इंसान को शैतान बना देती है। अमेरिका के राष्ट्रपति डॉनल्ड ट्रंप से लेकर पूर्व राष्ट्रपति बिल क्लिंटन, एलन मस्क से लेकर प्रिंस एंड्रयू तक के नाम एपस्टीन फाइल्स में आए हैं।

जेफ्री एपस्टीन इक्कीसवीं सदी का सबसे बड़ा दरिंदा था। उसका अपना लिटिल सेंट जेम्स द्वीप था जहां वह दुनिया भर के बड़े—बड़े लोगों को लाता था। वहां बच्चियों के साथ दरिंदगी होती थी। उसके पास अपना प्राइवेट जेट और हेलिकॉप्टर तक था। बच्चियों के साथ क्रूरता, ब्लैकमेल का तंत्र और एलीट क्लब का यह भयावह सच शैतानी षड्यंत्रों को भी पीछे छोड़ देता है। इस मामले पर सोच विचार करें तो यह केवल व्यक्तिगत पतन की नहीं बल्कि भोगवादी जीवनशैली के कारण शक्तिशाली लोगों के राक्षस में तब्दील होने की डरावनी कहानी है। असीमित भोग और धन-लिप्सा के कारण हो रहे नैतिक पतन और दुष्कत्यों से मानवता कराह रही है। भारत जैसे आध्यात्मिक समाज ने तो भोगवाद को बहुत पहले ही नकार दिया था, लेकिन धीरे—धीरे यहां भी इसके प्रति आकर्षण बढ़ा है। अब अपने मूलभूत जीवन-मूल्यों की ओर लौटना होगा, यानी वे मूल्य जो संयम, करुणा और आत्म-नियंत्रण सिखाते हों। धनी—प्रभावशाली लोगों को भी इन मूल्यों के प्रति आस्था और विश्वास मजबूत करना होगा, लेकिन पाखंड से बचना होगा।

एपस्टीन फाइल्स ने साबित कर दिया कि भोगवाद इंसान को पशु से भी निचले स्तर तक धकेल देता है। स्वतंत्रता का नाम लेकर असीमित सेक्स, ड्रग्स और धन का पीछा करने वाला समाज ऐसी अंधेरी सुरंग में चला जाता है जहां शैतानी कृत्य करने में भी उसे झिझक महसूस नहीं होती। भोगवाद एक ऐसी विचारधारा है जो भौतिक सुख-सुविधाओं, ऐश्वर्य और इंद्रिय सुख को ही जीवन का एकमात्र उद्देश्य और सर्वोच्च सुख मानती है। इसमें वस्तुओं के उपभोग और स्वामित्व को ही खुशी का पैमाना मान लिया जाता है। मौज-मस्ती को ही जीवन का लक्ष्य मानकर प्रकृति को केवल भोग का साधन समझा जाता है। एपस्टीन प्रकरण से एक बार फिर यह साफ हो गया है कि भोगवाद शैतानी भूख पैदा करता है। वहां न कोई पारिवारिक बंधन है, न सामाजिक मर्यादा। जो भारतीय पश्चिमी जीवनशैली के चलते भोगवादी जीवनशैली को अपना रहे हैं, उनके लिए यह चेतावनी है।

गौरतलब है कि रोमन साम्राज्य के पतन में भी भोगवाद ने भूमिका निभाई थी। विलासी जीवन के चलते भारत के भी कई राजा—महाराजाओं के पतन के किस्से इतिहास में दर्ज हैं। आधुनिक काल में 1960 का 'हिप्पी आंदोलन' सेक्स-क्रांति का प्रतीक बना, लेकिन इसके नतीजे खतरनाक निकले। यौन स्वच्छंदता ने यौन-शोषण, बीमारियों और अपराधों में इजाफा किया। एपस्टीन फाइल्स उजागर होने से धनवानों के ऐसे गुप्त क्लब का पता चला जहां शैतानी कारनामों को अंजाम दिया गया। जब जीवन में कोई संयम नहीं, कोई मर्यादा नहीं तो हर तरह के कुकृत्य करने की राह खुल जाती है। भारत का सौभाग्य रहा कि हमारी संस्कृति भोग नहीं, संयम सिखाती है लेकिन, वैश्वीकरण ने भोगवाद के प्रति आकर्षण को तेज कर दिया और भारतीय जीवन मूल्यों के प्रति अनास्था पैदा कर दी। एपस्टीन फाइल्स चेतावनी है कि यह रास्ता शैतान की अंधेरी दुनिया तक जाता है।

भारतीय जीवनशैली भोगवाद के ठीक विपरीत है। हिंदू धर्म में ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ और संन्यास आश्रम की व्यवस्था के जरिए भोग को नियंत्रित किया गया था। परिवार-केंद्रित समाज, गुरु-शिष्य परंपरा और सामूहिकता ने हमें मजबूत बनाया।

रामायण और महाभारत में अत्यधिक भोग के परिणाम दिखाए गए। रावण अत्यधिक भोग के कारण ही नष्ट हुआ और कौरवों का पतन भी अति लिप्सा के कारण हुआ।

गौतम बुद्ध ने भी भोगवाद को दुःख का मूल बताया था। राजकुमार के रूप में भोग-सुख भोगे, किंतु उन्हें क्षणभंगुर पाया। उनका मानना था कि अत्यधिक भोग तृष्णा को बढ़ाता है और तृष्णा दुख का कारण है। बौद्ध धर्म ने भोगी राजाओं को संयम का पाठ सिखाया था। भगवान महावीर ने मानव को संयम और अहिंसा युक्त जीवन का मार्ग अपनाने की सलाह दी थी। जैन धर्म भोगवाद का कट्टर विरोधी है और भोग को कर्म-बंधन का मूल कारण माना गया है। महावीर स्वामी ने भोग-लिप्सा को दुःख का जनक बताया। पंच महाव्रत—अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य, अपरिग्रह भोग को नियंत्रित करने के मार्ग हैं। इसी तरह गुरु ग्रंथ साहिब में भोगवाद को पंच चोर (काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार) का मूल माना गया है। इस्लाम और ईसाई धर्म में भी भोग को नियंत्रित करने की बात कही गई है। अतिभोग को पाप का कारण माना गया है। इसके बावजूद भोगवाद को बढ़ावा दिया गया जो पूरी दुनिया के लिए बड़ा खतरा बन चुका है। पर्यावरण तो तहस—नहस हो ही रहा है, नैतिकता रसातल में जा रही है, अपराध बढ़ रहे हैं और शैतानी मानसिकता विकसित हो रही है। एपस्टीन कांड इसका प्रमाण है। इसलिए भारतीय जीवन मूल्यों की ओर लौटना अब जरूरी हो गया है।

भारतीय भी भोगवाद के जाल में फंस रहे हैं, वे भारत के आधारभूत जीवन मूल्यों से विमुख हो रहे हैं। युवतियां 'आजादी' के नाम पर असुरक्षित हो रही हैं, तो युवक भी अपराध की राह पर आगे बढ़ रहे हैं। एपस्टीन फाइल्स दिखाती हैं कि यह 'आजादी' शोषण का जाल है। यह बात समझनी होगी कि अत्यधिक भोग व्यक्ति को शैतान बनाता है। संयम का मार्ग अपनाकर व्यक्ति भले ही देवता न बन पाए, लेकिन मानवीय मूल्यों से भरा हुआ इंसान जरूर बन सकता है। एपस्टीन कांड वैश्विक चेतावनी है। स्पष्ट है कि भारतीय जीवनशैली और जीवन मूल्य पूरी दुनिया को रास्ता दिखा सकते हैं। सबसे पहले भारतीय नागरिकों की जिम्मेदारी है कि वे खुद संयम, करुणा और आत्म-नियंत्रण से सुखी समाज बनाएं और दुनिया के सामने आदर्श पेश करें। भारतीय मूल्यों के प्रति आस्था बनाएं रखें।

गौरतलब है कि रोमन साम्राज्य के पतन में भी भोगवाद ने भूमिका निभाई थी। विलासी जीवन के चलते भारत के भी कई राजा—महाराजाओं के पतन के किस्से इतिहास में दर्ज हैं। आधुनिक काल में 1960 का 'हिप्पी आंदोलन' सेक्स-क्रांति का प्रतीक बना, लेकिन इसके नतीजे खतरनाक निकले। यौन स्वच्छंदता ने यौन-शोषण, बीमारियों और अपराधों में इजाफा किया। एपस्टीन फाइल्स उजागर होने से धनवानों के ऐसे गुप्त क्लब का पता चला जहां शैतानी कारनामों को अंजाम दिया गया।

मनुष्य दो तीखी चोटियों पर तेजी से बूढ़ा हो जाता है

● विजय गर्ग

इतालवी राष्ट्रीय अनुसंधान परिषद की न्यूरोफिजियोलॉजिस्ट एनालिसा पास्कारेला के नेतृत्व में हाल ही में किए गए एक अध्ययन में उच्च-रिज़ॉल्यूशन वाले मस्तिष्क स्कैन और मशीन लर्निंग का उपयोग करके यह पता लगाया गया कि ध्यान किस प्रकार मस्तिष्क की गतिशीलता को बदलता है।

पीढ़ियों से यह माना जाता रहा है कि युवावस्था से बुढ़ापे तक उम्र बढ़ने की प्रक्रिया धीमी और स्थिर होती जाती है। हालाँकि, आधुनिक जैव-चिकित्सा अनुसंधान एक अलग कहानी सुझाता है: मानव आयु जीवन के दो प्रमुख चरणों में समान रूप से प्रगति करने के बजाय तेजी से बढ़ जाती है। ये महत्वपूर्ण मोड़ इस बात को नया रूप देते हैं कि हम स्वास्थ्य, दीर्घायु और निवारक देखभाल को किस प्रकार समझते हैं।

दो प्रमुख उम्र बढ़ने की चोटियाँ

नेचर एजिंग में प्रकाशित एक ऐतिहासिक अध्ययन से पता चला है कि 44 और 60 वर्ष की आयु के आसपास शरीर में नाटकीय जैविक परिवर्तन होते हैं। हजारों अणुओं और सूक्ष्मजीवों पर नज़र रखने वाले शोधकर्ताओं ने पाया कि उम्र बढ़ने की प्रक्रिया धीरे-धीरे नहीं होती, बल्कि यह त्वरित परिवर्तन के साथ होता है।

शिखर 1: 40 के दशक का मध्य (लगभग आयु 44)

उम्र बढ़ने से संबंधित परिवर्तन की पहली लहर अक्सर 40 के दशक के मध्य में होती है और यह पुरुषों और महिलाओं दोनों को प्रभावित करती है।

प्रमुख जैविक परिवर्तन:

वसा, अल्कोहल और कैफीन चयापचय में परिवर्तन
हृदय संबंधी जोखिम मार्करों में वृद्धि
बढ़ती सूजन और ऑक्सीडेटिव तनाव
त्वचा और मांसपेशियों में परिवर्तन तेजी से होने लगते हैं
यद्यपि रजोनिवृत्ति महिलाओं में होने वाले परिवर्तनों को प्रभावित कर सकती है, लेकिन शोधकर्ताओं ने पुरुषों में भी इसी प्रकार के बदलाव देखे हैं, जो व्यापक जैविक कारणों का संकेत देते हैं।

लोग क्या नोटिस कर सकते हैं:

चयापचय धीमा होना और वजन बढ़ना
ऊर्जा और सहनशक्ति में कमी
दीर्घकालिक स्वास्थ्य जोखिम के प्रारंभिक संकेत

शिखर 2: 60 के दशक की शुरुआत (लगभग 60 वर्ष)

दूसरी और अक्सर अधिक स्पष्ट वृद्धावस्था 60 के दशक की शुरुआत में होती है।

प्रमुख जैविक परिवर्तन:

प्रतिरक्षा प्रणाली की कार्यप्रणाली में गिरावट
कार्बोहाइड्रेट चयापचय में परिवर्तन
गुर्दे और हृदय स्वास्थ्य में बदलाव
मांसपेशियों और त्वचा की निरंतर उम्र बढ़ना
यह चरण आयु-संबंधी बीमारियों के प्रति बढ़ती भेद्यता और पुनर्योजी क्षमता में कमी से मेल खाता है।

सामान्य अनुभव:

बीमारी से धीरे-धीरे उबरना
मांसपेशियों की ताकत में कमी
अधिक थकान और कम लचीलापन बुढ़ापे में तेजी क्यों आती है?

वैज्ञानिक अभी भी इसके कारणों की जांच कर रहे हैं, लेकिन कई कारक प्रभावशाली प्रतीत होते हैं

आणविक और कोशिकीय परिवर्तन

इन शिखरों के दौरान मापे गए लगभग 81% बायोमोलेक्यूल्स में महत्वपूर्ण परिवर्तन होता है, जिससे चयापचय, प्रतिरक्षा और अंग कार्य प्रभावित होते हैं।

माइक्रोबायोम परिवर्तन

हमारे शरीर में और उस पर रहने वाले बैक्टीरिया और सूक्ष्मजीव भी नाटकीय रूप से बदल जाते हैं, जिससे पाचन, प्रतिरक्षा और सूजन प्रभावित होती है।

जीवनशैली और पर्यावरणीय कारक

तनाव, आहार, शारीरिक गतिविधि, नींद की गुणवत्ता और विषाक्त पदार्थों के संपर्क में आने से जैविक उम्र बढ़ने की प्रक्रिया बढ़ सकती है।

हार्मोनल और चयापचय परिवर्तन

हार्मोनल उतार-चढ़ाव और चयापचय परिवर्तन से ऊतकों की उम्र बढ़ने और रोग का खतरा बढ़ सकता है।

स्वास्थ्य और दीर्घायु के लिए इसका क्या अर्थ है

इन चोटियों को समझने से लक्षित निवारक देखभाल की अनुमति मिलती है।

40 वर्ष की आयु में निवारक रणनीतियाँ:
व्यायाम और आहार के माध्यम से हृदय स्वास्थ्य को बनाए रखें
रक्तचाप, कोलेस्ट्रॉल और ग्लूकोज की निगरानी करें
शराब का सेवन कम करें और तनाव को प्रबंधित करें

60 वर्ष की आयु में निवारक रणनीतियाँ:

मांसपेशी द्रव्यमान को संरक्षित करने के लिए शक्ति प्रशिक्षण
पोषण और टीकाकरण के माध्यम से प्रतिरक्षा को बढ़ावा दें
नियमित स्वास्थ्य जांच और गुर्दे की कार्यप्रणाली की जांच
स्वस्थ जीवनशैली की आदतें - जिसमें व्यायाम, पौष्टिक भोजन, नींद और तनाव प्रबंधन शामिल हैं - त्वरित उम्र बढ़ने के प्रभाव को कम कर सकती हैं। उम्र बढ़ना गिरावट नहीं है — यह अनुकूलन को बढ़ावा देता है

ये निष्कर्ष इस मिथक को चुनौती देते हैं कि उम्र बढ़ना एक सहज यात्रा है। इसके बजाय, जीवन जैविक चरणों में आगे बढ़ता है, जिनमें से प्रत्येक अनुकूलन और नवीनीकरण के अवसर प्रदान करता है। इन उपलब्धियों से डरने के बजाय, उन्हें समझने से हमें तैयारी करने, अपने स्वास्थ्य की रक्षा करने और न केवल जीवनकाल बढ़ाने में मदद मिलती है। उम्र बढ़ना अपरिहार्य हो सकता है, लेकिन हमारी उम्र कैसे बढ़ती है, यह अभी भी काफी हद तक हमारे नियंत्रण में है।

सेवानिवृत्त प्रधान शैक्षिक स्तंभकार
प्रख्यात शिक्षाविद स्ट्रीट कौर चंद एमएचआर मलोट पंजाब

हाथ से लिखना: तेज़ रफ्तार समय में मन का ठहराव

- डॉ. प्रियंका सौरभ

आज का समय गति का है। सुबह आँख खुलते ही मोबाइल स्क्रीन चमकने लगती है, सूचनाओं की बाढ़ हमारे भीतर उतरने लगती है और दिन कब शुरू होकर कब थकान में बदल जाता है, पता ही नहीं चलता। ई-मेल, व्हाट्सऐप, नोटिफिकेशन और सोशल मीडिया—सब मिलकर हमारे ध्यान, हमारी भावनाओं और हमारे समय पर लगातार दावा करते रहते हैं। इस डिजिटल युग में संवाद तो बढ़ा है, लेकिन आत्मसंवाद कहीं पीछे छूट गया है। ऐसे में हाथ से लिखने जैसी सरल, शांत और आत्मीय प्रक्रिया का महत्व पहले से कहीं अधिक बढ़ जाता है।

हाथ से लिखना सिर्फ़ शब्दों को काग़ज़ पर उतारना नहीं है, यह मन को गति से बाहर निकालकर ठहराव की ओर ले जाने की प्रक्रिया है। जब हम कलम उठाते हैं, तो शरीर और मस्तिष्क एक लय में आते हैं। उँगलियों की गति, स्याही की धार और काग़ज़ का स्पर्श—ये सब मिलकर हमारे भीतर चल रहे शोर को धीरे-धीरे शांत करने लगते हैं। यही कारण है कि दिन के अंत में, सोने से पहले यदि कोई व्यक्ति अपनी दिनचर्या की पाँच पंक्तियाँ भी लिख लेता है, तो उसे एक अनकहा सुकून मिलता है—ऐसा सुकून जिसे शब्दों में बाँध पाना कठिन होता है।

आज की जीवनशैली में तनाव, चिंता और अनिद्रा आम समस्याएँ बन चुकी हैं। हम दिन भर दूसरों के लिए सोचते हैं—काम के लिए, परिवार के लिए, समाज के लिए—लेकिन अपने मन से बातचीत का समय शायद ही निकाल पाते हैं। लिखना इस कमी को पूरा करता है। जब हम अपने अनुभव, भावनाएँ और विचार काग़ज़ पर उतारते हैं, तो हम उन्हें स्वीकार करते हैं। यह स्वीकार्यता ही मानसिक शांति की पहली सीढ़ी है। मन के भीतर जो बातें उलझन बनकर घूमती रहती हैं, वे लिखते ही स्पष्ट होने लगती हैं।

विशेषज्ञ मानते हैं कि हाथ से लिखना मस्तिष्क के उन हिस्सों को सक्रिय करता है, जो भावनात्मक संतुलन और स्मृति से जुड़े होते हैं। डिजिटल टाइपिंग की तुलना में हाथ से लिखे शब्दों का प्रभाव अधिक गहरा होता है, क्योंकि इसमें सोच और लिखने के बीच सीधा संबंध बनता है। यही कारण है कि जब हम अपनी परेशानियाँ, डर या थकान लिखते हैं, तो उनका बोझ हल्का महसूस होने लगता है। यह प्रक्रिया एक तरह की आत्मचिकित्सा बन जाती है—बिना किसी दवा, बिना किसी खर्च के।

रात के समय लिखने की आदत विशेष रूप से प्रभावी मानी जाती है। दिन भर की घटनाएँ, भावनाएँ और प्रतिक्रियाएँ मन में जमा रहती हैं। यदि हम उन्हें वहीं छोड़कर सो जाते हैं, तो वे नींद में भी हमारा पीछा करती हैं। लेकिन जब हम सोने से पहले उन्हें लिख देते हैं, तो मन को संकेत मिलता है कि अब दिन पूरा हो चुका है। यह संकेत नींद की गुणवत्ता को भी बेहतर बनाता है। पाँच पंक्तियाँ ही सही—आज क्या अच्छा हुआ, क्या कठिन लगा, किस बात ने मुस्कुराया, किस बात ने सिखाया—इतना लिखना भी पर्याप्त है।

हाथ से लिखना हमें ईमानदार बनाता है। यहाँ न कोई लाइक है, न कोई टिप्पणी, न कोई बाहरी मूल्यांकन। यह एक निजी स्थान है, जहाँ हम बिना डर के अपने सच को रख सकते हैं। कई बार हम समाज के डर से या दूसरों की अपेक्षाओं के कारण अपनी भावनाओं को दबा लेते हैं। लिखना उन्हें सुरक्षित रास्ता देता है। काग़ज़ हमारा गवाह बनता है—न्याय नहीं करता, बस सुनता है।

आज बच्चों और युवाओं के जीवन में भी यह आदत अत्यंत आवश्यक हो गई है। डिजिटल शिक्षा और स्क्रीन-आधारित मनोरंजन ने उनकी लेखन क्षमता और एकाग्रता को प्रभावित किया है। हाथ से लिखने की आदत न केवल भाषा और अभिव्यक्ति को सशक्त बनाती है, बल्कि धैर्य और अनुशासन भी सिखाती है। जब बच्चा या युवा अपने मन की बात लिखना सीखता है, तो वह भावनात्मक रूप से अधिक संतुलित बनता है। यह मानसिक स्वास्थ्य की दिशा में एक सशक्त कदम है।

इतिहास गवाह है कि लेखन हमेशा से आत्ममंथन का साधन रहा है। डायरी लिखना, पत्र लिखना या विचारों को नोट करना—ये सब परंपराएँ केवल साहित्यिक नहीं थीं, बल्कि मानसिक स्वास्थ्य से भी जुड़ी थीं। आज जब हम इन परंपराओं से दूर हो रहे हैं, तब अवसाद और अकेलापन बढ़ रहा है। यह संयोग नहीं, बल्कि संकेत है कि हमें फिर से अपनी जड़ों की ओर लौटने की ज़रूरत है।

यह कहना भी आवश्यक है कि हाथ से लिखना तकनीक का विरोध नहीं है। तकनीक ने जीवन को सुविधाजनक बनाया है, लेकिन संतुलन बनाए रखना हमारी ज़िम्मेदारी है। जैसे शरीर के लिए व्यायाम आवश्यक है, वैसे ही मन के लिए लिखना आवश्यक हो सकता है। दिन में भले ही हम डिजिटल माध्यमों पर निर्भर रहें, लेकिन रात को अपने लिए कुछ पल निकालना—काग़ज़ और कलम के साथ—एक स्वस्थ आदत है। कई लोग यह सोचकर लिखना शुरू नहीं करते कि उन्हें "अच्छा लिखना" नहीं आता। लेकिन लिखने का उद्देश्य साहित्य रचना नहीं, बल्कि मन की सफ़ाई है। यहाँ व्याकरण, शैली या सुंदर शब्दों की आवश्यकता नहीं। जो जैसा महसूस हो, वैसा लिख देना ही पर्याप्त है। कभी-कभी टूटी-फूटी पंक्तियाँ भी मन की सबसे सच्ची आवाज़ होती हैं।

समाज के स्तर पर भी यदि लिखने की संस्कृति को बढ़ावा दिया जाए, तो यह मानसिक स्वास्थ्य के क्षेत्र में बड़ा परिवर्तन ला सकती है। स्कूलों, कार्यस्थलों और परिवारों में यदि आत्मलेखन को प्रोत्साहित किया जाए, तो लोग अपनी भावनाओं को बेहतर ढंग से समझ और व्यक्त कर पाएँगे। इससे संवाद सुधरेगा, तनाव घटेगा और रिश्तों में गहराई आएगी।

अंततः, हाथ से लिखना हमें इंसान बनाए रखता है। यह हमें याद दिलाता है कि हम सिर्फ़ उपभोक्ता या उत्पादक नहीं, बल्कि महसूस करने वाले जीव हैं। दिन के अंत में जब हम अपनी पाँच पंक्तियाँ लिखते हैं, तो हम खुद से कहते हैं—"मैंने आज के दिन को देखा, जिया और स्वीकार किया।" यही स्वीकार्यता सुकून बनकर दिल में उतरती है।

तेज़ रफ्तार समय में ठहरना एक साहस है, और हाथ से लिखना उस साहस का सरल अभ्यास। कलम उठाइए, काग़ज़ खोलिए और खुद से मिलने का यह छोटा सा समय रोज़ दीजिए। हो सकता है दुनिया न बदले, लेकिन आपका मन ज़रूर बदल जाएगा—और यही सबसे बड़ा परिवर्तन है।

(डॉ. प्रियंका सौरभ, पीएचडी (राजनीति विज्ञान), कवयित्री एवं सामाजिक चिंतक हैं।)

सृजन, सुविधा और नकल की नई संस्कृति

- डॉ. सत्यवान सौरभ

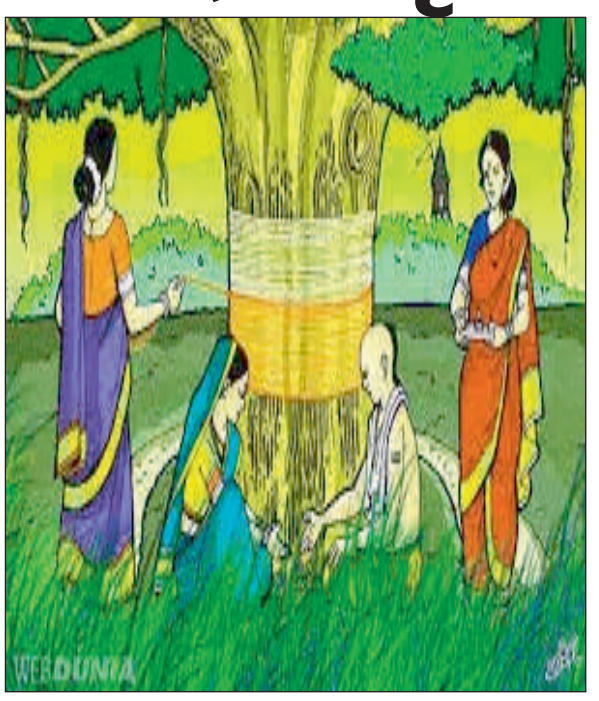

कहा जाता है कि हर नई तकनीक अपने साथ सुविधा लेकर आती है, पर कुछ तकनीकें धीरे-धीरे हमारी सोच और आदतों को भी बदल देती हैं। कृत्रिम बुद्धिमत्ता आज ऐसे ही मोड़ पर खड़ी है। उसने लिखने की गति बढ़ाई है, उसे आसान और सुलभ बनाया है; पर उसी अनुपात में उसने सृजन के अर्थ को धुंधला भी किया है। अब प्रश्न यह नहीं रह गया कि "लिखा कितना अच्छा है", बल्कि यह बन गया है कि "लिखा किसने है और किस तरह लिखा है।"

जब किसी लेख, कविता या विचार को पढ़ते हुए यह बोध होता है कि वह कृत्रिम बुद्धिमत्ता द्वारा रचा गया है, तो पाठक के भीतर कुछ टूट-सा जाता है। शब्द सधे हुए होते हैं, भाव भी उपयुक्त लगते हैं, पर कहीं एक रिक्तता रह जाती है। जैसे सुंदर शरीर हो, पर उसमें प्राण न हों। रचना का वह जादू, जो लेखक और पाठक के बीच एक अदृश्य संबंध बनाता है, अचानक समाप्त हो जाता है। यह केवल सौंदर्य का नहीं, विश्वास का भी प्रश्न है।

समस्या यह नहीं है कि कृत्रिम बुद्धिमत्ता लिख सकती है। समस्या यह है कि वह लिखते समय मनुष्य होने का भ्रम रचती है। वह अनुभव की नकल करती है, पीड़ा की भाषा बोलती है, प्रेम और करुणा के मुहावरे दोहराती है—बिना कभी असफलता, भय या दुविधा से गुज़रे। जब ऐसी सामग्री किसी मनुष्य के नाम से प्रस्तुत की जाती है, तो वह तकनीकी सहायता नहीं रह जाती; वह बौद्धिक नकल का रूप ले लेती है।

यह नकल कोई नई बात नहीं है। हमारी शिक्षा व्यवस्था लंबे समय से इस मानसिकता को पोषित करती रही है कि अंक सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण हैं, प्रक्रिया नहीं। परीक्षा में नकल करके उत्तीर्ण होना, दूसरों की उत्तर पुस्तिकाओं से विचार उठाना, और फिर उसी सफलता का गर्वपूर्वक प्रदर्शन—यह सब समाज में किसी न किसी रूप में स्वीकार्य रहा है। आज वही प्रवृत्ति कृत्रिम बुद्धिमत्ता के माध्यम से नई शक्ल में सामने आई है। अंतर केवल इतना है कि अब नकल अधिक चमकदार, अधिक विश्वसनीय और अधिक सुरक्षित दिखाई देती है।

कृत्रिम बुद्धिमत्ता से उत्पन्न सामग्री की एक पहचान बन चुकी है—भाषा की दृष्टि से निर्दोष, संरचना में संतुलित, और भावनात्मक रूप से "उचित"। पर यही परिपूर्णता उसे संदिग्ध भी बनाती है। क्योंकि वास्तविक सृजन प्रायः परिपूर्ण नहीं होता। उसमें झिझक होती है, दोहराव होता है, कभी-कभी असंगति भी होती है। सच्चा लेखक अपने ही विचारों से जूझता है, अपनी ही सीमाओं से संघर्ष करता है। उस संघर्ष की छाया शब्दों में दिखाई देती है, और वही रचना को जीवंत बनाती है। आज सामाजिक माध्यमों और अंकीय मंचों पर सामग्री की बाढ़ है। हर विषय पर, हर दृष्टिकोण से, तुरंत लेख उपलब्ध हैं। इस भीड़ में कृत्रिम बुद्धिमत्ता एक तीव्र यंत्र की तरह काम करती है, जो पहले से मौजूद हज़ारों विचारों को जोड़कर एक नया पैकेज बना देती है। यह पैकेज उपयोगी हो सकता है, जानकारीपूर्ण हो सकता है, पर क्या वह दृष्टि दे सकता है? क्या वह जोखिम उठा सकता है? क्या वह यह स्वीकार कर सकता है कि "मैं गलत भी हो सकता हूँ"?

यहीं मनुष्य और यंत्र के बीच मूल अंतर स्पष्ट होता है। मनुष्य अपनी बात कहते समय डरता है—आलोचना से, अस्वीकार से, असफलता से। और यही डर उसकी आवाज़ को विशिष्ट बनाता है। कृत्रिम बुद्धिमत्ता को न आलोचना का भय है, न अस्वीकार का। इसलिए वह सुरक्षित भाषा में लिखती है—सबको स्वीकार्य, किसी को असुविधाजनक न लगे ऐसी। परिणामस्वरूप, हम ऐसी रचनाएँ पढ़ रहे हैं जो सब कुछ कहती हैं, पर वास्तव में कुछ भी नहीं कहतीं।

एक और गंभीर प्रश्न श्रेय का है। यदि कृत्रिम बुद्धिमत्ता को एक औज़ार की तरह उपयोग किया जाए—शोध, संपादन या भाषा-सुधार के लिए—और यह स्पष्ट कर दिया जाए कि इसमें यंत्र की सहायता ली गई है, तो यह ईमानदारी है। पर जब पूरी रचना यंत्र द्वारा तैयार की जाए और लेखक का नाम किसी मनुष्य का हो, तो यह धोखा है। यह पाठक के साथ भी अन्याय है और सृजन की परंपरा के साथ भी।

अक्सर यह तर्क दिया जाता है कि "अंतिम परिणाम ही महत्त्वपूर्ण है, तरीका नहीं।" पर यही तर्क नकल को भी वैध ठहराता है। यदि तरीका अप्रासंगिक होता, तो शिक्षा, प्रशिक्षण और अभ्यास का कोई अर्थ न रह जाता। सृजन केवल परिणाम नहीं है, वह एक प्रक्रिया भी है। लिखते समय जो सोच विकसित होती है, जो आत्मसंघर्ष होता है, वही लेखक को गढ़ता है। कृत्रिम बुद्धिमत्ता उस प्रक्रिया को बीच में ही काट देती है।

यह कहना भी आवश्यक है कि कृत्रिम बुद्धिमत्ता स्वयं में शत्रु नहीं है। हर तकनीक की तरह उसका मूल्य उसके उपयोग में निहित है। समस्या तब उत्पन्न होती है जब सुविधा, सृजन का स्थान लेने लगती है। जब लेखक बनने के स्थान पर "सामग्री उत्पादक" बनने की होड़ लग जाती है। जब पहचान मेहनत और अनुभव से नहीं, बल्कि उत्पादन की मात्रा से तय होने लगती है।

भविष्य में संभवतः दो प्रकार के लेखन स्पष्ट रूप से दिखेंगे। एक, जो तेज़ होगा, चमकदार होगा, हर जगह उपलब्ध होगा—और शीघ्र भुला दिया जाएगा। दूसरा, जो धीमा होगा, सीमित होगा, कभी-कभी असुविधाजनक भी होगा—पर टिकेगा। क्योंकि वह किसी मनुष्य द्वारा चुकाई गई कीमत के साथ लिखा गया होगा।

पाठक भी धीरे-धीरे इस अंतर को समझने लगेंगे। वे केवल यह नहीं पूछेंगे कि "क्या कहा गया", बल्कि यह भी पूछेंगे कि "किस कीमत पर कहा गया।" रचना की विश्वसनीयता उसके स्रोत से जुड़ जाएगी। लेखक का मूल्य उसके साहस से आँका जाएगा—उस साहस से, जिसे किसी यंत्र से उधार नहीं लिया जा सकता।

अंततः प्रश्न कृत्रिम बुद्धिमत्ता का नहीं, हमारी ईमानदारी का है। हम क्या बनना चाहते हैं—सुविधा के उपभोक्ता या अनुभव के सृजनकर्ता? क्या हम अपने नाम के साथ यंत्र की आवाज़ जोड़ना चाहते हैं, या अपनी अधूरी, असुविधाजनक, मानवीय आवाज़ को बचाए रखना चाहते हैं?

सृजन सदैव कठिन रहा है और रहेगा। जो उसे अत्यधिक आसान बना देता है, वह अक्सर उसे खोखला भी कर देता है। इसलिए आज, इस तकनीकी कोलाहल के बीच, सबसे आवश्यक प्रतिरोध यही है कि हम लिखते समय यह स्मरण रखें—शब्द केवल जोड़ने के लिए नहीं होते, जीने के लिए होते हैं। और जीवन की सच्ची अनुभूति की नकल कोई भी यंत्र, चाहे वह कितना ही कुशल क्यों न हो, पूर्ण रूप से नहीं कर सकता।

(डॉ. सत्यवान सौरभ, पीएचडी (राजनीति विज्ञान), एक कवि और सामाजिक

सत्ता, सेवा और समाज के त्रिकोण में हिंदुत्व की भूमिका

[हिंदुत्व का अगला अध्याय: बदलाव, संवाद और समावेश]
[हिंदुत्व शताब्दी: परंपरा से परिवर्तन की ओर बढ़ता विचार]

- प्रो. आरके जैन "अरिजीत"

सौ वर्षों की यात्रा केवल समय की गणना नहीं होती, बल्कि वह विचारों की साधना, संघर्षों की तपस्या और आत्ममंथन की निरंतर प्रक्रिया होती है। हिंदुत्व की शताब्दी भी इसी ऐतिहासिक चेतना की प्रतीक है, जहां अतीत की स्मृतियां, वर्तमान की चुनौतियां और भविष्य की आकांक्षाएं एक-दूसरे में घुलकर नई दिशा रचती हैं। 27 सितंबर 1925 को नागपुर में केशव बलिराम हेडगेवार द्वारा स्थापित राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ आज केवल एक संगठन नहीं, बल्कि भारतीय समाज की आत्मा से जुड़ा एक व्यापक सांस्कृतिक आंदोलन बन चुका है। एक सदी बाद यह आंदोलन स्वयं से प्रश्न कर रहा है—क्या उसकी वैचारिक दिशा समय के अनुरूप विकसित हो पाई है, या उसे नए संदर्भों में पुनर्परिभाषित करना आवश्यक है? यह शताब्दी केवल उत्सव का अवसर नहीं, बल्कि आत्मनिरीक्षण, पुनर्संयोजन और नवसृजन का ऐतिहासिक क्षण है, जहां हिंदुत्व अपनी नई पहचान को गढ़ने की प्रक्रिया में दिखाई देता है।

शताब्दी वर्ष में सरसंघचालक मोहन भागवत के विचार इस वैचारिक परिवर्तन की धुरी बनकर उभरे हैं। उनके भाषणों में हिंदुत्व को संकीर्ण धार्मिक दायरों से मुक्त कर एक व्यापक, समावेशी और मानवीय सांस्कृतिक चेतना के रूप में प्रस्तुत किया गया है। वे स्पष्ट करते हैं कि हिंदू होना किसी पूजा-पद्धति तक सीमित नहीं, बल्कि वह एक सभ्यतागत स्वभाव है, जो भारत की विविधता को एक सूत्र में बांधता है। मुस्लिम, ईसाई या सिख—जो भी इस भूमि की साझा विरासत पर गर्व करता है, वह इस परंपरा का अभिन्न अंग है। यह दृष्टिकोण पुराने टकरावपूर्ण नैरेटिव से अलग एक नए संवादात्मक युग की घोषणा करता है, जहां सहअस्तित्व, सहयोग और सम्मान को प्राथमिकता दी जाती है। यही कारण है कि युवा पीढ़ी इस विचारधारा से जुड़ाव महसूस कर रही है और इसे भविष्य की राह के रूप में देख रही है।

री-कैलिब्रेशन की यह प्रक्रिया तब और अधिक स्पष्ट होती है, जब संघ 'पंच परिवर्तन' जैसे अभियानों के माध्यम से सामाजिक समरसता, पर्यावरण संरक्षण और नागरिक कर्तव्यों को केंद्र में लाता है। जब भागवत जी भीमराव अंबेडकर के करुणा, पवित्रता और अनुशासन के विचारों का उल्लेख करते हैं, तो हिंदुत्व लोकतांत्रिक और मानवीय मूल्यों से जुड़ता हुआ दिखाई देता है। यह दृष्टि युवाओं को यह सिखाती है कि राष्ट्रवाद केवल भावनात्मक नारों का विषय नहीं, बल्कि सामाजिक उत्तरदायित्व और नैतिक आचरण की मांग करता है। आज की पीढ़ी इस सोच को डिजिटल मंचों, स्टार्टअप संस्कृति, स्वदेशी नवाचार और पर्यावरणीय आंदोलनों से जोड़ रही है। परिणामस्वरूप, हिंदुत्व एक आधुनिक, सक्रिय और रचनात्मक पहचान के रूप में उभर रहा है, जो परंपरा और प्रगति के बीच संतुलन स्थापित करने का प्रयास करता है।

फिर भी, यह वैचारिक परिवर्तन बिना सवालों और शंकाओं के नहीं है। आलोचक लगातार पूछते हैं कि क्या यह बदलाव वास्तव में आत्ममंथन का परिणाम है, या केवल समय के अनुरूप अपनाई गई एक रणनीति? क्या हिंदुत्व अपने प्रारंभिक चिंतकों जैसे विनायक दामोदर सावरकर और एम. एस. गोलवलकर की वैचारिक परंपरा से सचमुच आगे निकल पाया है, या केवल उसकी भाषा और प्रस्तुति बदली गई है? इन जटिल प्रश्नों के बीच मोहन भागवत की संवाद, मेल-मिलाप और विश्वास की अपील विशेष महत्व रखती है। वे स्वीकार करते हैं कि इतिहास ने समाज को गहरे घाव दिए हैं, लेकिन उन्हें भरने का रास्ता टकराव नहीं, बल्कि आपसी समझ और धैर्य से होकर जाता है। यह स्पष्टता हिंदुत्व को एक आत्मविश्वासी, परिपक्व और जिम्मेदार विचारधारा के रूप में स्थापित करने का प्रयास प्रतीत होती है।

समाज में उभरते नए नैरेटिव इस परिवर्तन को और अधिक मजबूती प्रदान कर रहे हैं। आज हिंदुत्व धीरे-धीरे किसी एक जाति, वर्ग या समुदाय की पहचान से ऊपर उठकर सामाजिक एकता और सामूहिक चेतना का प्रतीक बनने की कोशिश कर रहा है। सेवा भारती, ग्राम विकास योजनाएं और शिक्षा अभियान इस दिशा में ठोस उदाहरण हैं, जहां सेवा को विचारधारा से जोड़ा गया है। युवा इन पहलों में सक्रिय भूमिका निभा रहे हैं और राष्ट्र निर्माण को केवल राजनीतिक सत्ता तक सीमित नहीं रखते, बल्कि समाज के हर स्तर से जोड़कर देखते हैं। उनके लिए हिंदुत्व अब मंदिर-मस्जिद की बहसों से आगे बढ़कर रोजगार सृजन, पर्यावरण संरक्षण और तकनीकी आत्मनिर्भरता का व्यापक मंच बन चुका है, जो इसे एक जीवंत सामाजिक आंदोलन का स्वरूप देता है।

डिजिटल युग में यह विचारधारा और भी नए रूपों में सामने आ रही है। सोशल मीडिया, पॉडकास्ट, ब्लॉग और ऑनलाइन अभियानों के माध्यम से युवा अपनी सांस्कृतिक पहचान को वैश्विक मंच पर प्रस्तुत कर रहे हैं। वे स्वदेशी उत्पादों, हरित ऊर्जा और भारतीय ज्ञान-परंपरा को आधुनिक संदर्भों से जोड़कर एक नए राष्ट्रवादी विमर्श का निर्माण कर रहे हैं। हालांकि, इसके साथ-साथ इस्लामोफोबिया, असहिष्णुता और जातीय श्रेष्ठता जैसे आरोप भी उभरते हैं, जो इस आंदोलन की विश्वसनीयता पर प्रश्नचिह्न लगाते हैं। संघ नेतृत्व इन प्रवृत्तियों से स्वयं को अलग रखते हुए सेवा, अनुशासन और समावेश पर निरंतर जोर देता है। इससे यह संदेश जाता है कि पुनर्संयोजन केवल भाषणों और नारों तक सीमित नहीं, बल्कि व्यवहार, सोच और सामाजिक आचरण में भी स्पष्ट रूप से दिखाई देना चाहिए।

वैश्विक मंच पर हिंदुत्व को कई बार फार-राइट आंदोलन के चश्मे से देखा जाता है, किंतु भारत के भीतर यह स्वयं को राष्ट्र निर्माण की एक जीवंत प्रयोगशाला के रूप में स्थापित करने का प्रयास कर रहा है। शिक्षा में भारतीय दृष्टिकोण का पुनर्स्थापन, ग्रामोदय की अवधारणा, स्वदेशी अर्थव्यवस्था का विस्तार और सांस्कृतिक कूटनीति के नए प्रयोग इसके उभरते आयाम हैं। इन सभी प्रयासों के केंद्र में युवा शक्ति खड़ी है, जिनकी ऊर्जा, तकनीकी दक्षता और नवाचारशीलता इस विचारधारा को भविष्य की दिशा में ले जा रही है। यही वह संक्रमणकाल है, जो तय करेगा कि हिंदुत्व एक सीमित और बंद विचार-प्रणाली बनकर रह जाएगा या एक खुला, संवादशील और वैश्विक समाधान प्रस्तुत करने वाला व्यापक दर्शन के रूप में विकसित होगा।

हिंदुत्व की शताब्दी एक ऐतिहासिक मोड़ का प्रतीक बनकर सामने आती है। यह वह क्षण है, जहां अतीत की विरासत और भविष्य की आकांक्षाएं आमने-सामने खड़ी होकर नई दिशा की मांग कर रही हैं। यदि समावेश, संवाद और सेवा को वास्तव में इस विचारधारा का केंद्र बनाया गया, तो हिंदुत्व विविधता में एकता का सशक्त और प्रेरक उदाहरण बन सकता है। किंतु यदि पुराने विभाजन, संकीर्णता और अविश्वास हावी रहे, तो यह ऐतिहासिक अवसर हाथ से निकल भी सकता है। युवाओं की भागीदारी, नेतृत्व क्षमता और वैचारिक परिपक्वता इस प्रक्रिया में निर्णायक भूमिका निभाएगी। संभवतः यही इस शताब्दी का सबसे बड़ा संदेश है—कि हिंदुत्व स्वयं को नए सिरे से गढ़ रहा है, और उसका भविष्य इस बात पर निर्भर करेगा कि वह अपने पुनर्संयोजन को कितनी ईमानदारी, संवेदनशीलता और दूरदृष्टि के साथ अपनाता है।

प्रो. आरके जैन "अरिजीत", बड़वानी (मप्र)

क्या भारत में 2046 तक बच्चों से ज्यादा बुजुर्ग होंगे?

रामस्वरूप रावतसरे

राजस्थान हाईकोर्ट ने बुजुर्गों की हालत को लेकर गंभीर चिंता जताई है। अदालत का कहना है कि 2046 तक देश में बच्चों से ज्यादा बुजुर्ग होंगे लेकिन उनके लिए हमारा सिस्टम अभी तैयार नहीं है। इसी चिंता के बीच हाई कोर्ट की जयपुर बेंच ने राज्य के वृद्धाश्रमों की स्थिति की पड़ताल का आदेश दिया है ताकि यह पता चल सके कि वहाँ रहने वाले बुजुर्गों को वास्तव में कैसी सुविधाएँ मिल रही हैं और सिस्टम जमीनी स्तर पर कितना प्रभावी है। अदालत की यह टिप्पणी अहम है, जो भारत अभी सबसे युवा देश है, रफ्तार से दौड़ रहा है उसे अपने बुजुर्गों की भी चिंता करने की आवश्यकता है।

राज्य विधिक सेवा प्राधिकरण राज्य में चल रहे सभी 31 वृद्धाश्रमों (ओल्ड एज होम) की जाँच कर एक विस्तृत रिपोर्ट तैयार करेगा जिसमें वृद्धाश्रमों में चिकित्सा की सुविधा, फूड क्वालिटी, भवनों की स्थिति, सफाई और सुरक्षा के इंतजामों के विषय में विस्तार से बताया जाएगा। हाईकोर्ट ने बुजुर्गों की सामाजिक स्थिति पर गंभीर टिप्पणी करते हुए कहा कि भारतीय संस्कृति में बुजुर्गों को हमेशा सम्मान और आदर का स्थान दिया गया है लेकिन समय के साथ यह परंपरा कमजोर होती जा रही है। संयुक्त परिवारों के टूटने, तेजी से बढ़ते शहरीकरण और बदलती जीवनशैली ने बुजुर्गों को समाज में धीरे-धीरे असहाय और उपेक्षित स्थिति में पहुँचा दिया है। अदालत ने यह भी संकेत दिया कि समाज और व्यवस्था दोनों को बुजुर्गों की बदलती जरूरतों को समझते हुए अधिक संवेदनशील और जिम्मेदार होना होगा।

संयुक्त राष्ट्र जनसंख्या कोष (यूएनएफपीए) और इंटरनेशनल इंस्टीट्यूट फॉर पॉपुलेशन साइंसेज (आईआईपीएस) ने सितंबर 2023 में एक रिपोर्ट जारी की थी। यह रिपोर्ट देश और दुनिया के प्रमुख जनसंख्या और वृद्धावस्था संबंधी आँकड़ों के आधार पर तैयार की गई है। इसमें आईआईपीएस द्वारा किए गए 'लॉन्गिट्यूडिनल एजिंग सर्वे इन इंडिया (2017-18)', भारत की जनगणना, भारत सरकार के जनसंख्या अनुमान (2011-2036) और संयुक्त राष्ट्र के विश्व जनसंख्या संभावनाएँ 2022 से प्राप्त आँकड़ों को आधार बनाया गया है

रिपोर्ट में बताया गया है कि दुनिया में साल 2022 में करीब 110 करोड़ लोग ऐसे थे जिनकी उम्र 60 साल या उससे ज्यादा थी। यह दुनिया की कुल आबादी का लगभग 13.9 प्रतिशत था। अगले 30 सालों में बुजुर्गों की संख्या तेजी से बढ़ने वाली है। अनुमान है कि 2050 तक यह संख्या बढ़कर करीब 210 करोड़ हो जाएगी और तब दुनिया की कुल आबादी में बुजुर्गों का हिस्सा करीब 22 प्रतिशत तक पहुँच जाएगा। यह बदलाव दुनिया के हर हिस्से में दिखाई देगा।

भारत में भी ऐसा ही होगा। साल 2022 में भारत में करीब 14.9 करोड़ बुजुर्ग थे, जिनकी उम्र 60 साल या उससे ज्यादा थी। यह देश की कुल आबादी का लगभग 10.5 प्रतिशत था। लेकिन 2050 तक बुजुर्गों की संख्या बढ़कर करीब 34.7 करोड़ हो जाएगी और तब देश की आबादी में उनका हिस्सा करीब 21 प्रतिशत तक पहुँच जाएगा। रिपोर्ट के मुताबिक, साल 2000 से 2022 के बीच भारत की कुल आबादी में करीब 34 प्रतिशत की बढ़ोतरी हुई लेकिन इसी दौरान 60 साल से ज्यादा उम्र के लोगों की संख्या 103 प्रतिशत तक बढ़ गई, यानी बुजुर्गों की संख्या देश की कुल आबादी से कहीं ज्यादा तेजी से बढ़ी। इससे भी ज्यादा तेज बढ़ोतरी 80 साल से ऊपर उम्र के लोगों में हुई। इस उम्र वर्ग की आबादी में इस दौरान करीब 128 प्रतिशत की वृद्धि दर्ज की गई।

आगे के अनुमान और भी चौंकाने वाले बताए जा रहे हैं। साल 2022 से 2050 के बीच भारत की कुल आबादी में सिर्फ 18 प्रतिशत की बढ़ोतरी होने की उम्मीद है जबकि बुजुर्गों की संख्या करीब 134 प्रतिशत तक बढ़ सकती है। इसी अवधि में 80 साल से ज्यादा उम्र के लोगों की संख्या लगभग 279 प्रतिशत तक बढ़ने का अनुमान है। खास बात यह है कि बहुत ज्यादा उम्र के बुजुर्गों में महिलाओं की संख्या पुरुषों से ज्यादा होगी। इनमें बड़ी संख्या विधवा और दूसरों पर निर्भर रहने वाली महिलाओं की होगी। जैसे-जैसे उम्र 60 से 80 साल के बीच बढ़ेगी, बुजुर्ग महिलाओं की संख्या पुरुषों की तुलना में लगातार बढ़ती जाएगी।

अनुमान के अनुसार साल 2046 तक भारत में बुजुर्गों की संख्या बच्चों (0 से 14 वर्ष) से ज्यादा हो जाएगी। वहीं, 2050 तक देश की कामकाजी उम्र की आबादी (15 से 59 वर्ष) में गिरावट आने लगेगी। आँकड़ों से स्पष्ट है कि भारत तेजी से 'एजिंग सोसाइटी' की ओर बढ़ रहा है। जीवन प्रत्याशा में वृद्धि, स्वास्थ्य सुविधाओं में सुधार और जन्मदर में गिरावट ने मिलकर भारत के 'एज स्ट्रक्चर' को बदल दिया है। यह आँकड़ों का यह बदलाव लोगों और देश दोनों के लिए ही चुनौती लाने वाले है वो भी ऐसे वक्त में जब भारत को अपनी बूढ़ी होती आबादी की चिंता के लिए बहुत काम करना बाकी है। सामाजिक-आर्थिक तौर पर उम्र का यह बदलाव कई तरह के असर दिखाएगा जिससे निपटने भारत के लिए चुनौती होने वाला है।

भारत में 60 साल की उम्र के बाद औसतन लोग करीब 18.3 साल और जीवित रहते हैं। इसमें महिलाओं की उम्र पुरुषों से ज्यादा होती है। 60 साल की उम्र के बाद महिलाएँ औसतन लगभग 19 साल और पुरुष लगभग 17.5 साल तक जीवित रहते हैं। महिलाएँ पुरुषों की तुलना में अधिक समय तक जीवित रहती हैं जिसके कारण वृद्ध महिलाओं की संख्या अधिक होती है। इनमें से बड़ी संख्या विधवाओं की होती है, जो अकेले रहती हैं और परिवार पर निर्भर होती हैं। सामाजिक सुरक्षा की सीमित व्यवस्था और सामाज के पितृसत्तात्मक ढाँचे के कारण वृद्ध महिलाएँ अधिक असुरक्षित स्थिति में होती हैं।

जानकारों के अनुसार इसका एक अन्य पहलू ग्रामीणीकरण बताया जा रहा है। भारत की 71 प्रतिशत वृद्ध आबादी ग्रामीण क्षेत्रों में निवास करती है। ग्रामीण भारत में स्वास्थ्य सेवाओं की कमी, सीमित परिवहन सुविधाएँ, कम आय और सामाजिक अलगाव वृद्ध लोगों की समस्याओं को और बढ़ सकते हैं। ग्रामीण क्षेत्रों में युवा आबादी का शहरों की ओर पलायन भी वृद्ध लोगों को अकेला छोड़ देता है जिससे वे खुद भी भावनात्मक और सामाजिक रूप से अधिक कमजोर हो जाते हैं।

भारत में वृद्धों की आर्थिक स्थिति एक गंभीर चिंता का विषय है। उपलब्ध आँकड़ों के अनुसार, केवल 11 प्रतिशत वृद्ध पुरुषों को वर्क पेंशन मिलती है और 16.3 प्रतिशत को सामाजिक पेंशन प्राप्त होती है। वहीं, वृद्ध महिलाओं में 27.4 प्रतिशत केवल सामाजिक पेंशन पर निर्भर हैं और मात्र 1.7 प्रतिशत को कार्य पेंशन मिलती है। लगभग पाँचवां हिस्सा ऐसा है जिसके पास कोई स्थायी आय स्रोत नहीं है। यह स्थिति वृद्धावस्था को आर्थिक असुरक्षा और गरीबी से जोड़ देती है।

भारत में बड़ी संख्या में बुजुर्ग गरीब हैं। ग्रामीण क्षेत्रों में बुजुर्गों की स्थिति और खराब है। अगर सरकार ने पर्याप्त सामाजिक सुरक्षा नहीं दी तो बुजुर्ग गरीबी और निर्भरता में फँस सकते हैं। इसके साथ ही बुजुर्गों की बढ़ती संख्या का सबसे बड़ा असर स्वास्थ्य क्षेत्र पर पड़ेगा। बुजुर्गों को लंबे समय तक इलाज की जरूरत होती है। उन्हें हृदय रोग, मधुमेह, कैंसर, गठिया और मानसिक रोग जैसी समस्याएँ होती हैं। भारत में अभी बुजुर्गों के लिए विशेष स्वास्थ्य सेवाएँ बहुत कम हैं। अगर बुजुर्गों की संख्या तेजी से बढ़ी, तो अस्पतालों और डॉक्टरों पर भारी दबाव पड़ेगा। साथ ही, शहरों में पहले से ही भीड़, प्रदूषण और आवास की समस्या है। बुजुर्गों के लिए शहरों को अनुकूल बनाना एक बड़ी चुनौती होगी।

आज के समय में बुजुर्गों की एक बड़ी समस्या अकेलापन और उपेक्षा भी है। संयुक्त परिवारों के टूटने, शहरीकरण और बदलती जीवनशैली के कारण कई बुजुर्ग अकेले रह जाते हैं। कई रिपोर्ट्स बताती हैं कि भारत में बड़ी संख्या में बुजुर्ग खुद को सामाजिक रूप से अलग-थलग महसूस करते हैं। इसलिए जरूरी है कि समाज और सरकार मिलकर बुजुर्गों के लिए सामुदायिक केंद्र, सामाजिक गतिविधियाँ और सुरक्षित वृद्धाश्रम विकसित करें ताकि वे खुद को अकेला न महसूस करें और सम्मान के साथ जीवन जी सकें।

एआई इम्पैक्ट सम्मिट 2026 के नीतिगत-समूहगत वैश्विक मायने

कमलेश पांडेय

एआई इम्पैक्ट समिट 2026 भारत सरकार द्वारा नई दिल्ली में 16-20 फरवरी 2026 को आयोजित एक प्रमुख वैश्विक आयोजन है, जो कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) के जिम्मेदार और समावेशी विकास पर केंद्रित है। यह समिट ग्लोबल साउथ के लिए पहला बड़ा AI शिखर सम्मेलन है, जो 100+ देशों से 35,000+ प्रतिनिधियों को एकजुट कर रहा है। देखा जाए तो यह समिट इंडियाAI मिशन के तहत आयोजित हो रहा है जिसमें राष्ट्राध्यक्ष, मंत्री, उद्योग नेता, शोधकर्ता और सिविल सोसाइटी शामिल होंगे।

वास्तव में यह आयोजन UK AI Safety Summit, Seoul AI Summit जैसे पूर्व आयोजनों की निरंतरता में वैश्विक AI सहयोग को मजबूत करेगा जिसका मुख्य थीम 'पीपुल, प्लैनेट, प्रोग्रेस' है। ये नीतियों को व्यावहारिक प्रभाव में बदलने पर जोर देता है। इस समिट का वैश्विक महत्व यह है कि AI इम्पैक्ट समिट AI के लोकतंत्रीकरण पर फोकस करता है, विशेष रूप से वैश्विक दक्षिण के देशों के लिए संसाधनों को सुलभ बनाने हेतु सक्रिय किया गया है।

वहीं, भारत की पूरक नवाचार क्षमता ग्लोबल AI नेतृत्व स्थापित करने में मदद करेगी, साथ ही जिम्मेदार AI शासन के मानकों को आकार देगी। इसमें 16 देशों के राष्ट्राध्यक्षों की भागीदारी आर्थिक कूटनीति और विकासशील राष्ट्रों की आवाज को मजबूत करेगी। इसकी प्रमुख पहलें इस प्रकार हैं जो डेमोक्रेटाइजिंग AI रिसोर्सेज वर्किंग ग्रुप (भारत, मिस्र, केन्या सह-अध्यक्ष) सार्वजनिक AI संसाधनों को किफायती बनाने पर काम कर रहा है।

जहां तक इसके वैश्विक प्रभाव की बात है तो इससे जुड़ीं चुनौतियां समावेशी AI नवाचारों को प्रोत्साहित करेंगी। लिहाजा यह समिट AI को आर्थिक-रणनीतिक शक्ति के रूप में स्थापित कर वैश्विक विभाजन को पाटेगा। दरअसल, एआई इम्पैक्ट समिट 2026 का मुख्य एजेंडा एआई को जिम्मेदार, समावेशी और प्रभावी बनाने पर केंद्रित है, जो तीन सूत्रों—लोग (People), ग्रह (Planet), और प्रगति (Progress)—पर आधारित है। यह एजेंडा एक्शन से इंपैक्ट की ओर बढ़ने पर जोर देता है, जिसमें नीतियों को व्यावहारिक बदलावों में बदलना शामिल है।

इस आयोजन का मुख्य सूत्र ,निम्नवत हैः- पहला, लोग (People) यानी एआई का समावेशी विकास, शिक्षा, स्वास्थ्य और सामाजिक न्याय में उपयोग। दूसरा, ग्रह (Planet) यानी पर्यावरण संरक्षण, जलवायु परिवर्तन से लड़ाई और सतत विकास। और तीसरा, प्रगति (Progress) यानी आर्थिक विकास, उत्पादकता वृद्धि और नवाचार को बढ़ावा। इसके दृष्टिगत ही प्रमुख सत्र और चक्र को निर्धारित किया गया है।

एआई इम्पैक्ट समिट को सात 'चक्रों' (फोकस एरियाज) में बांटा गया है जो कार्यशालाओं, पैनल चर्चाओं और उच्च-स्तरीय बैठकों के रूप में आयोजित होंगे। पहला, डेमोक्रेटाइजिंग AI रिसोर्सेज यानी सार्वजनिक AI संसाधनों को किफायती बनाना (भारत, मिस्र, केन्या सह-अध्यक्ष)। दूसरा, वैश्विक प्रभाव चुनौतियां यानी समावेशी AI नवाचारों को प्रोत्साहन। तीसरा, अन्य सत्र जैसे वैज्ञानिक शोध में AI (डॉ. अर्चना शर्मा जैसे विशेषज्ञ), उद्योग नेताओं के साथ नीति चर्चा, और टेक दिग्गजों की भागीदारी।

जहां तक इसके अपेक्षित परिणाम की बात है तो ये सत्र 100+ देशों के नेताओं, वैज्ञानिकों और उद्योगपतियों को जोड़कर वैश्विक AI शासन के मानक स्थापित करेंगे। यह समिट 16-20 फरवरी को नई दिल्ली में चल रहा है, जो ग्लोबल साउथ की प्राथमिकताओं को मजबूत करेगा।

दरअसल एआई इम्पैक्ट समिट 2026 से अपेक्षित प्रमुख परिणाम जिम्मेदार AI के वैश्विक मानकों को मजबूत करना और ग्लोबल साउथ के लिए समावेशी विकास को बढ़ावा देना हैं। यह समिट मापने योग्य प्रभावों पर केंद्रित है, जैसे AI संसाधनों का लोकतंत्रीकरण और नीतिगत सहमति। इस दौरान नीतिगत समझौते भी होंगे।

इस समिट से AI शासन के लिए सात कार्य समूहों (चक्रों) के माध्यम से ठोस प्रतिबद्धताएं अपेक्षित हैं, जिनमें डेमोक्रेटाइजिंग AI रिसोर्सेज और सुरक्षित AI पर फोकस शामिल है। वास्तव में ये समझौते स्वास्थ्य, कृषि, शिक्षा जैसे क्षेत्रों में AI अनुप्रयोगों का विस्तार सुनिश्चित करेंगे। जहां तक इसके आर्थिक-सामाजिक प्रभाव की बात है तो वैश्विक दक्षिण में कौशल विकास, सतत AI समाधान और समावेशी नवाचारों को प्रोत्साहन मिलेगा, जो असमानताओं को कम करेगा। भारत के नेतृत्व में 100+ देशों की भागीदारी से आर्थिक कूटनीति मजबूत होगी। इसके दीर्घकालिक परिणाम भी सकारात्मक मिलेंगे।

वास्तव में यह समिट AI एक्शन प्लान और अगले वैश्विक शिखरों की नींव रखेगा, जो पर्यावरण संरक्षण (Planet) और प्रगति (Progress) को जोड़ेगा। कुल मिलाकर, यह AI को व्यापक लाभ पहुंचाने वाली तकनीक के रूप में स्थापित करेगा।

वरिष्ठ पत्रकार व राजनीतिक विश्लेषक

'वंदे मातरम्' : सांस्कृतिक राष्ट्रवाद की संजीवनी, देशप्रेम का जयघोष

प्रदीप कुमार वर्मा

'वंदे मातरम्' जैसा कालजयी गीत कभी भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के दौरान देशभक्ति और बलिदान की भावना जगाने का यह सबसे बड़ा माध्यम था। भारत माता को अंग्रेजी सरकार की गुलामी की बेड़ियों से मुक्त कराने के लिए आजादी के मतवालों द्वारा इस गीत के जरिये भारत माता की वंदना की जाती थी लेकिन स्वाधीनता सेनानियों द्वारा गाया जाने वाला गीत 'वंदे मातरम्' आज एक बार फिर से चर्चा में है। केंद्र सरकार द्वारा 'वंदे मातरम्' के गायन को अनिवार्य किए जाने के बाद देश में आज इसके अनिवार्य गायन औचित्य एवं उपयोगिता को लेकर एक और फिर से नई बहस छिड़ गई है। एक तरह से यह भारत देश का दुर्भाग्य ही माना जाएगा कि वर्ष 2047 तक विकसित भारत की संकल्प की ओर बढ़ते भारत में आज भी "राष्ट्र गीत" के गायन को लेकर चर्चा चरम पर है। देश की संसद से लेकर सड़क तथा सरकार से लेकर सामाजिक मंचों पर यही विमर्श चल रहा है।

देश में एक पक्ष का कहना है कि 'वंदे मातरम्' केवल एक गीत नहीं, बल्कि भारत की आत्मा है। यह राष्ट्रभक्ति और एकता की भावना को जगाने वाला गीत है, जिसे हर नागरिक को सम्मानपूर्वक गाना चाहिए। 'वंदे मातरम्' सांस्कृतिक राष्ट्रवाद की संजीवनी और देशप्रेम का जय घोष भी है जो नई पीढ़ी को देश की प्राचीन संस्कृति से आत्मसात कराएगा। वहीं, दूसरे पक्ष में शामिल कांग्रेस समेत देश विपक्षी दलों और मुस्लिम पर्सनल लॉ बोर्ड जैसे संगठनों का कहना है कि यह संवैधानिक रूप से दी गई धार्मिक स्वतंत्रता के अनुच्छेद 25 के खिलाफ है। इसलिए वंदे मातरम्' गायन की अनिवार्यता और इसे जबरन थोपना लोकतांत्रिक मूल्यों पर हमला है। मुस्लिम संगठनों का मुख्य विरोध 'वंदे मातरम्' के गायन में भारत को देवी के रूप में प्रस्तुत करने में कथित तौर पर मूर्ती पूजा और आनंदमठ उपन्यास के अन्य संदर्भों से है, जिसे वे अपनी आस्था के खिलाफ मानते हैं।

मुस्लिम पक्ष का कहना है कि वंदे मातरम में भारत भूमि की पूजा का भाव है जबकि इस्लाम में अल्लाह के सिवाय किसी अन्य की इबादत की अनुमति नहीं है। यही वजह है कि आज यह मुद्दा देशभक्ति और धार्मिक स्वतंत्रता के बीच एक संवेदनशील बहस बना हुआ है। 'वंदे मातरम्' के गायन एवं उपयोग के इतिहास पर गौर करें तो पता चलता है कि पुराने जमाने में भी वंदे मातरम के कुछ छंदों को लेकर विवाद होता रहा है। यही वजह रही कि स्वाधीनता संग्राम में इस गीत की निर्णायक भागीदारी के बावजूद जब आज़ाद भारत मे राष्ट्रगान के चयन की बात आई, तो वन्दे मातरम के स्थान पर रवीन्द्रनाथ ठाकुर द्वारा लिखे व गाये गये गीत "जन गण मन" को ही वरीयता दी गयी। तब भी इस चयन की वजह यही थी कि कुछ मुसलमानों को "वन्दे मातरम" गाने पर आपत्ति थी क्योंकि इस गीत में देवी दुर्गा को राष्ट्र के रूप में देखा गया है।

इसके अलावा उनका यह भी मानना था कि यह गीत जिस आनन्दमठ उपन्यास से लिया गया है, वह मुसलमानों के खिलाफ लिखा गया है। इन आपत्तियों के मद्देनजर सन 1937 में कांग्रेस ने इस विवाद पर गहरा चिन्तन किया। जवाहरलाल नेहरू की अध्यक्षता तथा मौलाना अबुल कलाम आज़ाद की मौजूदगी में गठित समिति ने पाया कि इस गीत के शुरुआती दो पद तो मातृभूमि की प्रशंसा में कहे गये हैं लेकिन बाद के पदों में हिन्दू देवी-देवताओं का जिक्र होने लगता है; इसलिये समिति ने यह निर्णय लिया गया कि इस गीत के शुरुआती दो पदों को ही राष्ट्र-गीत के रूप में प्रयुक्त किया जाएगा। और इस तरह गुरुदेव रवीन्द्र नाथ ठाकुर के जन-गण-मन अधिनायक जय हे, को यथावत राष्ट्रगान ही रहने दिया गया और बंकिमचन्द्र चटर्जी द्वारा रचित प्रारम्भिक दो पदों का गीत वन्दे मातरम् राष्ट्रगीत के रूप में स्वीकृत हुआ।

स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद भी डा. राजेन्द्र प्रसाद ने संविधान सभा में 24 जनवरी 1950 में 'वन्दे मातरम' को राष्ट्रगीत के रूप में अपनाने संबंधी वक्तव्य पढ़ा जिसे स्वीकार कर लिया गया। करीब डेढ़ सौ साल पहले गाए जाने वाले बंकिम दा के गीत 'वंदे मातरम' की आज के दौर में प्रासंगिकता पर गौर करें तो इस गीत के डेढ़ सौ साल पूरे होने पर केंद्र सरकार इसकी विशेष वर्षगांठ मना रही है। ऐसे में बीते साल 26 अक्टूबर को 'मन की बात' कार्यक्रम में भारत के प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने 'वंदे मातरम' गीत के इतिहास की देशवासियों को फिर से याद दिलाई। यही नहीं राष्ट्रीय गीत 'वंदे मातरम' के 150 वर्ष पूर्ण होने के उपलक्ष्य में 7 नवंबर से भारत सरकार की ओर से अगले एक वर्ष तक अलग-अलग कार्यक्रमों का आयोजन करने का निर्णय लिया। केंद्र सरकार ने अब 3 मिनट 10 सेकंड के पूर्ण संस्करण को अनिवार्य कर दिया है जिसे अब तक केवल पहले दो छंदों तक ही गाया जाता था। सरकार की मंशा के अनुसार ऐसे आयोजनों के माध्यम से देश भर में 'वंदे मातरम' का पूर्ण गान होगा जिससे देश की युवा पीढ़ी 'सांस्कृतिक राष्ट्रवाद' के विचार को आत्मसात कर पाएगी।

संत रामपाल जी महाराज के बोध दिवस को समर्पित खून दान कैंप में 60 यूनिट रक्त इकट्ठा हुआ

संगरूर, 16 फरवरी (जगसीर सिंह)-

संत रामपाल जी महाराज के बोध दिवस के पावन मौके पर, सतलोक आश्रम धुरी में मानवता की भलाई के लिए एक बड़ा खून दान कैंप लगाया गया। यह कैंप कॉर्पोरेट हॉस्पिटल ब्लड सेंटर अमृतसर के साथ मिलकर लगाया गया, जिसमें भक्तों और सेवादारों ने बड़े उत्साह से हिस्सा लिया। कैंप के दौरान कुल 60 यूनिट रक्त इकट्ठा हुआ, जो जरूरतमंद मरीजों की जान बचाने में मददगार साबित होगा।

ब्लड डोनेशन कैंप की शुरुआत संत रामपाल जी महाराज की शिक्षाओं के अनुसार समानवता की सेवा ही सच्ची सेवा है के संदेश के साथ की गई। आश्रम के प्रबंधकों ने कहा कि संत जी ने हमेशा अध्यात्म के साथ-साथ समाज सेवा पर भी जोर दिया है और ब्लड डोनेशन जैसे काम उनकी इसी सोच की निशानी हैं। कॉर्पोरेट हॉस्पिटल ब्लड सेंटर अमृतसर की मेडिकल टीम ने ब्लड डोनर्स की पूरी स्क्रीनिंग के बाद सेफ्टी स्टैंडर्ड्स के हिसाब से ब्लड इकट्ठा किया। डॉक्टरों और पैरामेडिकल स्टाफ ने आश्रम मैनेजमेंट के सहयोग की तारीफ़ की और कहा कि ऐसे कैंप अस्पतालों में खून की कमी को पूरा करने में अहम भूमिका निभाते हैं। खून देने आए युवाओं, महिलाओं और बुजुर्ग भक्तों ने कहा कि वे संत रामपाल जी महाराज की प्रेरणा से समाज सेवा के लिए आगे आए हैं। उनका मानना है कि एक यूनिट खून किसी की जान बचा सकता है और यह सेवा इंसानियत के प्रति सबसे बड़ा फ़र्ज़ है। इस मौके पर आश्रम के कर्मचारियों ने बताया कि बुद्ध दिवस के मौके पर ब्लड डोनेशन कैंप के अलावा दहेज़-मुक्त शादी, नशा मुक्ति जागरूकता और गरीबों की मदद जैसे कई सामाजिक काम भी लगातार किए जा रहे हैं। उन्होंने कहा कि संत रामपाल जी महाराज की शिक्षाएं समाज को अंधविश्वास दूर करके सेवा, सद्भाव और इंसानियत के रास्ते पर आगे बढ़ने की प्रेरणा देती हैं। भक्तों और सेवादारों ने ब्लड डोनेशन कैंप की सफलता पर खुशी जताई और भविष्य में भी ऐसे मानवता भलाई के काम जारी रखने का अपना संकल्प दोहराया।

फाल्गुनी बहार है

प्रकृति ने किया श्रृंगार आई फाल्गुनी बहार है,
जीवन में खिले फिर इंद्रधनुषी रंग बेशुमार है ।

मुस्कुराने लगी है कलियाँ भवरें डोल रहे,
कानों में प्रीत के गीत धीरे से जो बोल रहे,
स्वच्छंद हुआ आकाश पक्षियों ने उड़ान भरी,
सूरज की रश्मि रथियों ने स्वर्णिम आभा करी,
तेज चली मदमस्त पवन ₹आनंद₹ पारावार है।

तन्हाई का मौसम बीता प्रीत ऋतु मन भाएं,
आहट कर चुपके से दिलों में प्यार को जगाएं,
आए दिन सुहाने धरती ने ओढ़ ली चूनर धानी,
सजने लगे नयनों में फिर से सपने आसमानी,
बूझते जीवन में चैतन्य हुआ प्रीत का निखार है ।

पुरवाई बह रही आम मंजरी सुगंध बिखराएं,
तन-मन को पुलकित कर गीत गाएं दिशाएं,
पलाश ने छिटक लालिमा छटा अद्भुत बिखेरी,
लद्द गई बौरों से नीम आमों की लताएं घनेरी,
आस करें जीवन में सदा प्राणों का संचार है ।

प्रकृति ने किया श्रृंगार आई फाल्गुनी बहार है,
जीवन में खिले फिर इंद्रधनुषी रंग बेशुमार है ।

- मोनिका डागा "आनंद"

भारत का टी 20 मुकाबले में जीत का जोश व महाशिवरात्रि पर्व का उत्साह दोगुना हो गया

इन्दौर में महाशिवरात्रि पर्व और टी 20 मुकाबले में भारतीय व पाकिस्तान का मुकाबला के मैच में भारत की जीत के बाद शहर के हृदय स्थल राजबाड़ा में लोगों के उत्सव का मजा दोगुना हो गया। हाथ में तिरंगा लेकर भारत माता की जय-जयकार के साथ जय श्री महाकाल व हर हर महादेव के जयघोष से पूरा क्षेत्र गुंजायमान हो उठा था। बम-भोले के जय से भारत की इतनी बड़ी व निर्णायक जीत हासिल करने वाले खिलाड़ीयों के भी नारे लगे । इस जीत के बाद भारत आगे बढ़ गया। त्योहार व क्रिकेट की जीत का अलग रंग राजबाड़ा पर देखने को मिला।

रिपोर्टिंग - स्वतंत्र पत्रकार व लेखक हरिहर सिंह चौहान इन्दौर

मुख्यमंत्री हेमंत पहुंचे पैतृक गांव नेमरा, बनाये गये मांझी बाबा

अपने संथली समाज को किया संबोधित

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड, झारखंड

रांची, मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन सोमवार को रामगढ़ जिले के गोला प्रखंड अंतर्गत अपने पैतृक गांव नेमरा पहुंचे. उनके आगमन पर बिनोद किस्कू, रितलाल टुडू सहित संथाली समाज के लोगों ने परंपरागत रीति-रिवाज के साथ स्वागत किया. सीएम नेमरा गांव के सामुदायिक भवन में आयोजित ग्राम प्रधान कमिटी चयन सभा में भी भाग लिया. बैठक के दौरान मांझी हड़ाम कमेटी का गठन किया गया, जिसमें समाज के विभिन्न लोगों को दायित्व सौंपे गये.

मांझी बाबा (ग्राम प्रधान) का दायित्व मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन को सौंपा गया. वहीं, प्राणिक बाबा (उप ग्राम प्रधान) के रूप में बिरजू सोरेन, भोगदो प्रजा (कानूनी सलाहकार) के रूप में सुखदेव किस्कू, नायके बाबा (ग्राम प्रमुख पुजारी) के रूप में चैतन्य टुडू, कुडाम नायके बाबा (नायके सहायक) के रूप में काशीनाथ बेसरा और जोगा मांझी बाबा (संदेश वाहक) के रूप में विश्वनाथ बेसरा को जिम्मेदारी दी गयी. मांझी बाबा का दायित्व निभाते हुए मुख्यमंत्री ने नये नायके बाबा यानि कि गांव के मुख्य पुजारी को पारंपरिक तरीके से सम्मानित किया. स्वास्थ्य संबंधी कारणों से इस पद छोड़ने वाले पूर्व नायके बाबा सोहन सोरेन को भी सम्मानपूर्वक विदाई दी गयी.

कमेटी गठन के बाद संथाली समाज को संबोधित करते हुए मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन ने कहा कि संथाली समाज के सभी लोग एकजुट होकर रहें. समाज के संगठित होने से ही वह मजबूत बनता है. उन्होंने शिक्षा पर जोर देते हुए कहा कि नशा-पान से दूर रहना जरूरी है. मुख्यमंत्री ने कहा कि संथाली गांवों में आपसी भाईचारा, रीति-रिवाज, संस्कृति और पर्व-त्योहार मिल जुलकर मनाने की परंपरा को आगे बढ़ाना चाहिए. समाज ने जो अगुवाई का दायित्व उन्हें सौंपा है, उसे वे पूरी निष्ठा से निभायेंगे. उन्होंने कहा कि वे इसी समाज में जन्मे हैं और इसी संस्कृति में पले-बढ़े हैं. सीएम ने संथाली समाज की सरल और परंपरागत जीवनशैली की सराहना करते हुए लोगों से बाजार की चालाकियों से सतर्क रहने की अपील की और हर समय समाज के साथ खड़े रहने का भरोसा दिला

ई-मुलाकात सुविधा का शुभारंभ, अमृतसर कोर्ट परिसर में लिफ्ट स्थापना का शिलान्यास

अमृतसर, 16 फरवरी (साहिल बेरी)

न्याय तक पहुंच को तकनीक के माध्यम से सुदृढ़ करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम उठाते हुए सेशंस डिवीजन, अमृतसर में ई-मुलाकात (वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग) सुविधा का ई-उद्घाटन किया गया। इस सुविधा के माध्यम से जेल में बंद बंदी अपने अधिवक्ताओं से वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग द्वारा संवाद कर सकेंगे।

यह पहल माननीय श्री न्यायमूर्ति Ashwini Kumar Mishra तथा माननीय श्री न्यायमूर्ति Rohit Kapoor, प्रशासनिक न्यायाधीश, सेशंस डिवीजन, अमृतसर के मार्गदर्शन में की गई है। इस सुविधा से बंदियों को समय पर विधिक सहायता उपलब्ध होगी तथा उन्हें जेल से अदालत लाने-ले जाने में आने वाली व्यवस्थागत कठिनाइयों में कमी आएगी।

समारोह को संबोधित करते हुए माननीय श्री न्यायमूर्ति रोहित कपूर ने कहा कि ई-मुलाकात सुविधा का शुभारंभ न्याय वितरण प्रणाली में तकनीक के समावेश की दिशा में एक प्रगतिशील कदम है। उन्होंने कहा कि इससे बंदियों को जेल से अदालत तक लाने-ले जाने में होने वाले खर्च तथा सुरक्षा संबंधी जोखिमों में उल्लेखनीय कमी आएगी। साथ ही पुलिस एवं जेल प्रशासन पर पड़ने वाला प्रशासनिक बोझ भी कम होगा। उन्होंने दोहराया कि ऐसे सुधारों का उद्देश्य न्याय तक प्रभावी, समयबद्ध और निर्बाध पहुंच सुनिश्चित करना है।

इस अवसर पर सुश्री जतिंदर कौर, माननीय जिला एवं सत्र न्यायाधीश-सह-अध्यक्ष, जिला विधिक सेवा प्राधिकरण (डीएलएसए), अमृतसर ने कहा कि यह सुविधा न्यायपालिका की उस प्रतिबद्धता को दर्शाती है जिसके अंतर्गत दक्षता बढ़ाने और प्रभावी कानूनी प्रतिनिधित्व सुनिश्चित करने के लिए तकनीक का उपयोग किया जा रहा है।

श्री अमरदीप सिंह बैंस, सचिव, डीएलएसए, अमृतसर सहित सेशंस डिवीजन के सभी न्यायिक अधिकारी भी इस अवसर पर उपस्थित रहे।

श्री अमरदीप सिंह बैंस ने कहा कि ई-मुलाकात सुविधा से बंदियों को अदालतों में भौतिक रूप से लाने-ले जाने में होने वाले खर्च और सुरक्षा जोखिमों में कमी आएगी। इससे जेल एवं पुलिस प्रशासन की जिम्मेदारियां भी कम होंगी। यह पहल मामलों की शीघ्र सुनवाई और त्वरित न्याय सुनिश्चित करने में सहायक सिद्ध होगी।

इसी दिन न्यायालय परिसर में अधिवक्ताओं एवं आमजन की सुविधा के लिए लिफ्ट स्थापना का शिलान्यास भी किया गया। इस पहल का उद्देश्य न्यायालय परिसर में आधारभूत सुविधाओं को सुदृढ़ करना तथा सभी हितधारकों के लिए सुगम पहुंच सुनिश्चित करना है।

सेशंस डिवीजन, अमृतसर न्यायिक अधोसंरचना के आधुनिकीकरण और न्याय वितरण प्रणाली को सशक्त बनाने हेतु निरंतर प्रगतिशील कदम उठा रहा है।

रांची पुलिस को बड़ी सफलता तीन हथियार, कारतुस के साथ

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड -झारखंड

राची, झारखंड की राजधानी रांची के मेसरा ओपी इलाके में व्यवसायियों को टारगेट कर फायरिंग और रंगदारी मांगने वाले राहुल सिंह गिरोह के तीन मुख्य सदस्यों को पुलिस ने गिरफ्तार किया है. अश्विनी कुमार परवता उर्फ कटप्पा, रियांश सिंह उर्फ स्वतंत्र उर्फ आरडीएक्स और पंकज कुमार उर्फ सोनू शर्मा को हथियार और 15 जिंदा कारतूस के साथ पकड़ा गया. पुलिस के अनुसार कटप्पा पहले अमन साहू गिरोह से जुड़ा था और बाद में राहुल सिंह गिरोह के लिए काम करने लगा. वह रेकी से लेकर हथियार सप्लाई तक की कड़ी संभालता था. आरडीएक्स शूटर उपलब्ध कराता था, जबकि पंकज हवाला के जरिए रंगदारी की रकम ट्रांसफर करता था.

नेशनल अकाली दल का बड़ा फैसला: पूरी कार्यकारिणी और सभी विंग भंग

परिवहन विशेष न्यूज

नई दिल्ली। नेशनल अकाली दल के राष्ट्रीय अध्यक्ष परमजीत सिंह पम्मा ने संगठनात्मक ढांचे में बड़े बदलाव की घोषणा करते हुए पार्टी की वर्तमान कार्यकारिणी एवं सभी विंग को तत्काल प्रभाव से भंग कर दिया है।

इस संबंध में जारी बयान में परमजीत सिंह पम्मा ने कहा कि पार्टी को और अधिक मजबूत, सक्रिय एवं जनहितैषी बनाने के उद्देश्य से यह निर्णय लिया गया है। उन्होंने बताया कि जल्द ही नई कार्यकारिणी का गठन किया जाएगा, जिसमें युवाओं, महिलाओं तथा जमीनी स्तर पर सक्रिय कार्यकर्ताओं को उचित प्रतिनिधित्व दिया जाएगा।

उन्होंने कहा कि नेशनल अकाली दल समय-समय पर विभिन्न जनहित मुद्दों पर अपनी आवाज बुलंद करता रहा है। सामाजिक, धार्मिक और राजनीतिक विषयों पर पार्टी ने सक्रिय भूमिका निभाई है तथा धरना-प्रदर्शन और ज्ञापन के माध्यम से आम जनता की समस्याओं को प्रशासन तक पहुंचाया है। पम्मा ने आगे कहा कि संगठन को नई ऊर्जा और नई दिशा देने के लिए यह कदम आवश्यक था। नई कार्यकारिणी के गठन के बाद पार्टी और अधिक मजबूती के साथ जनता के मुद्दों को उठाएगी तथा जमीनी स्तर पर अपनी पकड़ को मजबूत करेगी।

सूत्रों के अनुसार, नई कार्यकारिणी की घोषणा आगामी दिनों में एक विशेष बैठक के बाद की जाएगी। पार्टी नेतृत्व का मानना है कि इस पुनर्गठन से संगठन को आगामी गतिविधियों में नई गति और मजबूती मिलेगी।

पार्टी कार्यकर्ताओं में इस निर्णय को लेकर उत्साह देखा जा रहा है और सभी को नई टीम की घोषणा का बेसब्री से इंतजार है।

झारखंड के चर्चित डीएमएफटी फंड अनियमिता पर मुख्यमंत्री हेमंत ने दिए जांच के आदेश

कोरोना काल में जनहित की बड़ी धनराशि लुट पर हर जिले के उपायुक्त देंगे जवाब

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड – झारखंड

रांची, झारखंड के जिला खनिज फाउंडेशन ट्रस्ट फंड के उपयोग में हो रही कथित अनियमितताओं को लेकर झारखंड सरकार अब सक्रिय हुई है. मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन ने इससे संबंधित आदेश जारी किया है. सीएम के आदेश के बाद वित्त विभाग ने खान एवं भूतत्व विभाग को कड़ा निर्देश दिया है. सरकार अब इस बात की तहकीकात कराएगी कि खनन प्रभावित क्षेत्रों के विकास के लिए सुरक्षित रखे गए करोड़ों रुपये का इस्तेमाल कहां-कहां हुआ है? कहीं पैसों का इस्तेमाल फिजूलखर्ची में तो नहीं हो रहा है? डीएमएफटी के तय मापदंडों के अनुसार राशि खर्च की गई या नहीं

डीएमएफटी फंड के खर्च में राज्य के कई जिलों ने नियम-कानून को ताख पर रख दिया. खनन प्रभावित क्षेत्रों में विस्थापित और प्रभावित लोगों के विकास व बुनियादी सुविधाओं के लिए पैसे खर्च किए जाने थे. मामला प्रकाश में आने के बाद वित्त विभाग ने इस पर तत्काल संज्ञान लेते हुए जांच के आदेश दिये थे. मुख्य सचिव के माध्यम से यह फाइल मुख्यमंत्री तक पहुंची, जिसके बाद अब व्यापक समीक्षा और ऑडिट का रास्ता साफ हो गया है.

वित्त सचिव ने साफ कर दिया है कि जिलास्तर पर उपायुक्तों को डीएमएफटी की बैठकों, योजनाओं की वर्तमान स्थिति और खर्च का पूरा तथ्यात्मक विवरण सदस्यों के सामने रखना होगा. इन रिपोर्टों की समीक्षा निदेशक (खान) के स्तर पर की जायेगी. यदि जांच के दौरान किसी भी प्रकार की गड़बड़ी की पुष्टि होती है, तो वित्त विभाग संबंधित जिलों में विशेष ऑडिट कराने का निर्णय लेगा.

विभागीय वित्त मंत्री राधाकृष्ण किशोर ने पीत पत्र के माध्यम से डीएमएफटी मद की राशि के अपव्यय पर कड़ी आपत्ति जताई थी. सरकार का मानना है कि यह पैसा खनन प्रभावित क्षेत्रों के गरीब लोगों के कल्याण, शिक्षा और स्वास्थ्य के लिए है. इसे प्रशासनिक सुख-सुविधाओं या नियमविरुद्ध कार्यों में खर्च करना गंभीर वित्तीय अपराध की श्रेणी में आता है. प्रशासी विभाग यानी खान एवं भूतत्व विभाग को निर्देश दिया गया है कि वह जल्द से जल्द राज्य में डीएमएफटी योजनाओं के क्रियान्वयन की वस्तुस्थिति सरकार के सामने पेश करे. खासकर, उन जिलों में जहां डीएमएफटी फंड के बेजा इस्तेमाल की शिकायतें लंबे समय से मिल रही थीं

महादेव के नाम विशाल जागरण सम्पन्न

हैदराबाद गोशामहल स्थिति मालाणी जाट समाज हैदराबाद में एक शाम महादेवजी के नाम विशाल जागरण सम्पन्न राजस्थान से पधारे भजन गायक दलपतजी जाट व महेश पंवार सादड़ी एण्ड पार्टी द्वारा सर्वप्रथम गणेश वंदना प्रस्तुत किया ।राजस्थानी भजन आनंद में प्रस्तुत किये। इस अवसर पर मालाणी जाट समाज अध्यक्ष भंवरलाल गोदारा, उपाध्यक्ष बाबूलाल भादु, सचिव मुलाराम कड़वासरा ,सह सचिव रुपाराम साई, कोषाध्यक्ष हरीश रोपड़िया,व समस्त कार्यकारणी सदस्यगण व समाज बंधुओं उपस्थित रहे।

पुरी जगन्नाथ श्रीमंदिर की रत्नभंडार में गणना के लिए कानून मंत्री के घर पर बैठक खत्म हुई

मनोरंजन शासमल, स्टेट हेड ओड़िशा

भूबनेश्वर : मुख्यमंत्री मोहन चरण माझी रत्नभंडार आभूषणों की इन्वेंट्री का रिव्यू करेंगे। कानून मंत्री पृथ्वीराज हरिचंदन के घर पर एक ज़रूरी मीटिंग हुई। मीटिंग के बाद कानून मंत्री ने कहा कि नए SOP को मैनेजिंग कमेटी ने मंज़ूरी देकर सरकार को भेज दिया है ।अब इस बारे में खास डिटेल में बात होगी। इसके बाद मुख्यमंत्री की रिव्यू मीटिंग होगी। कानून मंत्री ने कहा कि रिव्यू मीटिंग के बाद तारीख के बारे में क्लैरिटी आएगी। मंदिर के रत्न भंडार के रेनोवेशन के बाद सारे रत्न और जवाहरात ट्रांसफर कर दिए गए हैं। लेकिन रत्न और जवाहरात की गिनती नहीं हो रही है। मंदिर का एडमिनिस्ट्रेशन दिन-ब-दिन चल रहा है। इस बीच, रत्न भंडार की चाबी खोने के मामले में हाई कोर्ट ने अगले विधानसभा सेशन में जांच रिपोर्ट पेश करने का आदेश दिया है।

बजट सत्र कल से शुरू होगा: 20 तारीख को बजट पेश किया जाएगा

मनोरंजन शासमल, स्टेट हेड ओड़िशा

भूबनेश्वर : धान की खरीद में बड़े पैमाने पर गड़बड़ियां हुई हैं। राज्य के अलग-अलग हिस्सों से गड़बड़ियों की शिकायतें आ रही हैं। कई जगहों पर किसानों का विरोध प्रदर्शन चल रहा है। BJD और कांग्रेस इस मुद्दे पर सड़कों पर उतरकर हल्ला बोल रही हैं। पश्चिमी ओडिशा के MLA इस बात से नाराज़ हैं कि सरकार ने एक किसान से 150 क्विंटल से ज़्यादा धान न खरीदने का नियम भी बना दिया है ।विधानसभा इस मुद्दे पर दुविधा में पड़ सकती है। महानदी जल विवाद मामले में ओडिशा को लगातार नुकसान हो रहा है। दोनों राज्यों के बीच विवाद सुलझाने की प्रक्रिया आगे नहीं बढ़ रही है। मंत्रियों की कमेटी छत्तीसगढ़ नहीं आ पा रही है।

छत्तीसगढ़ सरकार को सहयोग न करने के लिए जाना जाता है। ओडिशा सरकार ने अब केंद्र सरकार से सीधे दखल की मांग की है, लेकिन उसकी तरफ से कोई अच्छा जवाब नहीं मिला है। महानदी मुद्दे पर BJD और BJP के बीच बयानबाजी चरम पर पहुंच गई है। विधानसभा में इस मुद्दे पर दोनों पार्टियों का आमना-सामना होना था। कांग्रेस दोनों पर आरोप लगाकर हमला करेगी। हाई कोर्ट ने आदेश दिया है कि रत्न भंडार की चाबी खोने की जांच रिपोर्ट विधानसभा के अगले सेशन में पेश की जाए। सरकार रिपोर्ट पेश करेगी या

फिर से देरी करने का दिखावा करेगी, यह बहस का विषय है। नई सरकार के सत्ता में आने के बाद से पांच सेशन पूरे हो चुके हैं, लेकिन सरकार ने रिपोर्ट क्यों नहीं पेश की है, यह एक रहस्य है। राज्य में ऐसे मुद्दों की लिस्ट लंबी है। विपक्ष मीडिया और सड़कों पर अलग-अलग मुद्दों पर सरकार को घेर रहा है।

ऐसे ही मुद्दों के बीच 17 तारीख से विधानसभा का बजट सेशन शुरू होने जा रहा है। यह दो फेज में 28 दिनों तक चलेगा। सेशन को ठीक से चलाने के लिए स्पीकर ने सोमवार को ऑल पार्टी मीटिंग बुलाई है। इसके बाद BJP, BJD और कांग्रेस के लेजिस्लेटिव पार्टी की मीटिंग होगी। विपक्षी BJD और कांग्रेस इस बात की स्ट्रैटेजी बना रहे हैं कि सरकार को किन मुद्दों पर और कैसे घेरना है।

जल सप्लाई एवं सैनिटेशन इम्प्लाइज यूनियन द्वारा महाशिवरात्रि का पर्व धूमधाम से मनाया गया

अमृतसर, 16 फरवरी (साहिल बेरी)

जल सप्लाई एवं सैनिटेशन (एम) इम्प्लाइज यूनियन, पंजाब द्वारा हर वर्ष की तरह इस वर्ष भी महा शिवरात्रि का पावन पर्व राज्य मुख्य कार्यालय राम बाग फाटक में बड़ी श्रद्धा और उत्साह के साथ मनाया गया। कार्यक्रम की अगुवाई राज्य प्रधान सुखनंदन सिंह मैहनिया एवं कैशियर शिवइंदर सिंह मन्नन ने की। इस अवसर पर श्रद्धालुओं द्वारा भगवान शिव महाराज के विवाह पर्व के गुणगान किए गए तथा विधिवत आरती उतारी गई। कार्यक्रम को संबोधित करते हुए राज्य प्रधान सुखनंदन सिंह मैहनिया ने कहा कि उनकी संगठन प्रत्येक वर्ष महाशिवरात्रि का पर्व मनाती आ रही है। समय-समय पर आयोजित धार्मिक कार्यक्रमों के माध्यम से मानवता को परमपिता परमेश्वर के नाम से जोड़ने तथा समस्त मानव जाति की भलाई के लिए प्रार्थनाएं की जाती हैं। इस मौके पर ट्रांसपोर्ट यूनियन से दिलबाग सिंह, तेजिंदर सिंह नाग, जिला प्रधान अश्वनी कुमार, विजय पाल सिंह, गुरदेव सिंह झलक, सरबजीत चावला, सुखबीर सिंह, गुरदेव सिंह, गुरविंदर सिंह अजनाला, जतिंदर सिंह आजाद, कैशियर अश्वनी कुमार, दविंदर सिंह वेरका सहित अन्य सदस्य उपस्थित रहे। कार्यक्रम के उपरांत भगवान भोले शंकर के नाम पर श्रद्धालुओं के लिए लंगर का भी आयोजन किया गया।

यह चेहरे....।

रिश्तों के रंग 'बदलते' यह चेहरे,
ज़दिगी में क्यों साथ छोड़ देते हैं ?
उम्मीदों का यह दामन ना जाने क्यों खत्म हो रहा,
लगता है उनके चेहरे पर नकाब लगा है।

क्यों डुबा हुआ हूँ मैं तेरे प्यार में!
हर वक्त तुझे ही तलाशता रहता हूँ
पर तूने साथ छोड़ दिया है मझधार में
रिश्तों के रंग 'बदलते' यह चेहरे।

उम्मीद अब भी है, फिर आएगी बहार,
वसंत का वह दौर, फागुन की बेला में आम
के 'बौर' या सावन की मस्त फुहार,
तेरे आने का संदेशा जरूर लाएगी, बदलते
वक्त में, रिश्तों के रंग बदलते यह चेहरे।

तू पतंग बन दूर गगन में उड़ रही है अभी,
पर डोर तो मेरे हाथों में है प्यार की।
तूने नहीं निभाया साथी मेरा साथ, तभी तो
सामने है, रिश्तों के रंग बदलते यह
चेहरे ॥

स्वरचित व मोलिख अप्रकाशित रचना
रचनाकार हरिहर सिंह चौहान जबरी बाग नसिया इन्दौर मध्य-प्रदेश

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक संजय कुमार बाटला द्वारा इम्प्रेशंस प्रिंटिंग एंड पैकेजिंग लिमिटेड, सी-18,19,20 सेक्टर 59, नोएडा (उत्तर प्रदेश) से मुद्रित एवं 3, प्रियदर्शनी अपार्टमेंट ए-4, पश्चिमी विहार, नई दिल्ली- 110063 से प्रकाशित। सम्पर्क : 9212122095, 9811902095. newstransportvishesh@gmail.com
(इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन पी.आर.बी. एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी) किसी भी कानूनी विवाद की स्थिति में निपटारा दिल्ली के न्यायालय के अधीन होंगे। RNI No :- DELHIN/2023/86499. DCP Licensing Number F.2 (P-2) Press/2023